Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

परिभाषा-प्रबोध

जगन्नाथप्रसाद शुक्ल

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रकाश-आयुर्वेदीय-ग्रन्थमाला

परिभाषा-प्रबोध

लेखक

[illegible] पं० जगन्नाथप्रसाद [illegible]
भिषङ्मणि

भूतपूर्व सभापति अखिलभारतीय आयुर्वेद महामंडल और विद्यापीठ।

प्रकाशक

वैद्य शिवनारायण मिश्र भिषग्रत्न
प्रकाश पुस्तकालय
तथा
प्रकाश आयुर्वेदीय औषधालय
कानपुर

TRADE प्रकाश MARK

प्रथम संस्करण] [मूल्य सवा रुपया

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

वैद्य शिवनारायण मिश्र भिषग्रत्न द्वारा
प्रकाश आयुर्वेदीय प्रिंटिंग प्रेस,
कानपुर में
मुद्रित
८—१९३३—१,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

श्रीधन्वन्तरयेनमः

लेखक का कथन

आयुर्वैदिक परिभाषाओं के लिये हिन्दी में कोई उपयुक्त पुस्तक न होने के कारण विद्यार्थियों को बड़ी असुविधा हो रही थी। वैद्यलोग तो इसके लिये शार्ङ्गधर के कुछ अध्याय तथा चरक-सुश्रुत-वाग्भट और अन्य पुस्तकों को ढूँढ़-खोजकर अपना काम चला लिया करते थे, किन्तु इस ढूंढ़-खोज में बहुत समय लग जाया करता था। इसके सिवाय हर समय उपयुक्त पुस्तक का संग्रह पास रहना सम्भव न होने से और समय पर शब्द-परिभाषा खोजने में समय लग जाने के कारण उन्हें भी अधिक समय लग जाया करता था। जब से वैद्य-सम्मेलन ने भिषक् परीक्षा आरम्भ की और हिन्दी तथा प्रान्तिक भाषाओं में उसकी परीक्षाओं का आरम्भ हुआ एवं प्रयाग महिलाविद्यापीठ ने अपनी परीक्षाओं में वैद्यक को भी स्थान दिया, विशेषकर हिन्दी साहित्यसम्मेलन ने हिन्दी भाषा द्वारा उच्च वैद्यक परीक्षाओं का मार्ग प्रशस्त किया, तब से इस बात की आवश्यकता अधिक प्रतीत होने लगी कि वैद्यक शिक्षा के

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लिये आवश्यक पुस्तकें हिन्दी में मिलने लगें और प्रत्येक विषय के आवश्यक प्रकरण और प्रकीर्ण विषय एक ही जगह संगृहीत कर छपाये जावें। परिभाषा के विषय में यद्यपि एक पुस्तक संस्कृत में है और उसकी हिन्दी टीका भी छप गयी है; तथापि आजकल की आवश्यकता के अनुसार उसमें सभी विषयों का समावेश नहीं है।

जिस समय हिन्दी साहित्यसम्मेलन के 'वैद्यविशारद' का पाठ्यक्रम तैयार हो रहा था और निघण्टु विषय के अन्तर्गत "परिभाषा" के सम्बन्ध में एक पूर्ण तथा नवीन आवश्यकताओं से युक्त विषयों की शिक्षा की बात सोची जा रही थी, उसी समय यह विचार भी उठा कि इस विषय की पुस्तक कहां मिलेगी। राजवैद्य पण्डित किशोरीदत्त जी शास्त्री ने मुझे सम्मति दी कि "इस सम्बन्ध के विचार आप में अभी ताज़े हैं अतएव आप इस विषय की एक पुस्तक लिखडालें।" मुझे उनकी सलाह रुची और मैंने इसमें हाथ लगा दिया। अनवकाशवश पुस्तक कुछ विलम्ब से तैयार हुई; किन्तु तैयार होने पर उसके प्रकाशन की चिन्ता सामने आयी। पण्डित किशोरीदत्त जी शास्त्री ने इसे प्रकाशित करने के लिये अपने पास रख लिया। प्रकाश पुस्तकालय के अध्यक्ष मित्रवर पण्डित शिवनारायण जी मिश्र भिषग्रत्न ने उन से पुस्तक लेली और उसे प्रकाशित कर डाला। प्रसन्नता की बात यह है कि मिश्र जी ने ठीक उसी समय पुस्तक प्रकाशित कर सर्वसाधारण के सामने उपस्थित की जिस समय उसके लिये परीक्षार्थियों की मांग आरम्भ हुई। अतएव शास्त्री जी और मिश्र जी, दोनों ही, मेरी कृतज्ञता और धन्यवाद के पात्र हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पुस्तक न तो ऐसी है कि जिसके लिये यह कहा जाय कि एकदम नयी बात खोजी गयी है और न ऐसी ही है कि जिसके लिये नये सिरे से मस्तिष्क परिचालन करना पड़ा हो। परन्तु ऐसी अवश्य है जो अपने विषय में पूर्ण कही जा सकती है और जिसके संग्रह में काफी परिश्रम पड़ा है। संस्कृत के भावों को सरल हिन्दी में समझाने में और कुछ शब्दों की परिभाषा स्वयं रचने में मस्तिष्क को भी कुछ व्यायाम अवश्य हुआ है। प्राचीन परिभाषा की पुस्तक से इसकी कोई तुलना करने की आवश्यकता नहीं। एक प्रकार से अपने ढंग की यह एकदम नयी और आधुनिक समस्याओं से भी पूर्ण पुस्तक है। इसके अध्यायों की कल्पना उसमें कथित विषय के अनुसार विभक्त की गयी है और उस विषय में जिन जिन बातों के वर्णन की आवश्यकता स्मरण में आयी वह किसी ग्रन्थ में हो या नहीं इसमें सम्मिलित करदी गयी है। मान परिभाषा में मागध और कलिंग मान के साथ ही रसतन्त्रोक्त मान, इस समय को प्रचलित बाजारू तौलमाप तथा यूनानी और अंग्रेज़ी तौलमाप भी दे दी गयी है। इसी तरह अन्य अध्यायों में गुलकन्द, मुरब्बा, अर्क, शर्बत, क्षार, सत्व, साबूदाना, परवर, मुनक्के, रोटी, दाल, भात, पानी आदि पथ्यसम्बन्धी ऐसी वस्तुओं के निर्माण की भी विधि लिखी गयी है जो रोगी के अनुकूल हो सके। यही नहीं, प्रसिद्ध संहिताकथित तथा रसतन्त्रोक्त औषधियों के गण और कुछ ऐसे पारिभाषिक शब्दों का कोष भी सम्मिलित कर दिया गया है, जिनकी परिभाषा लिखने की आवश्यकता नहीं थी; किन्तु शब्दार्थ समझना आवश्यक था। अभी आवश्यक है कि रसतन्त्रोक्त परिभाषा, शारीरिक तथा निदानपरिभाषा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तथा चिकित्सापरिभाषा सम्बन्धी अर्थपूर्ण शब्दों पर भी प्रकाश डालने वाली पुस्तक तैयार की जाय। किन्तु यह तो भविष्य की बात है। आशा है, यह पुस्तक विशेषकर वैद्यक-विद्यार्थीवर्ग में और साधारणतः सम्पूर्ण वैद्यसमाज में उनकी सहायक समझी जायगी। यही नहीं, सर्वसाधारण के लिये भी यह पुस्तक उपयोगी होगी; क्योंकि पथ्यनिर्माण तथा औषधि के सम्बन्ध में साधारण जानकारी रखना सभी के लिये आवश्यक और उपयोगी होता है।

रथयात्रा, १९९० वि. जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय-सूची

विषय — पृष्ठ

पहला अध्याय ।

परिभाषा ... १
मानपरिभाषा ... २
प्रकार ... २
मागधमान ... ३
कलिंगमान ... ६
रसशास्त्रोक्त मानपरिभाषा ७
वर्तमान समय की तौलमाप ६
यूनानी तौलमाप ... १०
ओषधियों की अंगरेज़ी तौलमाप १२
तौलने की विधि ... १६
ओषध-द्रव्य-ग्रहण ... १८

दूसरा अध्याय ।

औषधि-संग्रह-सूत्र ... १६
नामकरण ... १६
अनुक्त अंगादि ... २०
पुनरुक्त ओषध ... २१
उक्तानुक्त ... २१
द्रव्याहरण ... २२
उक्तग्रहण ... २४
ओषध प्रतिनिधि ... २५

तीसरा अध्याय ।

औषधिनिर्माण-परिभाषा

कषाय ... ३१
स्वरस ... ३१
पुटपाक ... ३२
श्वेततण्डुलमण्डम् ... ३२
कल्क ... ३४
क्वाथ ... ३४
प्रमथ्या कषाय ... ३७
हिम ... ३८
चावल का धोवन ... ३८

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय	पृष्ठ
फाण्ट ...	३६
मन्थ ...	३६
चूर्ण ...	३६
अनुपान ...	४०
भावना ...	४१
वटिका ...	४१
अवलेह ...	४२
पाक ...	४४
मोदक ...	४६
मुरब्बा ...	४७
गुलकन्द ...	४८
शर्वत ...	४८
अर्क ...	४६
घृतसाधन ...	५०
घृतमूर्छा ...	५३
तैलसाधन ...	५४
तैलमूर्छन ...	५५
तैलपाक ...	५७
सत्वनिष्कासन ...	५६
क्षार निकालना ...	६०
आसव और अरिष्ट ...	६१

चौथा अध्याय ।

पथ्यनिर्माण-परिभाषा

विषय	पृष्ठ
पथ्य ...	६६
उष्णोदक ...	६६
क्षीरपाक ...	७१
यूष ...	७२
षडङ्गजल ...	७२
मुद्गयूष ...	७३
यवागू ...	७३
सप्तमुष्टिकयूष ...	७४
पानक ...	७४
अष्टगुणमण्ड ...	७५
प्रमथ्या ...	७५
अन्नस्वरूप यवागू ...	७६
विलेपी ...	७६
लप्सिका ...	७७
पेया ...	७७
साबूदाना ...	७७
भात ...	७८
दलिया ...	७८
शुद्धमंड ...	७६
अष्टगुणमण्ड ...	७९
वाष्पमण्ड ...	८०
लाजामंड ...	८०
परवर ...	८१
भुने मुनक्के ...	८२
रोटी ...	८२
दाल का पथ्य ...	८३

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय		पृष्ठ
मांसरस	...	८४
सहकाररस	...	८५
आम की चटनी	...	८५
आम्ररस	...	८५
आम्रलेह	...	८६
पञ्चसार पानक	...	८६
पञ्चसाराम्बु	...	८६
रागखाण्डव	...	८७
पानक	...	८७
औषधकाल	...	८८
कांजी	...	८९
काम्बलिक	...	८९
कृशरा	...	९०

पांचवां अध्याय ।

गुणक्रिया-परिभाषा

अनुलोमन	...	९१
दीपन	...	९१
पाचन	...	९२
दीपन-पाचन	...	९२
प्रमाथी	...	९२
भेदन	...	९२
छेदन	...	९३
लेखन	...	९३
लंघन	...	९३

विषय		पृष्ठ
ग्राही	...	९३
मदकारी	...	९४
अभिष्यन्दी	...	९४
काल	...	९४
औषधिभक्षणकाल	...	९५
पंचविध काल	...	९५
अर्थ	...	९६
कर्म	...	९७
सम्यग्योग	...	९७
हीनयोग	...	९७
अतियोग	...	९७
वामक	...	९७
वयःसंस्थापनी	...	९८
वर्ण्य (वर्णप्रसादक)		९८
विरेचन	...	९८
वाजीकरण	...	९९
विकाशी	...	९९
व्यवायी	...	९९
विशद	...	१००
विष	...	१००
विषघ्न	...	१००
विष्टम्भी	...	१०१
विश्राव्य	...	१०१
बृंहण	...	१०१
वृष्य (पौष्टिक)		१०१

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय		पृष्ठ
व्यायाम	...	१०२
शमन	...	१०२
संशोधन	...	१०२
संस्कार	...	१०३
स्रंसन	...	१०३
संग्राही या स्तम्भन		१०३
सत्व	...	१०३
सद्यःप्राणकर	...	१०४
सद्यःप्राणहर	...	१०४
सन्तर्पण	...	१०४
सात्म्य	...	१०५
सारक	...	१०५
रसायन	...	१०५
शुक्रल	...	१०५
धातुप्रवर्तक	...	१०५
सूक्ष्म	...	१०६
त्रिदोष	...	१०६
सप्तधातु	...	१०७
पदार्थगुण	...	१०७
रस	...	१०८
वीर्य	...	१०८
विपाक	...	१०८
प्रभाव	...	१०९
ऋतु	...	१०९
सञ्चय	...	११०
प्रकोप	...	१११
प्रशमन	...	१११
वेग	...	११२
रोपण	...	११२
दारण	...	११२
विबन्धकर	...	११२
आनाहकर	...	११३
विरुद्धाहार	...	११३
ऋतुसन्धि	...	११३
स्नेहन	...	११३
रूक्षण	...	११४

छठा अध्याय ।

आयुर्वेदोक्तगण ।

चरकोक्त ५० महाकषायगण ।

जीवनीय कषायगण	११५
बृंहणीय कषायगण	११५
लेखनीय कषायगण	११५
भेदनीय कषायगण	११६
सन्धानीय कषायगण	११६
दीपनीय कषाय	११६
बलकारक ...	११६
वर्ण्य (वर्णशोधक)	११७
कण्ठ्य ...	११७
हृद्य ...	११७

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय		पृष्ठ
तृप्तिनाशक	...	११७
अर्शोघ्न	...	११८
कुष्ठघ्न	...	११८
कण्डुघ्न	...	११८
कृमिघ्न	...	११८
विषनाशक	...	११८
स्तन्यजनक	...	११९
स्तन्यशोधक	...	११९
शुक्रजननवर्ग	...	११९
वीर्यशोधक	...	११९
स्नेहोपयोगीगण	...	११९
स्वेदोपयोगी	...	१२०
वमनोपयोगी	...	१२०
विरेचनोपयोगी	...	१२०
आस्थापनोपयोगी	...	१२०
अनुवासनोपयोगी	...	१२०
शिरोविरेचनीय	...	१२१
छर्दिनिग्रह	...	१२१
तृषानिग्रह	...	१२१
हिक्कानिवारक	...	१२१
पुरीषसंग्रहण	...	१२१
मलशोधक	...	१२२
मूत्रसंग्रहण	...	१२२
मूत्रशोधक	...	१२२

विषय		पृष्ठ
मूत्रविरेचनीय	...	१२२
कासहर कषायगण	...	१२२
श्वासहर	...	१२३
शोथहर	...	१२३
ज्वरहरकषाय	...	१२३
श्रमहर	...	१२३
दाहनाशक	...	१२३
शीतप्रशमन	...	१२४
उदर्दप्रशमन	...	१२४
अङ्गमर्दप्रशमन	...	१२४
शूलनाशक	...	१२४
शोणितस्थापन	...	१२४
वेदनाशामक	...	१२५
संज्ञास्थापक	...	१२५
प्रजास्थापन	...	१२५
वयःस्थापनकषायवर्ग	...	१२५

सातवां अध्याय ।

सुश्रुतोक्त ३७ गण

विदारिगन्धादिगण		१२६
आरग्वधादिगण	...	१२६
वरुणादिगण	...	१२७
वीरतर्वादिगण	...	१२७
सालसारादिगण	...	१२७

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय		पृष्ठ
रोध्रादिगण	...	१२८
अर्कादिगण	...	१२८
सुरसादिगण	...	१२८
मुष्ककादिगण	...	१२९
पिपल्यादिगण	...	१२९
एलादिगण	...	१२९
वचादिगण	...	१३०
हरिद्रादिगण	...	१३०
श्यामादिगण	...	१३०
वृहत्यादिगण	...	१३१
पटोलादिगण	...	१३१
काकोल्यादिगण	...	१३१
ऊषकादिगण	...	१३२
सारिवादिगण	...	१३२
अंजनादिगण	...	१३२
परूषकादिगण	...	१३३
प्रियंग्वादिगण	...	१३३
अम्बष्ठादिगण	...	१३३
न्यग्रोधादिगण	...	१३४
गुडूच्यादिगण	...	१३४
उत्पलादिगण	...	१३४
मुस्तादिगण	...	१३५
त्रिफला	...	१३५
त्रिकटुक	...	१३५
आमलक्यादिगण	...	१३५
त्र्प्वादि या वंगादिवर्ग		१३६
लाक्षादिगण	...	१३६
लघुपंचमूल	...	१३६
वृहत्पंचमूल	...	१३७
दशमूल	...	१३७
वल्लीपंचमूल	...	१३७
कण्टकपंचमूल	...	१३७
तृणपंचमूल	...	१३८

आठवां अध्याय ।

श्रीवाग्भटोक्त शोधनादिगण

विषय		पृष्ठ
छर्दगण	...	१३९
रेचकवर्ग	...	१३९
निरूहणवस्ति	...	१४०
शिरोविरेचन	...	१४०
वायुनाशक	..	१४०
पित्तनाशक	...	१४०
कफनाशक	...	१४१
जीवनीयगण	...	१४१
विदार्यादिगण	...	१४१
पद्मकादिगण	...	१४१
असनादिगण	...	१४२
वत्सकादिगण	...	१४२

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय		पृष्ठ
मधुरगण	...	१४३
अम्लवर्ग	...	१४३
तिक्तवर्ग	...	१४३
लवणवर्ग	...	१४४
कटुवर्ग	...	१४४
कषायवर्ग	...	१४४

नवां अध्याय ।

रसतन्त्रोक्त परिभाषा ।

विषय		पृष्ठ
रस	...	१४५
रससंस्कार	...	१४५
पारददोष	...	१४६
पारदमल	...	१४६
पारदबन्धन	...	१४६
भावनीयगण	...	१४६
पुटपाकीयगण	...	१४७
सप्तमहालता	...	१४८
नियामक ओषधियां		१४८
मारण ओषधियां		१४८
रसजारणीय ओषधियां		१४९
रससिद्धौषध	...	१४९
रसद्रावकगण	...	१५०
रसायन ओषधियां		१५०
महारस	...	१५०
उपरस	...	१५०
साधारण रस	...	१५१
मणि (रत्न)	...	१५१
महारत्न	...	१५१
नवरत्न	...	१५१
पञ्चरत्न	...	१५२
मुद्राघृत रत्न	...	१५२
अष्टधातु	...	१५२
शुद्धधातु	...	१५२
पूतिलौह	...	१५३
मिश्रलौह	...	१५३
षड्लौह	...	१५३
कृत्रिमलौह	...	१५३
षड्लवण	...	१५३
पंचलवण	...	१५४
लवणत्रिक्	...	१५४
क्षारद्वय	...	१५४
क्षारत्रयम्	...	१५४
क्षारपंचक	...	१५४
क्षाराष्टक	...	१५४
मधुरत्रय	...	१५५
मूत्रपंचक	...	१५५
मूत्राष्टक और मूत्रदशक		१५५
गोर्वर	...	१५५

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय		पृष्ठ
अम्लवर्ग	...	१५६
अम्लपंचक	...	१५६
पंचतिक्तक	...	१५६
पंचमृत्तिका	...	१५६
पंचामृत	...	१५७
पंचगव्य	...	१५७
क्षीरत्रय	...	१५७
पंचमाहिष	...	१५७
छागलपंचक	...	१५७
दुग्धवर्ग	...	१५८
तैलवर्ग	...	१५८
वसावर्ग	...	१५८
सिक्थतैल	...	१५८
द्रावकगण	...	१५८
मित्रपंचक	...	१५९
विषवर्ग	...	१५९
उपविषवर्ग	...	१५९
विडगण	...	१५९
रक्तवर्ग	...	१५९
पीतवर्ग	...	१६०
श्वेतवर्ग	...	१६०
कृष्णवर्ग	...	१६०
शोधनीयगण	...	१६०
धन्वन्तरिभाग	...	१६०
मृदुवर्ग	...	१६१
रुद्रभाग	...	१६१
ककारादिगण	...	१६१
दिव्यौषधि	...	१६२
रस महौषधि	...	१६३
सिद्धौषधि	...	१६४

दशवां अध्याय ।

पारिभाषिक शब्दकोष ।

विषय		पृष्ठ
अंशूदक या हंसोदक		१६५
अंजनत्रय	...	१६५
अंजनयुग्म	...	१६५
अम्लपंचक	...	१६५
अम्लिकापानम्	...	१६६
अष्टवर्ग	...	१६६
अष्टादशमूल	...	१६६
अष्टादशधान्य	...	१६६
आरोग्याम्बु	...	१६६
आक्षिकशीधु	...	१६७
आक्षिकी	...	१६७
इन्दुरसा	...	१६७
इक्षुरस	...	१६७
उदश्वित	...	१६८

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
उद्वर्तन ...	१६८	चतुरम्ल ...	१७३
औषधिपंचामृत ...	१६८	चतुरूषण ...	१७३
कटुचातुर्जात ...	१६८	चतुर्जात ...	१७३
कटुत्रय (त्रिकटु) ...	१६९	चतुर्बीज ...	१७३
कटुषट्कम् ...	१६९	चतुष्पाद ...	१७४
कणादिगण ...	१६९	चन्दनद्वय ...	१७४
कण्टकत्रय ...	१६९	चन्दनादिगण ...	१७४
करंजद्वय ...	१६९	चिकित्सांग ...	१७४
किंशुकादिगण ...	१६९	चिकिर ...	१७४
खनिजौषध ...	१७०	चिंचासार ...	१७५
खाण्डव ...	१७०	चिपिटा(चिपिटिका या च्यूड़ा)	१७५
किलाट ...	१७०	चुक्रम् ...	१७५
कूर्चिका ...	१७०	चूर्णोदकम् (सुधार्क)	१७६
गन्धद्रव्य ...	१७०	जगल: ...	१७६
गन्धाष्टक ...	१७१	जंगमविष ...	१७६
देवगन्धाष्टक ...	१७१	तर्पण ...	१७७
गणपतिगन्धाष्टक ...	१७१	दग्धभूमिशालि ...	१७७
शिवगन्धाष्टक ...	१७१	दुग्धकन्दगण ...	१७७
देवीगन्धाष्टक ...	१७२	दुग्धकूपिका ...	१७८
विष्णुगन्धाष्टक ...	१७२	दुग्धत्रय ...	१७८
गुडशुक्त ...	१७२	दुग्धबीज ...	१७८
गोधूमसार ...	१७२	दुग्धक्षीरिका ...	१७८
गोक्षुरादिगण ...	१७३	दूषीविष ...	१७९
घृतपूरक ...	१७३	दूष्यजल ...	१७९

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
द्वितीय त्रिफला ...	१७६	पंचलौह ...	१८४
द्विनिशा, द्विरजनी, द्विहरिद्रा	१८०	पंचवटी ...	१८४
द्विपर्णी ...	१८०	पंचवेतस, पंचवल्कल	१८४
द्विपुनर्नवा ...	१८०	पंचबीज ...	१८५
द्विमाष ...	१८०	पंचशस्य ...	१८५
द्विवार्ताकी, द्विबृहती	१८०	पंचसिद्धौषधि ...	१८५
द्विविष ...	१८०	पंचसुगन्धि ...	१८५
द्विक्षीर ...	१८०	पंचक्षार ...	१८५
धाना ...	१८०	पंचाङ्ग ...	१८५
धान्यपानक ...	१८१	पंचामृतयूष ...	१८५
धारोष्ण ...	१८१	पंचाम्र ...	१८६
धूमसी ...	१८१	पंचाम्ल ...	१८६
नदीमातृक ...	१८२	पंचारविन्द ...	१८६
निम्बुकपानक ...	१८२	पंचाविकम् ...	१८६
निर्झर ...	१८२	परोटः ...	१८७
पञ्चकोल ...	१८२	पानम् ...	१८७
पंचगण ...	१८२	पीयूष ...	१८७
पंचतिक्त ...	१८३	पुष्पजासव ...	१८७
पंचनिम्ब ...	१८३	पुष्पद्रव ...	१८७
पंचपल्लव ...	१८३	पुष्पविष ...	१८८
पंचपित्त ...	१८३	पूरिलिका ...	१८८
पंचभृङ्ग ...	१८३	पूर्णगर्भा ...	१८८
पंचमकार ...	१८३	पैष्टी ...	१८८
पंचमुष्टि ...	१८४	पोलिका ...	१८९

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय		पृष्ठ
प्रकोप	...	१८९
प्रज्ञापराध	...	१८९
प्रपानकम्	...	१९०
प्रक्षेप	...	१९०
फलवर्ग	...	१९०
फलविरेचन	...	१९०
फलविष	...	१९१
फलाम्लपंचक	...	१९१
फाणित	...	१९१
वलाख्यपंचमूल	...	१९१
भक्त	...	१९१
भूतोदनम्	...	१९२
भ्रष्टतण्डुलान्न	...	१९२
भेषज	...	१९२
मत्स्यण्डिकी	...	१९२
मधुत्रय	...	१९३
मधुमस्तक	...	१९३
मधुरजीवनीय	...	१९३
मधुरत्रिफला	...	१९३
मधुशर्करा	...	१९३
मधुशुक्त	...	१९४
मध्यपंचमूल	...	१९४
मध्यमाग्नि	...	१९४
मध्वासव	...	१९४

विषय		पृष्ठ
मन्थ	...	१९४
मस्तु	...	१९५
महापंचविष	...	१९५
महौषधि	...	१९५
मांसवारुणी	...	१९५
मांसोदन	...	१९६
माणमण्ड	...	१९६
माध्वीकम्	...	१९६
मार्द्वीकम्	...	१९६
मार्द्वीकशुक्तम्	...	१९६
मिश्रोदन	...	१९७
मुद्गामलक यूष	...	१९७
मुद्गार्द्रवटक	...	१९७
मुद्गोलुम्ब:	...	१९७
मूलविरेचन	...	१९८
मूलविष	...	१९८
यवमण्ड	...	१९८
यवरोटिका	...	१९८
रसाला	...	१९९
रागखाण्डव	...	१९९
लसीका	...	१९९
लाजतर्पण	...	२००
लाजपेया	...	२००
लाजभक्त	...	२००

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय		पृष्ठ	विषय		पृष्ठ
लाजमण्ड	...	२००	सम्पाव	...	२०४
लेप	...	२०१	सरम्	...	२०४
वटक	...	२०१	सर्वगन्धम्	...	२०४
वरान्न	...	२०१	सर्वौषधिगण	...	२०४
बलाद्वय	...	२०१	सामत्रय	...	२०५
बलात्रय	...	२०२	सूप	...	२०५
वेशवार	...	२०२	सौवीरकम्	...	२०५
व्यञ्जन	...	२०२	स्थावरविष	...	२०६
शक्तु	...	२०२	क्षीरपाक	...	२०६
सन्तानिका	...	२०३	क्षीरसन्तानिका	...	२०६
सन्धान	...	२०३	क्षुद्रवारुणी	...	२०७
सन्धानिका	...	२०३	शुद्धिपत्र	...	२०६

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

❀ श्रीधन्वन्तरयेनमः ❀

परिभाषा-प्रबोध

जाकी वेद कहत परिभाषा, नेति नेति थकि जावें।
जो अखिलेश अखिल जगकी, परिभाषा स्वयं बनावें।
परिभाषा-प्रबोध पूरण करि, वैद्यक यश सोइ छावें।
वैद्य लहें मुदमोद बोध "जगदीश" धन्य कहलावें।

परिभाषा

कुछ अर्थपूर्ण शब्दों की स्वरूपदर्शक व्याख्या को परिभाषा कहते हैं। इस पुस्तक में आयुर्वेद शास्त्र के ऐसे ही अर्थपूर्ण शब्दों की परिभाषा की जावेगी, जिससे वैद्यक-विद्यार्थी और वैद्यों को उनका भावपूर्ण अर्थ और व्यवहार समझने में सुविधा होगी। इस पुस्तक से पारिभाषिक शब्दों का बोध अच्छी तरह हो जावेगा। इसीलिये इसका नाम "परिभाषा-प्रबोध" रखा गया है। आयुर्वेद शास्त्र में पारिभाषिक शब्दों के सम्बन्ध में कहीं तो स्पष्ट वर्णन नहीं है और कहीं केवल शब्द-निर्देश कर दिया गया है, किन्तु उसका भाव नहीं खोला गया। ऐसे शब्दों का अर्थ और व्याख्या खोल कर उसके व्यावहारिक स्वरूप का इसके द्वारा प्रबोध

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हो जावेगा। अतएव वैद्यों और वैद्यक-विद्यार्थियों के लिये यह बहुत उपकारी होगी।

मानपरिभाषा

आयुर्वेदिक औषधियों के तौलमाप और मात्रायुक्त ग्रहण करने के ढंग को 'मानपरिभाषा' कहते हैं। जब तक औषधि उचित मात्रा के साथ और उचित ग्रहणीय अंश के साथ उपयुक्त स्वरूप में नहीं ली जाती तब तक उससे आरोग्यता रूपी उत्तम फल की प्राप्ति की पूरी आशा नहीं रहती। इसलिये वैद्यों को और औषधि प्रयोग करनेवालों को मानपरिभाषा जानना बहुत आवश्यक है; जिससे परिमाण और उचित अंश के साथ औषधि-कल्पना कर सफलता प्राप्त की जा सके।

प्रकार

आयुर्वेद में दो प्रकार की मानपरिभाषा प्रचलित है; एक 'मागधमान' और दूसरी 'कलिंगमान'। प्राचीन समय में मागधमान का ही व्यवहार किया जाता था। चरक कथित औषधियां इसी मान के अनुसार कही गयी हैं और यही मान-परिभाषा श्रेष्ठ समझी जाती है। भगवान सुश्रुताचार्य कलिंग मान के मानने वाले थे। किन्तु कलिंगमान प्रचलित करने में असुविधा है, क्योंकि वर्तमान प्रचलितमान से उसका मेल नहीं

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

खाता। सूक्ष्म विचार करने से मागधमान और आजकल के प्रचलितमान में विशेष अन्तर नहीं मालूम पड़ता। हम नीचे दोनों प्रकार की तौलमाप लिखते हैं। यही नहीं, आजकल की वर्तमान तौलमाप से उनकी तुलना कर समझा देना चाहते हैं ताकि बाजारू मान समझने में भी अड़चन न पड़े। आजकल भारत में हकामी औषधियों और एलोपैथिक (यूरोपीय) औषधियों का भी प्रचार है और कभी कभी वैद्यों को इनका जानना भी आवश्यक हो जाता है, इसलिये हम इन परिभाषाओं का भी दिग्दर्शन करा देंगे।

मागधमान

परमाणु

जालान्तरगते भानौ यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजः।
तस्य त्रिंशत्तमो भागः परमाणुः स उच्यते॥

परमाणु की कल्पना बहुत सूक्ष्मरूप से हो सकती है। जाली, झरोखे या खपरैल की सूक्ष्म सन्धियों से जो सूर्य की किरण किसी कमरे में आकर फैलती है, उस में उड़ते हुए कुछ रजःकण दिखलाई पड़ते हैं। उन रजःकण के तीसवें भाग को परमाणु कहते हैं।

त्रसरेणु

त्रसरेणु बुधैः प्रोक्तस्त्रिंशता परमाणुभिः।
त्रसरेणुस्तु पर्याय नाम्ना वंशी निगद्यते॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तीस परमाणु का एक त्रसरेणु होता है। झरोखे से दीखने वाले एक रज:कण के बराबर त्रसरेणु होता है। त्रसरेणु का दूसरा नाम वंशी है।

६ वंशी=१ मरीचि*
६ मरीचि=१ राई.
३ राई=१ सरसों.
८ सरसों=१ जव.
४ जव=१ गुंजा, रत्ती.
६ रत्ती=१ माशा, हेम, धान्यक.
४ माशे=१ शाण, धरण, टङ्क=चवन्नी भर.
२ टङ्क=१ कोल, क्षुद्रभ, वटक, द्रंक्षण=१ अठन्नी भर.
२ कोल=१ कर्ष, पाणिमानिका, अक्ष, पिचु, पाणितल, किंचित्पाणि, तिन्दुक, विडाल-पदक, षोडशिका (१६माशे), करमध्य, हंसपद, सुवर्ण, कवलग्रह, उदुम्बर अर्थात् ९६ रत्ती या १ तोला (वर्तमान एक रुपया भर).
२ कर्ष=१/२ पल=२ तोला, शुक्ति, अष्टमिका.
२ शुक्ति=१ पल, मुष्टि, आम्र, चतुर्थिका, प्रकुंची, षोड़शी, विल्व=४ तोले.

---

*सूर्य के प्रकाश में जो सूक्ष्म बालुका कण चमक उठते हैं, उन्हें मरीचि कहते हैं.

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२ पल=१ प्रसृति (पसर, अर्ध अंजली).

२ प्रसृति=१ अञ्जली, कुडव,* अर्धशराव, अष्टमान=१६ तोले.

२ कुडव=३२ तोले, एकमानिका, शराव (सकोरा, परई), अष्टपल.

२ शराव=१ प्रस्थ=६४तोले=१सेर.

४ प्रस्थ=१ आढक, भाजन, कंसपात्र=२५६ तोले अर्थात् ६४ पल.

४ आढक=१ द्रोण, कलश, नल्वण, उन्मन, उन्मान, घट, राशि=१०२४ तोले.

२ द्रोण=१ शूर्प, कुम्भ,= ८ आढक=६४ शराव=२०४८ तोले.

२ शूर्प=१ द्रोणी, वाह, गोर्णी=४०९६ तोले=१ मन १० सेर २ छटाक १ तोला.

४ द्रोणी=१ खारी=४०९६ पल अथवा १६३८४ तोले अर्थात् ५ मन १२ छटाक ४ तोले.

१ भार=२००० पल.

१ तुला=१०० पल.

---

*कुडव की तौल बनाने के लिये मिट्टी, बांस, लकड़ी, चमड़ा अथवा किसी धातु का ऐसा पात्र बनावे जो चार अंगुल लम्बा, ४ अंगुल चौड़ा और ४ अंगुल गहरा हो। इसे कुडव कहते हैं। इसके द्वारा दूध, जल, घृत, तैल आदि नापे जाते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ऊपर की मान-परिभाषायें माशा, टंक, अक्ष, विल्व, कुडव, प्रस्थ, आढक, राशि, गोणी और खारी यथोत्तर एक एक से चौगुनी होती है। अर्थात् ४ माशे का एक टंक, ४ टंक का एक अक्ष अर्थात् तोला, ४ तोले का एक विल्व, चार विल्व का एक कुडव, ४ कुडव का एक प्रस्थ अर्थात् सेर, ४ सेर का एक आढक, चार आढक की एक राशि १०२४ तोले, चार राशि की एक गोणी (गधे में लादी जानेवाली गोणी प्रायः १ मन की होती है), ४ गोणी की एक खारी। यथा--

माष टंकाक्षविल्वानि कुडवः प्रस्थमाढकम् ।
राशिर्गोणीखारिकेति यथोत्तर चतुर्गुणाः ॥

ऊपर के मान में स्मरण रखिये कि ६ रत्ती का माशा और १६ माशे का तोला माना गया है। कुडव-पाव १६ तोले का और सेर ६४ तोले का माना गया है। आज कल की तोल-माप में जो पुरानी तौल का अन्तर दीखता है, वह ऊपर की बात का बिचार करने पर दूर हो जाता है।

कलिंगमान ।

१२ सफेद या पीले सरसों=१ जव

२ जव=१ गुंजा, रत्ती (घुंघचिल नामक लता का बीज)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३ गुंजा=१ वल्ल, वाल*
८ गुंजा या रत्ती=१ माशा। कहीं कहीं सात रत्ती का भी माशा होता है।
४ माशे=१ शाण, निष्क, टंक
६ माशे=१ गद्यान=४८ गुंजा=आधा तोला.
१० माशे=१ कर्ष=८० गुंजा.
४ कर्ष=१ पल.
४ पल=१ कुडव=अंजली.

इसके बाद सब माप-तौल मागधमान के अनुसार ही समझना चाहिए।

रसशास्त्रोक्त मानपरिभाषा

६ अणु=१ तृटि.
६ तृटि=१ लिक्षा (लीख).
६ लिक्षा=१ यूक (जुवाँ).
६ यूक=१ रज.
६ रज=१ सर्षप (सरसों).

---

*वल्ल रत्ती के समान किन्तु उससे वजन में तिगुना चौगुना एक बीज होता है। यह बिलकुल लाल तथा बीच में उठावदार गोल चपटा ढालू सा होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

६ सरसों=१ जव.
६ जव=१ गुंजा.
२ गुंजा=१ निष्पाव (लोबिया का बीज).
३ गुंजा=१ वल्ल (वाल).
६ गुंजा अथवा २ वल्ल=१ माशा.
१२ माशा=१ तोला.
४ तोला*=१ पल.
२ माशा=१ धरण.
२ धरण=१ शाण.
२ शाण=१ वटक.
२ वटक=१ तोला (कर्ष).
२ कर्ष=१ शुक्ति (सीप).
२ शुक्ति=१ पल.
२ पल=१ प्रसृत (पसर).
२ प्रसृत=१ कुडव (अंजुली, पाव).
२ कुडव=१ मानिका (अर्ध सेर).
२ मानिका=१ प्रस्थ.
२ प्रस्थ=१ शुभ.
२ शुभ=१ आढक.
४ आढक=१ द्रोण (घट, उन्मान, नल्वण, अर्मण, कुम्भ).

---

*रसरत्नसमुच्चयकार ८ तोले का पल मानते हैं। मालूम पड़ता है द्रव पदार्थों में ८ तोले का पल माना गया है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१०० पल=१ तुला.
४० तुला=१ भार.

वर्तमान समय की तौलमाप

८ खसखस (पोस्ता के दाने)=१ चावल.
८ चावल=१ रत्ती.
८ रत्ती=१ माशा
१२ माशे=१ तोला=९६ रत्ती
५ तोले=१ छटांक
४ छटांक=१ पाव
४ पाव=१ सेर
५ सेर=१ पंसेरी
८ पंसेरी=१ मन
२० मन=१ खण्डी

मागधमान में ६ रत्ती का माशा और १६ माशे का तोला कहा गया है। इस प्रकार एक तोले में ९६ रत्ती हो जाती हैं। वर्त्तमान तौल के अनुसार भी तोले में ९६ रत्ती होती हैं। इस समय जो चांदी का रुपया चलता है वह तौल में ९६ रत्ती का अर्थात् एक तोले का होता है। एक तोले में करीब ४० वाल चढ़ती हैं। अंग्रेजी तौल के अनुसार १८० ग्रेन का रुपया होता है। किन्तु सराफों का तोला १९२ ग्रेन का होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

एक ग्रेन का वज़न लगभग एक गेहूँ के होता है। कलिंगमान के अनुसार ७० या ८० रत्ती का तोला मानना पड़ेगा। उस का मेल न तो मागधमान से होता और न आजकल के प्रचलित मान से ही होता है। यही कारण है कि वैद्यों ने मागधमान को ही मान दे रखा है। तोले से आगे वज़न का मेल करने के लिये यों समझना चाहिये कि १। पल की एक छटांक, २॥ पल का आधपाव, पांच पल का एक पाव और २० पल का एक सेर होगा। इसी के अनुसार अन्य मान की तौल का हिसाब लगा लेना चाहिये।

यूनानी तौलमाप

वैद्यों को कभी कभी यूनानी औषधियों पर भी विचार करना पड़ता है और हकीमों के साथ परामर्श भी करना पड़ता है। अतएव यूनानी तौलमाप समझ रखना भी आवश्यक है।

४ राई=१ चावल
४ चावल=१ जव
२ जव=१ रत्ती
८ रत्ती=१ माशा
३॥ माशा=१ दिरम
४॥ माशे=१ मिसकाल

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२१ माशे=१ पुख्तादाम
३० दाम=१ अकबरी सेर
४० दाम=१ आलमगीरी सेर
४८ दाम=१ फरूखशाही सेर
१।।। सेर=१ तबरेज़ी सेर
१४ माशे=१ आलमगीरी पैसा
६।। माशे=१ बहलोई पैसा
ʃ।। आधा सेर=१ रतल=१ पौंड
६ रत्ती=१ दांग
७ रत्ती=१ किरात
२ किरात=१ तुरमुसह
१ चावल=१ अरज़ा
४।। मिशकाल=१ अस्तार
७।। मिशकाल=१ ओकिया, वकिया
१ दिरम=१ बुन्दका
६ किरात=१ अबूलात
१/२ आधा दिरम=१ वाकला
२ मनका=१ अबरीक

दरम्याना-वज़न (मध्यमतोल) दो जंगली राई के समान होता है ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

औषधियों की अंगरेजी तौलमाप

१—अंगरेजी में सोना, चांदी और जवाहिरात तौलने में जो तौलमाप काम में आती है उसे ट्राय तौल कहते हैं। जौहरी लोग इसी तौल से काम लेते हैं। ट्राय तौल निम्न अनुसार होती है।

२४ ग्रेन=१ पेनीवेट।
२० पेनीवेट=१ औंस।
१२ औंस=१ पौंड।
१ पौंड ट्राय=५७६० ग्रेन।

एक ग्रेन बराबर होता है हमारे यहां की आधी रत्ती के। इसी के अनुसार तौल का परिमाण समझ लेना चाहिए।

२—अंगरेजों के यहां की प्रचलित बाजारू तौल को एवरडोपाइज तौल (Avoirdupois Weight) कहते हैं। वह नीचे दी जाती है :—

१६ ड्राम=१ औंस=लगभग २॥ तोला
१६ औंस=१ पौंड=३९॥ तोला
२८ पौंड=१ कार्टर=१४ सेर में ३ छटांक कम
४ कार्टर=१ हंडर=५६ सेर में करीब ३ पाव कम
२० हंडर=१ टन=२७ $\frac{२}{३}$ मन
१ स्टोन=१४ पौंड

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

एक पौंड एवरडोपाइज (बाजारू तौल) जौहरियों के 'सात हजार ग्रेन ट्राय' के बराबर होता है।

३—ब्रिटिशफर्माकोपिया के अनुसार डाक्टरी तौलों का परिमाण जो प्रचलित है उसे ऐपाथाकरीज वेट कहते हैं; वह नीचे दिया जाता है। यह सूखी दवाओं के तौलने में प्रयुक्त होता है। स्मरण रखना चाहिये कि डाक्टरों का एक ग्रेन हमारी आधी रत्ती के बराबर होता है। यह ग्रेन वज़न में प्राय: एक गेहूँ के वज़न भर होता है।

२० ग्रेन (gr.)=१ स्क्रूपल=१६ रत्ती
३ स्क्रूपल अथवा ६० ग्रेन=१ ड्राम=१५ रत्ती= लगभग २ माशे
८ ड्राम (४८० ग्रेन)=एक औंस=ढाई तोले
१६ कभी कभी १२ औंस=१ पौंड=आध सेर=लगभग ४० तोले

ऊपर जो ८ ड्राम का एक औंस दिया गया है वह जौहरियों के ट्राय औंस के बराबर ही होता है।

पतली चीजों की तौलमाप

१ टी स्पूनफुल=१ ड्राम=२ माशे
१ डेजार्ट स्पूनफुल=२ ड्राम=४ माशे
१ टेबिल स्पूनफुल=४ ड्राम=८ माशे
१ हाफ वाइन ग्लास=१ औंस=२॥ तोले
१ स्माल वाइन ग्लासफुल=२ औंस=१ छटांक

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१ ब्रेकफास्ट कपफुल=८ औंस=१ पाव

१ टी कपफुल=५ औंस=ढाई छटांक

ऊपर लिखी तौल में स्पून का अर्थ चम्मच है। 'टी स्पून फुल' का अर्थ चाय पीने का छोटा चम्मच, 'डेजार्ट स्पूनफुल' का अर्थ मध्यम चम्मच और 'टेबिल स्पूनफुल' का अर्थ बड़ा चम्मच है।

४—डाक्टरी में तरल पदार्थों की माप के लिये कांच के गिलास बने रहते हैं। इन्हें 'मेजर ग्लासेज' कहते हैं। उन पर माप का परिमाण जानने के लिये मिनिम (बूंद), ड्राम और औंस का वजन जानने के लिये आड़ी रेखाएँ तौल के नाम के चिन्हों के सहित बनी रहती हैं। उन्हें एक बार अच्छी तरह समझ लेने से फिर कोई अड़चन नहीं पड़ती। नीचे जो माप का परिमाण दिया जाता है उसमें एक मिनिम लगभग दो बूंद के समान समझना चाहिये।

६० मिनिम=१ ड्राम

८ ड्राम=१ औंस

२० औंस=१ पाइन्ट

८ पाइन्ट=१ गैलन

१ चाय चम्मच=१ ड्राम

१ मध्यम चम्मच=दो ड्राम

१ बड़ा चम्मच=४ ड्राम अथवा आधा औंस

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

एक पाइन्ट पानी तौल में सवा पौंड अर्थात् लगभग ढाई पाव होता है। अतएव एक गैलन में लगभग ५ सेर तरल पदार्थ समाता है। डाक्टरी औंस बाजारू तौल के औंस के समान ही होता है। ऊपर का मिनिम बूंद के अनुसार बनता है; किन्तु बूंद का परिमाण एकसा नहीं हो सकता। शीशी का मुंह चौड़ा होगा तो बूंद बड़ी होगी और संकरे मुंह की शीशी से छोटी बूंद निकलेगी। इतना होने पर भी मिनिम का परिमाण निश्चित रहता है, वह कम अधिक नहीं होता। अंगरेजी में बूंद का सांकेतिक चिन्ह m है किन्तु यदि दो मिनिम लिखना हो तो चिन्ह mii होगा।

चिकित्साशास्त्र वेत्ता और सुप्रसिद्ध रसायनशास्त्री स्यूवैंड साहब ने परीक्षा द्वारा स्थिर किया है कि शराब १३६ बूंद में एक ड्राम होती है। सलफ्यूरिक एसिड अर्थात् गन्धकद्रावक ६० बूंद में एक ड्राम होता है। लवणद्रावक ५४ बूंद में एक ड्राम, भपके का चुवाया हुआ डिस्टिलडवाटर ४५ बूंद में एक ड्राम, ईथर १५० बूंद में एक ड्राम, टिंकचर ओपियाई (अहिफेनासव) १२० बूंद में एक ड्राम और हैड्रोसाइनिक एसिड ४५ बूंद में एक ड्राम होता है।

५—डाक्टरी में भी मद्रासी वजन अलग ही चलता है। मालूम पड़ता है वहां फ्रेंच लोगों ने पहले आकर अपनी बस्ती बसायी थी, अतएव वहां उन लोगों की एक रीति स्वतन्त्र चल गयी, वह अब तक जारी है। उसका परिमाण निम्न अनुसार है :—

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१ वाल (Wal)= ४ ग्रेन
१ सुन्दिया पालिफुल=१ ड्राम
१ कार्ड पालिफुल=५ तोला वा २ औंस।
१ सायापाक पालिफुल=४ औंस=१० तोला
५ पालिफुल=८ वा १२ औंस
१ लाटा वा टामवियाफुल=३ वा ४ पौण्ड

आशा है, इस कोष्टक से दवाइयों का अंगरेजी परिमाण समझने में बहुत सुविधा होगी।

तौलने की विधि

तौलने के लिये खसखस, सरसों, राई, जव, चावल आदि एक समान दाने चुनकर रखे। गुञ्जा भी चुन कर और आठ चावल या दो जव भर परिमाण वाली लेकर रखे। डेढ़ माशे से लेकर एक पाव तक के पीतल के बांट और पीतल के तराजू दिल्ली तथा कानपुर में मिलते हैं। अंगरेजी तौल के बांट भी अंगरेजी दूकानों में मिलते हैं। पतले द्रव्यों के लिये स्वदेशी तौल के पात्र तो अभी नहीं मिलते परन्तु एलोपैथी माप के मेजर ग्लास बाज़ार में मिलते हैं, उन्हें रख सकते हैं। एक बार समझ लेने से इनके द्वारा औषधियों की माप सहज ही हो जायगी। बांट और तराजू समय समय पर साफ करते रहना चाहिये। रत्ती से लेकर कुडव (पाव) पर्यन्त औषधि तौलना हो तो चाहे सूखी औषध हो चाहे गीली और चाहे द्रवरूप हो बराबर तौल में लेवे। किन्तु प्रस्थ (सेर) से लेकर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तुला पर्यन्त तौल करनी हो तो सूखी ओषध समान तौल में ले, और गीली तथा द्रव ओषध दूने परिमाण में लेवे। तुला से ऊपर द्रोण तक की तौल में किसी आचार्य के मत में समान लेने को लिखा है और किसी के मत में गीली और पतली चीजें दूनी लेने को लिखा है; यथा--

गुंजादि मानमारभ्य यावत्स्यात्कुडवस्थितिः ।
द्रवार्दशुष्क द्रव्याणां तावन्मानं समं मतम् ॥

प्रस्थादि मानमारभ्य द्विगुणं तद्द्रवार्द्रयोः ।
मानं तथा तुलायास्तु द्विगुंण न कचिन्मतम् ॥

विशेषकर तैल तथा घृत पकाने में जो ओषध-द्रव्य व्यवहार में लाते हैं उसमें इसका विचार किया जाता है। किन्तु यदि सूखी वस्तु के अभाव में गीली लेनी पड़े तो दूनी तौल में लेवे। इसी तरह जहां गीली वस्तु लेनी चाहिये वहां गीली के अभाव में सूखी ओषध-द्रव्य आधी लेवे।

औषधि बनाने में जिस द्रव्य का उपयोग किया जाता है उसे ओषध कहते हैं। औषधि बनाने के लिये जो द्रव्य लिया जाय वह साफ और ताज़ा देख कर लेवे। वाग्भट ने लिखा है--

वहुकल्पं, वहुगुणं सम्पन्नं योग्यमौषधम् ।

अर्थात् दवा के कार्य में ऐसी वस्तु लेनी चाहिये जिसका उपयोग कई प्रकार से किया जा सके, जिसमें अनेक गुण हों, जो रोगनाशक गुणों से सम्पन्न हो चुकी है अर्थात् परिपक्व हो

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चुकी है और जो योग्य है। अर्थात् सड़ी घुनी, पुरानी, जली या पानी की डूबी हुई अथवा पाला मारी हुई न हो, कूड़े-करकट, मलस्थान, श्मशान आदि की न हो। सर्पकी बांबी की, ऊसर की, रास्ते की तथा कीड़ा लगी हुई औषध भी न ले।

औषध-द्रव्य-ग्रहण

नयी–पुरानी

साधारणतः औषधि-प्रयोग में ताज़ी और नयी वस्तु लनी चाहिये; परन्तु बायविडंग, पीपल, गुड़, धनियां, घी और शहद नया न लेकर सदा पुराना ही लेना चाहिये। एक साल के भीतर का औषध-पुष्प नया और एक साल के बाद का पुराना कहलाता है।

गीली–सूखी

औषधि योजना में प्रायः सूखी हुई वस्तु लेनी चाहिये। गीली ही लेनी पड़े तो दूनी ले; किन्तु गुर्च, नीम, नागवल, परवर, केतकी, बरियारी, पुनर्नवा, कुरैया, अडूसा, कूष्माण्ड (पेठा), मांस, गंगेरन, गूगल, हींग, अदरख, गुड़, मिश्री, पलाश, सतावर, असगन्ध, कटसरैया (पियावासा), सौंफ, मुण्डी और प्रसारिणी नाम की औषध सदा गीली लेनी चाहिये। गीली होने पर भी इनका वज़न दूना नहीं करना चाहिये।

पहला अध्याय समाप्त

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दूसरा अध्याय

औषधि-संग्रह-सूत्र

आयुर्वेद में जो औषधि काम में लायी जाती है वह कई प्रकार से तैयार की जाती है। उन प्रकारों के भिन्न भिन्न नाम हैं। यथा हिम, फांट, क्वाथ, चूर्ण, बटिका, वटक, मोदक, पाक, अवलेह, आसव, अरिष्ट, तैल, घृत, शर्वत आदि। औषधियां तैयार करने के पहले औषधिसंग्रह करना आवश्यक होता है। औषधि संग्रह करने के उद्योग में जिन पारिभाषिक शब्दों से काम पड़ता है, इस अध्याय में उनका वर्णन किया जायगा।

नामकरण

आयुर्वेदिक औषधियों के जिस प्रयोग में जो औषध पहले होती है, प्राय: उसी के नाम से उस औषधि का नाम पड़ता है। जैसे 'अभयादि क्वाथ' इस प्रयोग के पाठ में पहले अभया अर्थात् हर्र लिखी है, इस लिये इसका नाम अयभादि पड़ा। अर्थात् अभया है आदि में जिसके अथवा अभया इत्यादि औषधियां जिसमें हैं वह क्वाथ। इसी तरह लवङ्गादि चूर्ण, मरिचादि गुटिका, कुटजावलेह, शतावरी तैल, उशीरासव आदि समझें।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अनुक्त अंगादि

किसी औषधि के तैयार करने में किसी द्रव्य का कौनसा अंग लेना चाहिये यह प्रायः उसके पाठ में लिखा रहता है। जहां औषधि का समय न कहा हो वहां प्रातःकाल समझे, जहां किसी औषध का अंग न बतलाया हो वहां उसकी जड़ लेवे। छोटे और पतले वृक्षों की जड़ समूची लेवे; जैसे अपामार्ग कटेरी, गोखरू आदि। जिन वृक्षों की जड़ मोटी होती है, उन वृक्षों की जड़ की छाल लेवे। जिन वृक्षों की डाली आदि बड़ी नहीं होती उनके पत्ते लेवे; जैसे पान, तेजपात, तालीस, घीकुंवार आदि। पुष्प-वृक्षों के फूल अथवा उनकी केसर लेवे; जैसे केसर, कमल, चमेली, गुलाब, केतकी आदि। मोटे वृक्षों की पेंड़ी की छाल लेवे। फलवाले वृक्षों का फल लेवे; जैसे कंकोल, मैनफल, सुपारी, त्रिफला आदि। छोटे क्षुप वृक्षों का पंचांग अर्थात् जड़, डाली, पत्ते, फूल, फल सहित समूचा अंग लेवे। बरगद, पीपल, पाकर, गूलर, आम, जामुन, नीम आदि की पेंड़ी की छाल लेवे। खैर, बबूल, बिजयसार, आबनूस, महुवा आदि की लकड़ी के बीच का काला पका सार लेवे। क्षीरीवृक्षों का दूध लेवे; जैसे मंदार, थूहर आदि। जहां औषध-द्रव्यों की तौल स्पष्ट न लिखी हो वहां समान भाग लेवे। जहां औषधि प्रस्तुत करने के लिये किसी पात्र या वर्तन का निर्देश न किया गया हो वहां मिट्टी का वर्तन लेवे। जहां प्रस्तुत करने में किसी द्रव्य का निर्देश न किया गया हो वहां जल का उपयोग करे। क्षीरी वृक्षों का दूध न मिल सके तो उनके पत्तों का रस लेवे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गोंदवाले वृक्षों का गोंद लेवे; जैसे बबूल, पलाश, सरल आदि। जहां चन्दन का प्रयोग लिखा है, वहां स्मरण रखे कि यदि चूर्ण (जैसे लवंगादि चूर्ण), घृत, तैल, आसव, अवलेह आदि में लेना है तो सफेद चन्दन लेवे किन्तु यदि काढ़े में लेना है तो लाल चन्दन लेवे।

पुनरुक्त औषध

यदि एक ही प्रयोग के पाठ में कोई औषध दो बार या तीन बार लिखी जाय तो उसे पुनरुक्त-औषध कहते हैं। तौल में ऐसी औषध दो बार लिखी हो तो दूनी और तीन बार लिखी हो तो तिगुनी लेनी चाहिये।

उक्तानुक्त

किसी औषधि के पाठ में जो औषध लिखी हुई है उसे उक्त औषध कहते हैं और उस पाठ में जो औषध नहीं लिखी उसे अनुक्त औषध कहते हैं। यदि वैद्य देखे कि किसी पाठ में कोई उक्त औषध किसी विशेष रोगी के बल-काल-रोग स्थिति में अनुकूल नहीं है तो उसे निकाल दे और यदि कोई अनुक्त औषध भी लाभजनक मालूम पड़े तो उसे बढ़ा देवे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

द्रव्याहरण

जो ओषधद्रव्य जिस स्थान में होती है वहां से उसे विधिवत ले आने को द्रव्याहरण कहते हैं। वैद्य को उचित है कि रोगी के अनुकूल ओषध उचित स्थान से लावे। विन्ध्याचल, अमरकन्टक, सतपुड़ा, अरावली, सह्याद्रि (पश्चिमीघाट) नीलगिरि, मलयाचल और महेन्द्र (पूर्वीघाट) पर्वत की ओषध प्राय: आग्नेय गुण सम्पन्न होती हैं; अर्थात् उष्ण वीर्य होती हैं। वमन, विरेचन तथा मन्दाग्निनाश के लिये इनका उपयोग करना चाहिये। काश्मीर, नैपाल, भूटान, कमाऊं आदि हिमालय पर्वत की औषधियां सोमगुणसम्पन्न और शीतवीर्य होती हैं। धातुवृद्धि, ओजवृद्धि और रसायन प्रयोग के लिये इनका उपयोग करना चाहिये। इन पर्वतों के पास के वनों-उपवनों और बगीचों में भी जो वस्तु होंगी उनके गुण भी उन्हीं के समान समझना चाहिये।

ओषध लाने के लिये प्रात:काल उठे। शुद्ध और स्वस्थ चित्त तथा पवित्र हो उत्तम दिन (रविवार, सोमवार, गुरुवार, शुक्रवार) तथा उत्तम नक्षत्र (अश्विनी, हस्त, पुष्य, रेवती, पुनर्वसु, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अनुराधा, मूल तथा मृग) में सूर्य के सम्मुख मुख कर अथवा पूर्व या उत्तर मुख खड़े होकर चन्द्र, सूर्य तथा बृहस्पति और अपने इष्टदेव को स्मरण कर मौन हो अपने से उत्तर ओर की ओषध उखाड़े अथवा खोदे। दिन के चतुर्थ प्रहर में भी ओषधद्रव्य लाये जा सकते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

किन्तु उस दिन वैद्य उपवास रहकर, सन्ध्या-पूजन आदि नित्यकर्म से निश्चिन्त होकर पवित्र हो औषध लाने जावे। इस प्रकार लायी हुई औषध विशेष फलदायिनी होती है।*

शरद ऋतु (आश्विन, कार्तिक) में सम्पूर्ण जड़ी बूटी रस-वीर्य-प्रभाव आदि से पूर्ण हो जाती हैं, अतएव सब कार्यों के उपयोग के लिये इन दिनों औषध लाकर रख दे और उसे दस महीने काम में लावे। किन्तु वमन और विरेचन के लिये जिन बूटियों को लाना हो उन्हें ग्रीष्म ऋतु (ज्येष्ठ-आषाढ़) में लावे। ग्रीष्म ऋतु में वनस्पतियों की मंजरी में रसादि का वास रहता है, वर्षा में उनके पत्तों में तथा वसन्त में उनकी जड़ों में रसशक्ति की विशेषता रहती है। अतएव शीतकाल में मूल, ग्रीष्मकाल में पत्र और मंजरी, वर्षा में पत्र और बकला, वसन्त में कन्द, शरद और ग्रीष्म में गोंद, तथा हेमन्त ऋतु में सार ग्रहण करना चाहिये। जो औषध खुली जगह में बरसाती हवा खाती हुई पड़ी रही हो वह बेकाम हो जाती है। इसलिये वर्षा खायी हुई दवा बरसात के बाद फेंक देनी चाहिये।

---

*तन्त्रों में औषध लाने के समय मन्त्र-प्रयोग करना भी लिखा है। अर्थात् इस मन्त्र को पढ़कर औषध खोदे या तोड़े :—

ॐ येन त्वां खनते ब्रह्मा येनेन्द्रो येन केशवः।
तेनाहं त्वां खनिष्यामि मन्त्रपूतेन पाणिना॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उक्तग्रहण

जहां पर किसी भेषज की जाति, वर्ण या प्रकार का स्पष्ट उल्लेख न कर उसका नाम-मात्र लिख दिया गया हो, वहां उस जाति का जो विशेष प्रकार ग्रहण करने की परिपाटी है, उसे उक्त-भेषज-ग्रहण कहते हैं। जैसे जहां किसी पात्र का स्पष्ट उल्लेख न हो वहां मिट्टी का पात्र लेवे। जहां उत्पल शब्द आया हो वहां कमल के भेदों में से नीलोत्पल (नील कमल, गुलनीलोफर) ले। जहां शकृत रस या मल का रस लेने का उल्लेख हो वहां गोबर का रस, जहां मूत्र शब्द का उल्लेख है किन्तु पशु का नाम नहीं लिखा, वहां गाय का मूत्र या गोबर लेवे। मूत्र ब्यायी हुई गाय का लेवे, बछिया या कलोर का न लेवे। स्त्री जाति का मूत्र आग्नेय-शक्तिवाला और पुरुष जाति का सोमगुणयुक्त होता है, अतः स्त्रीजातिका ही मूत्र लेवे। नर जाति का नहीं। जहां चन्दन शब्द लिखा हो वहां लाल चन्दन ले, किन्तु आसव, अवलेह और चूर्ण में सफेद चन्दन ले और काढ़े तथा लेप में लाल चन्दन ले। सर्षप शब्द से सफेद या पीली सरसों ले। लवण शब्द से सेंधा नमक ले। केवल क्षार शब्द लिखा रहने से यवक्षार ले। जहां दूध, घी, दही, मट्ठा या मक्खन का उल्लेख हो वहां गाय का दूध, घी, दही, मट्ठा या मक्खन ले। चौपायों में स्त्री जाति और पक्षियों में नर जाति को ग्रहण करे। जंगली जीवों में मध्यम आयु के पुष्ट जीव को ले। जहां मांस लेने को कहा हो वहां चर्म, नख, रोम को अलग कर हड्डी के सहित मांस को टुकड़े टुकड़े करके लेवे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जहां बकरे का मांस तैल या घृतपाक में लेने को लिखा हो वहां नर या मादा न लेकर मध्यम आयु के पुष्ट नपुंसक (खस्सी) बकरे को लेवे। कम उमर के या बूढ़े, निर्वीर्य, बीमार या जिसका रक्त निकल गया हो ऐसा बकरा न ले। अभाव में बांझ मध्यम आयु की पुष्ट बकरी ली जा सकती है। जहां शृगाल या भेड़ या मोर के मांस से घृत या तैल का पाक करना हो वहां नर जाति लेवे।

औषध प्रतिनिधि

किसी द्रव्य के अभाव में उसी गुणवाली तथा समान रस-वीर्य-विपाक-प्रभाववाली दूसरी वस्तु ली जाती है तब उसे न मिलनेवाली औषध की प्रतिनिधि औषध कहते हैं। प्रतिनिधि चुनते समय वैद्य को बहुत सावधानी रखनी चाहिये। मुख्य औषध का प्रयोग जिस विशेष गुण या शक्ति के लिये हुआ हो वही कार्य जिससे हो सके उसे ही प्रतिनिधि रूप से लेना चाहिये। परन्तु किसी औषधि के गुण में जो मुख्य औषध हो उसकी प्रतिनिधि औषध न लेकर मुख्य औषध की ही तलाश करनी चाहिये। रस, वीर्य, विपाक, प्रभाव और गुणावगुण का विचार कर प्रतिनिधि लेवे। नीचे कुछ द्रव्यों

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

के प्रतिनिधि द्रव्य उदाहरणार्थ दिखलाये जाते हैं। प्रधान द्रव्य के अभाव में उनका ग्रहण होना चाहिये।

प्रधान द्रव्य	प्रतिनिधि द्रव्य
मधु	पुराना गुड़
पुराना गुड़	नया गुड़ चार पहर तक धूप में सुखा कर
दूध	मूंग या मसूर का जूस
मिश्री	चीनी
चीनी	खांड
शालिधान्य	साठी चावल
मुनक्का	छुहारा या खम्भार का फल
अनार खट्टा	आमड़ा
सौराष्ट्री	पंक-पर्पटी (गीली कापू मिट्टी की सूखी पपड़ी)
तगर	शिहलीजटा, कूट
लौह	लोहकिट्ट (लोह का मैल)
सफेद सरसों	पीली सरसों
चव	पीपरामूल
गजपीपर	पीपरामूल
पीपरामूल	गजपीपर
पिथवन	सरिवन
सरिवन	पिथवन
कुंकुम (केसर)	हल्दी या कुसुम के फूल

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मुक्ता	सीप या शंख
हीरा	वैक्रान्त (तुरमुली) या कौड़ो (कपर्दिका)
शंख	कौड़ी
ककड़ासिंगी	माजूफल
धनिया	सौंफ
सौंफ	सोया
वाराहीकन्द	चमारीकन्द
मूर्वा	जिंगनी वृक्षकी छाल, दालचीनी
पोहकरमूल	मीठाकूट
सेंधानोन	समुद्रनोन (पांगा नमक)
कुस्तुम्बरु (हरी धनियां)	धनियां
किसी वृक्षके फूलके अभाव में	उसी वृक्षका कच्चा फल
विड नमक	कांच लवण
मुलहटी	चव
कुरैया	मुसली की जड़ या कुचिकी छाल
रासना	वृक्ष का बांदा
जीरा	धनियां
तुम्बरु	शालिधान्य
भिलांवां	चीता या लाल चन्दन
ऊख	नल
मद्य	सिरका
शुक्त	कांची
चीता	दन्तीमूल या अपामार्ग क्षार

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जवासा	लाल धमासा
अहिंस्रा (कण्ठकपाली)	मानकन्द
लक्ष्मणा	श्वेत कंटकारी या मयूरशिखा
बकुल	कमलपुष्प या गुलनीरोफर
नीलोत्पल	गुलनीरोफर, कुमुदनीपुष्प
चमेली	लवंग
अर्कदुग्ध	अर्कपत्ररस
पुहकरमूल	कूट
वकुची	कुकरौंदाका फल
करिहारी	कूट
श्रीखण्डचन्दन	कपूर अथवा लालचन्दन
लालचन्दन	खस
अतीस	नागरमोथा
हर्र	आंवला
नागकेसर	पद्मकेसर
मेदा	सतावर, सालममिश्री, असगंध
जीवक	बिदारीकन्द,
काकोली	असगन्ध
ऋद्धि	बाराहीकन्द, बरियारी
वृद्धि	बीजबन्द, महाबला
महामेदा	मुलेहठी, बहमन सफेद, सारिवा, शकाकुलमिश्री
ऋषभक	गुडूची बंशलोचन या बहमनसुर्ख
क्षीरकाकोली	सफेद मसली या सतावरी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सुवर्ण	सुवर्णमाक्षिक
चांदी	रौप्यमाक्षिक
स्वर्णमाक्षिक	स्वर्णगेरू
स्वर्णभस्म } रौप्यभस्म }	कान्त भस्म
कान्तभस्म	खेडी लोहे की भस्म
चासनी	सफेद चीनी
रसवत	दारुहल्दी का क्वाथ
गोपीचन्दन	फिटकरी
तालीसपत्र	स्वर्णताली
भारंगी	तालीसपत्र, भटकटैया की जड़
मुलहटी	धौके फूल
अम्लवेत	चूक, आलूबुखारा
खम्भारफल	दुपहरिया का फूल (बन्धूक)
नखी	लौंग
कस्तूरी	लताकस्तूरी, कंकोल या जायपत्री
कपूर	भद्रमोथा, गठिवन
दारुहल्दी	हल्दी
तालमखाना	गोखरू
अजमोदा	अजवाइन
अष्टमूत्र	गोमूत्र
कंकोल	इलायची या जावित्री
कन्द	सूरन

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

धौके फूल	मौहा के फूल
पीपल	मिर्च
दही	तक्र
बकरी या भेड़ का दूध	गाय का दूध
खैर छाल	बबूल की छाल, नीम की छाल
वच	कुलींजन
किसी क्षार के अभाव में	अपामार्गक्षार

दूसरा अध्याय समाप्त

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तीसरा अध्याय

औषधिनिर्माण-परिभाषा

कषाय

किसी एक या सम्मिलित अनेक पदार्थों के ढीले अथवा तरल रूप में निकाले हुए सार अंश को कषाय कहते हैं। यह कषाय पांच प्रकार का होता है। १ स्वरस, २ कल्क, ३ क्वाथ, ४ हिम और ५ फाण्ट। इन में स्वरस कुछ भारी होता है। इसके बाद क्रमशः हलके हैं। अर्थात् स्वरस से कल्क हलका है, कल्क से क्वाथ हलका है, क्वाथ से हिम और हिम से फांट हलका है।

स्वरस

किसी बनस्पति को कुचलकर अथवा वह सूखी हो तो दूने पानी में भिगो कर और कूट कुचल कर छान लेने से जो रस निकलता है उसे स्वरस कहते हैं। गीली बनस्पति योंही कूट कुचल कर कपड़े में या किसी यन्त्र में डाल छान ली जाती है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बेल की पत्ती; रूसे की पत्ती आदि कुछ ऐसी बनस्पतियां हैं जिन में कुछ पानी का छींटा दिये बिना स्वरस नहीं निकलता। ऐसी वस्तुओं का स्वरस निकालने में थोड़ा पानी का छींटा दे देना चाहिये। सूखी दवा हो तो दो तोले कुचली हुई दवा ४ तोले पानी में एक दिन रात भिगो कर रहने दी जाय। इसके बाद उसे मल कर कपड़े में डाल छान ली जाय। इसे भी स्वरस कहते हैं। यहां २ तोले दवा का साधारण परिमाण कहा है। जितनी दवा की आवश्यकता हो उसका दूना पानी डाल दवा भिगोवे और ऊपर की विधि से स्वरस निकाल लेवे। किसी किसी आचार्य के मत में सूखे द्रव्य को (जिसे भिगोने पर रस निकलना कठिन होता है) अठगुने जल में पकावे और चौथाई शेष रहने पर छान ले, उसे भी स्वरस कहते हैं। स्वरस पाक में (पचने में) भारी होता है। इस लिये इसकी मात्रा आधा पल (दो तोले) रखनी चाहिये। पानी में भिगोकर निकाला हुआ स्वरस चार तोले तक लिया जा सकता है। जो दवा रात भर भीगी रख सवेरे पका कर स्वरस निकाला जाय उसे भी ४ तोले तक ले सकते हैं। यदि स्वरस में शहद, मिश्री, चीनी, गुड़, खांड, जीरा, जवाखार, सेंधानमक, घी, तेल तथा किसी वस्तु का चूर्ण डालना हो तो ३ माशे से डेढ़ तोले तक रोगी की अवस्था, प्रकृति आदि का विचार कर डाले। लिखा भी है—

मधुश्वेतागुडक्षाराजीरकं लवणं तथा।
घृतं तैलं च चूर्णादीन्कोलमात्रं रसे क्षिपेत्॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पुटपाक

स्वरस का एक भेद पुट-पाक है। किसी गीली अथवा भिगोकर गीली की हुई वनस्पति को सिल पर अथवा खरल में डाल कूट कर गोला बनावे। फिर उस गोले को जामुन या बरगद या एरण्ड या खम्भार के पत्तों से लपेट उसके ऊपर एक या दो अंगुल मोटी गीली मिट्टी का लेप करदे। उस गोले को भड़भूंजे के भाड में या कण्डों के अहरा के बीच रख कर पकावे। जब गोले की मिट्टी लाल हो जावे तब उसे निकाल मिट्टी और पत्ते अलग कर औषधि का रस निचोड़ लेवे। इसे पुटपाक कहते हैं। इसकी मात्रा एक तोले से चार तोले तक है। इस में यदि शहद या मिश्री डालना हो तो छः माशे से २ तोले तक डाले। अडूसा, बेल की पत्ती आदि जिन वनस्पतियों में यों ही रस नहीं निकलता उन से पुटपाक द्वारा निकाल लेना अच्छा होता है।

श्वेततण्डुलमण्डम्

चावलों को धोकर चौगुना पानी डाल वर्तन धूप में रख दे। धूप की उष्णता के कारण चावलों से सफेद गाढ़ा पानी मलकर निकाल ले। इसे श्वेततण्डुलमण्ड कहते हैं। यह मधुर, शीतल, कुछ श्लेष्मा बढ़ाने वाला, शोष, अश्मरी, मेह, छर्दि और वातविकार नष्ट करने वाला होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कल्क

सूखे या गीले औषधद्रव्य पानी डाल कर सिल पर पीस लिये जायं और उसमें औषधि के बराबर पानी छोड़ कर ढीला कर लिया जाय उसे कल्क कहते हैं। आवाय और प्रक्षेप कल्क के पर्यायवाची शब्द हैं। इसकी मात्रा एक से २ तोले तक है। कल्क में शहद, घी या तेल आदि ऊपर से डालना हो तो कल्क से दूनी मात्रा में लेवे। चीनी, मिश्री या गुड़ डालना हो तो कल्क के बराबर लेवे। उस में दूध, पानी आदि तरल पदार्थ डालना हो तो कल्क से चौगुना लेवे।

क्वाथ

किसी कुटे हुए भेषज द्रव्य में चौगुना, अठगुना अथवा सोलहगुना पानी डाल जो दवा पका ली जाती है उसे, पके हुए तरल भाग को, क्वाथ कहते हैं। शृत, कषाय और निर्यूह इसके पर्यायवाची नाम हैं। क्वाथ को हिन्दी में काढ़ा कहते हैं।

काढ़ा बनाने के लिये एक पल औषध जौकुट कर (जौ के समान छोटे छोटे टुकड़े से बनाकर) १६ पल जल में डाल हलकी आंच से धीरे धीरे पकावे। जब दो पल जल शेष रहे तब उतार कर छान ले। यह कुछ कुछ गुनगुना रहे तभी पीने को देवे। पहले का किया हुआ आहार जब पच जाये तब

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वैद्य को उचित है कि रोगी को काढ़ा पिलाये। काढ़ा बनाने के लिये मिट्टी का पात्र होना सब से उत्तम है। इसके अभाव में कलईदार वर्तन या इनामल्ड (लौहपात्र में मसाला-सा जमा कर जो वर्तन तैयार होते हैं) किया हुआ वर्तन ले सकते हैं। यद्यपि शास्त्र में सोलहगुना जल डाल कर काढ़ा बनाने की आज्ञा है, तथापि व्यवहार में वैद्य लोग रोग के बढ़े हुये परिमाण में तथा कफ-विकार में सोलहगुना जल डाल कर अष्टमांश जल शेष रहने पर उतारते हैं। वायु-विकार में और दोषों के मध्यम उल्वण में आठगुणा जल डाल कर चतुर्थांश शेष रहने पर उतारते हैं और पित्त-विकार में तथा दोषों के साधारण उभाड़ में चतुर्गुण जल डाल कर अर्धांश शेष रहने पर उतारते हैं।

क्वाथ, बनाने की विधि के भेद से, सात प्रकार का होता है। १ पाचन, २ शोधन, ३ क्लेदन, ४ संशमन, ५ दीपन, ६ तर्पण और ७ शोषण। जिसमें पकते पकते जल आधा रह जाय उसे पाचन कहते हैं। जिसमें पकते पकते जल बारहवां हिस्सा बचे उसे शोधन कहते हैं। जिसमें चौथाई जल शेष रहे उसे क्लेदन कहते हैं। जिसमें पकते पकते आठवां भाग जल रह जाय उसे संशमन कहते हैं। जिसमें पकते पकते छठा भाग जल शेष रहे उसे दीपन, कोई कोई आचार्य दशवां भाग शेष रहने पर दीपन मानते हैं। जिसमें पांचवां भाग जल शेष रहे उसे तर्पण, किन्तु कोई कोई आचार्य छठा भाग शेष रहने पर तर्पण मानते हैं। और जिस क्वाथ में पानी जलते जलते

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सोलहवां भाग शेष रहे उसे शोषण क्वाथ कहते हैं। इन में से पाचन दोषों को पचाता है। दीपन अग्नि को प्रदीप्त करता है। शोधन मलों का शोधन करता है। शमन रोग शमन करता है। तर्पण धातुओं को तृप्त तथा शान्त करता है। क्लेदन हृदय में मचलाहट पैदा करता है। विशोषी दोशों का शोषण करता है। दोषों का बलाबल देखकर प्रायः रात में पाचन देना चाहिये। किन्तु नव-ज्वर में पाचन न देवे क्योंकि नवज्वर में पाचन दोष बढ़ाता है, घटाता नहीं। यदि क्वाथ पीने पर रोगी का जी मचलावे, मूर्छा हो, शिरमें दर्द हो तो उसे उसी दम वमन करा दे। यदि कफाधिक्य हो तो पहले दिन पिछली रात में शोषण क्वाथ देवे। सबेरे शमन देवे, तीसरे पहर दिन में दीपन देवे। सूर्योदय के पहले शोधन क्वाथ दे। ताम्र-पात्र में कभी काढ़ा न बनावे, उसमें विष आ जाता है। हां यदि वमन के लिये क्वाथ देना हो तो ताम्र-पात्र में बनावे। यदि एक बार का पकाया हुआ काढ़ा या पानी ठण्डा होने के बाद फिर पकाया जाता है तो वह विष के समान होजाता है और रोगी के लिये मारक होता है।

काढ़े में मिश्री या चीनी मिलानी हो तो काढ़ा उतार कर छान लेने के बाद मिलावे। वातविकार में काढ़े की चाथाई, पित्तविकार में अष्टमांश और कफविकार में सोलहवां हिस्सा शकर डाले। यदि शहद डालना हो तो पित्तविकार में सोलहवां भाग, वातविकार में आठवां भाग और कफविकार में चतुर्थांश डाले। यदि काढ़े में जीरा, गूगुल (शुद्ध किया

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हुआ), जवाखार, सेंधा नमक, शिलाजीत, हींग या त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपल) डालना हो तो एक शाण (तीन माशे) डालने की शास्त्राज्ञा है। यद्यपि ऐसी आज्ञा है तथापि आज-कल के लोगों की शक्ति को देखते हुए गूगुल एक से दो माशे तक, जवाखार ४ रत्ती से ८ रत्ती तक, शिलाजीत १ से ४ रत्ती तक और हींग १ से ४ रत्ती तक प्रकृतिमान का विचार कर डालना ठीक होगा। यदि काढ़े में दूध, घी, गुड़, तेल, मूत्र या अन्य द्रवपदार्थ डालना हो या कोई कल्क या चूर्ण मिलाना हो तो साधारणतः एक एक तोले तक डाले।

स्मरण रखना चाहिये कि काढ़ा पकाते समय वर्तन पर ढक्कन न ढके। क्योंकि ढक देने से क्वाथ भारी हो जाता है। इसलिये सब जगह काढ़ा बनाते समय वर्तन का मुंह खुला रखने को स्मरण रखे। लिखा भी है—

अपिधान मुखे पात्रे जलं दुर्जरतां व्रजेत।
तस्मादावरणं त्यक्त्वा क्वाथादीनां विनिश्चयः॥

प्रमथ्या कषाय

क्वाथ का एक भेद प्रमथ्या है। एक पल ओषधद्रव्य ले कूटपीस कर कल्क करे। यदि ओषध सूखी हो तो उसे भिगो कर कल्क करे। फिर उसमें अठगुना जल डाल क्वाथ-विधि से पकावे। जब दो पल जल शेष रहे तब उतार छान कर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

काम में लावे। इसे प्रमथ्या कहते हैं। इस के सेवन की मात्रा दो पल है।

हिम

एक पल अर्थात् चार तोले औषधद्रव्य कूट कर छः गुने पानी में डाल मिट्टी या कांच के वर्तन या कलईदार वर्तन में रातभर भीगता रहने दे। सवेरे उसे मलकर छानले। इसे हिम अथवा शीतकषाय कहते हैं। इसकी मात्रा दो पल तक की है।

चावल का धोवन

कुछ औषधियों के साथ चावल के धोवन की आवश्यकता पड़ती है। यह भी हिम के ढंग का है। इसलिये उसकी विधि भी लिखते हैं। चार तोले साफ चावलों को टुकड़े टुकड़े कर पहले एक बार साधारणतः धो डाले फिर उन में ३२ तोले पानी डाल एक घण्टा भीगता रहने दे। इसके बाद उन चावलों को पानी के साथ खूब मले। इस से जो सफेद पानी निकले उसे औषधि व्यवहार में लेना चाहिये। चावल का धोवन कषाय, मधुर, लघु, संग्राही, विष, छर्दि, तृष्णा और दाह को नष्ट करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

फाण्ट

एक पल औषधद्रव्य कुचल कर रखे। औषधद्रव्य से चौगुना पानी आग पर रख पकावे। जब एक चतुर्थांश पानी जल जावे तब उसी में दवा डाल ढक्कन से ढक पात्र आग से उतार जमीन पर रख दे। थोड़ी देर में उसे मल छान कर काम में लावे। उसमें यदि शहद, चीनी आदि मिलाना हो तो क्वाथ के समान मात्रा से डाले।

मन्थ

फाण्ट का एक भेद मन्थ है। एक पल औषधद्रव्य को खूब कूट कर १६ तोले पानी में एक मटकी में डाल कर भिगोवे। फिर उसे मथानी से मथे। जब उस में खूब झाग उठे तब उसे छान ले। इसकी मात्रा ८ तोले तक है। फाण्ट में पानी गरम लिया जाता है और इसमें मथानी से मथकर जल में उष्णता उत्पन्न की जाती है जिससे औषधि का सार निकल आवे।

चूर्ण

किसी एक या मिली हुई अनेक सूखी औषधियों को कूट छान कर जो बारीक किया जाता है, उसे चूर्ण कहते हैं। जो

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चूर्ण चलनी से छाना जाता है वह मोटा चूर्ण कहलाता है; किन्तु कपड़े से छाना हुआ चूर्ण उत्तम समझा जाता है। चूर्ण के पर्यायवाची नाम रज और क्षोद हैं। चूर्ण की मात्रा डेढ़ माशा से एक तोले तक है। किन्तु उग्र और विषोपविष औषधियों की मात्रा एक रत्ती से ८ रत्ती तक रहती है। चूर्ण किसी कागदार बोतल या ढक्कनदार बर्तन में रखना चाहिये। खुले मुंह रखने से चूर्ण की शक्ति घट जाती है।

यदि चूर्ण में गुड़ मिलाना हो तो चूर्ण के बराबर डाले। हींग डालनी हो तो उसे घी में भून कर एक रत्ती से ४ रत्ती तक एक खुराक में मिलावें। बिना भुनी हींग बिकलता उत्पन्न करती है। चूर्ण में घी या शहद मिलाना हो तो चूर्ण से दुगने परिमाण में लेवे। यदि घी और शहद दोनों मिलाने हों तो चूर्ण के बराबर शहद और शहद से दूना घी मिलावे। चूर्ण में गोमूत्र या पानी या दूध मिलाना हो तो चूर्ण से चौगुना मिलावे। चूर्ण, अवलेह, गुटिका और कल्क के साथ जो अनुपान की वस्तु लेनी हो वह पित्तविकार में तीन पल, वात-रोग में दो पल और कफविकार में एक पल लेवे।

अनुपान

प्रधान औषधि को मुखस्थ कर निगलने में सुविधा के लिये जो पीने या उतारने की वस्तु ली जाती है उसे अनुपान

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कहते हैं। अनुपान अर्थात् औषधि के बाद पीना। अनुपान के सहारे औषधि लेने से उत्तमता के साथ वह देह में फैल जाती है। जैसे जल में तेल की बूंद डाली जाय तो वह तुरन्त फैल जाती है, उसी तरह अनुपान के जोर से खायी हुई औषधि फैल जाती है। लिखा है—

यथा तैलं जलेक्षिप्त क्षणेनैवप्रसर्पति।
अनुपानवलादंगे तथासर्पतिभेषजम्॥

भावना

किसी चूर्ण में गुणवर्धन के लिये किसी दूसरी औषधि के द्रव-भाग का जो पुट दिया जाता है उसे भावना कहते हैं। किसी चूर्ण में यदि नींबू के रस, भृंगराज या ब्राह्मी आदि किसी वनस्पति के रस की भावना देनी हो तो दवा के खरल में उतना रस डाले जितने में वह चूर्ण डूब जाय। इसके बाद उसे घोटते घोटते सुखा डाले।

वटिका

किसी औषधि का चूर्ण कर उसमें जल या किसी औषधि का काढ़ा अथवा रस अथवा लिपटने योग्य शहद, गुड़, गूगल आदि मिला कर जो गोल छोटी गोली सी बनायी जाती है

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उसे बटिका कहते हैं। गोली, गुटिका, वटी आदि इसके पर्याय हैं। जो गोली बड़े आकार की बनायी जाती है उसे लड्डू, पिण्डी, गुड़, भेली, मोदक आदि कहते हैं। जो गोली चपटी-गोली और बीच में उभाड़दार उठी हुई बनायी जाती है उसे चन्द्रिका कहते हैं। जो ऐसी दवा लम्बी, गोल बनायी जाती है उसे वर्तिका या बत्ती कहते हैं।

गोली बनाने के लिये यदि गुड़, चीनी या मिश्री का उपयोग करना हो तो या तो इन्हें कड़ाही में डाल अन्दाज से पानी मिला कड़ी चासनी बना ले। अर्थात् जब उसमें तीन तार उठें और चासनी पानी में डालने से गाढ़ी हो जावे तब चासनी सिद्ध हुई समझे। यदि गूगल मिलाना हो तो पहले उसे शोधन कर उसका भी गुड़ के समान पाक करके मिलावे। यदि पाक न करे तो गूगल शुद्ध कर चूर्ण में मिलावे और घी डाल डाल कर सब को खूब कूटता जावे। जब गोली-बनाने लायक ढीला होजावे तब गोली बनाले। यदि दूध, पानी, शहद अथवा किसी बनस्पति के अर्क से गोली बनानी हो तो चूर्ण में इन्हें मिला कम से कम एक पहर घोटे और बारीक चिकना हो जाने पर गोली बनाले। गोली बनाने के लिये जो खांड या मिश्री डालनी हो तो चूर्ण से चौगुनी डाले। यदि गुड़ डालना हो तो चूर्ण से दूना लेवे। यदि गूगल या शहद मिला कर गोली बनानी हो तो चूर्ण के बराबर लेवे। पानी या दूध अथवा किसी बनस्पति का रस डाल गोली बनानी हो तो चूर्ण से दूना डाले। गोली की मात्रा एक रत्ती से दो तोले तक की है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

घृत, तेल, वटिका, चूर्ण तथा क्वाथ के पाठ में जो द्रव्य दो बार लिखा हो उसे तौल में दूना ले लेवे।

अवलेह

औषधियों के क्वाथ या रस को औटाकर चाटने लायक गाढ़ा बनाने को अवलेह या रसक्रिया कहते हैं। काढ़ा नित्य बनाना पड़ता है; किन्तु काढ़े को और भी पका कर उसमें चीनी या मिश्री डाल तथा रोगहारी अन्य औषधियां मिलाकर चाटने की चीज़ तैयार कर लेने से वह अधिक दिनों तक टिक सकती है और रोगी को लेने में भी सुबिधाजनक होती है। इसे चाटव, चटना, अवलेह, लेह आदि कहते हैं। अवलेह की मात्रा आधा तोले से चार तोले तक रोगी और रोगमान के अनुसार होती है।

अवलेह बनाने के लिये भी काढ़े या रस या अर्क में चीनी, मिश्री या गुड़ डाल कर चासनी बनानी पड़ती है। अवलेह की चासनी गोली की चासनी से कुछ ढीली रखनी पड़ती है। जब चासनी में दो तार छूटने लगें और ठण्डा होने पर चिपचिपा सा रहे तथा पानी में डालने से डूब जावे तब चासनी सिद्ध हुई समझे। अवलेह में यदि चीनी या मिश्री डालनी हो तो चूर्ण से चौगुनी डाले, गुड़ डालना हो तो चूर्ण से दूना लेवे। दूध, मूत्र या पानी अथवा औषधियों का काढ़ा या अर्क आदि द्रवपदार्थ

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

डालना हो तो चूर्ण से चौगुना डाले। अवलेह में कभी कभी चासनी सिद्ध होने पर औषधि डालते हैं और कभी कभी सब का साथ ही पाक करते हैं। जब पाक पानी में डालने से डूब जावे तब समझे कि सिद्ध हो गया। सिद्ध हुआ अवलेह अंगुलियां दबाने से कड़ा और चिकना मालूम पड़ता है। उसमें एक प्रकार की गन्ध, रंगत और स्वाद आ जाता है। अवलेह के ऊपर दूध अथवा ऊख का रस अथवा पंचमूल, दशमूल, अडूसा या किसी औषधि का काढ़ा, यूष आदि यथायोग्य औषधि का अनुपान लिया जाता है। अनुपान वैद्य की सलाह से रोगी की रोग-व्यवस्था के अनुसार निश्चित करना चाहिये।

पाक

किसी औषधि के चूर्ण या टुकड़ों को दूध में पकाकर चासनी के साथ जो गाढ़ी खाद्य-सामग्री तैयार की जाती है उसे पाक कहते हैं। पाक अवलेह से गाढ़ा, पेड़े या बरफी के समान होता है। पाक मधुर और स्वादिष्ट होता है, इस लिये रोगी इसे प्रसन्नता पूर्वक लेते हैं। इससे रोग दूर होता है और शारीरिक शक्ति की वृद्धि होती है।

पाक बनाने के लिये जिस प्रधान द्रव्य का पाक बनाना हो उसका चूर्ण अलग करले, काष्ठौषधि का चूर्ण अलग करे और सुगन्धित द्रव्य कूट-कपड़छान कर अलग रखे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पाक का स्वाद बढ़ाने के लिये उसमें गरी, चिरौंजी, छुहारे, पिस्ता, किसमिस, बादाम, अखरोट आदि जो डालना हो, उनके बारीक टुकड़े कर अलग रखले। यदि चूर्ण का पाक करना हो तो चौगुने दूध में उसे औटाकर खोया करले। यदि बादाम, एरण्ड आदि हो तो उनके छिलके निकाल सिल पर पीस दूध में औटा कर खोवा करले। इस खोवे को घी में खूब भूंजे। चूर्ण से चौगुनी चीनी या मिश्री लेवे। चीनी या मिश्री का पौन भाग पानी डाल चासनी बनावे। चासनी कलईदार वर्तन या कढ़ाई में तैयार करे। चासनी का मैल निकालने के लिये एक छटांक दूध और एक छटांक पानी मिला कर उसमें छींटे देते जावे और सछिद्र करछुली (झरनी) से मैल निकालता जावे। चासनी की एक बूंद जमीन पर या पानी में डाले, यदि वह न फैले तो समझे कि चासनी सिद्ध हो गयी। चासनी के लिये चीनी या मिश्री चूर्ण से दूनी, तिगुनी या चौगुनी लेवे। इसके वाद उस चासनी में औषधि का खोवा और औषधिचूर्ण मिलावे। फिर सुगन्धित द्रव्य और मेवे की चीजें मिलावे। पाक में केसर डालना हो तो थोड़े घी में घोट कर सब के बाद मिलावे। अफीम डालना हो तो दूध में पका कर मिलावे। भांग डालना हो तो पहिले उसे खूब साफ धोकर और घी में तलकर डाले। पाक में जो भस्म आदि डालनी हो वह भी अन्त में मिला कर सब को घोट दे। फिर किसी कलईदार वर्तन या कांसे की थाली पर घी चुपड़ कर उसी में पाक उंडेल दे। चांदी, सोने के वर्क लगाना हो तो पाक ठण्डा होने पर लगावे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

फिर पाक की बरफी सी कतरी या लड्डू बना कर साफ वर्तन में रख दे। पाक वर्षा ऋतु में अधिक न बनावे और कभी कभी उसे धूप या गरम जगह पर रखता रहे तो उस में कीड़े नहीं लगते। जाड़े के दिनों में पाक का सेवन करना अधिक हितकारी होता है। पाक खाने पर पका हुआ दूध पीना चाहिये और पान खाना चाहिये। भोजन में मधुर रस की विशेषता रखे। पाक की मात्रा एक तोले से ४ तोले तक है। पाक बनाने में चूर्ण द्रव्य का पाक नहीं करना चाहिये। चीनी अथवा गुड़ का पाक कर जब कड़ाही उतार ले तब उसमें धीरे धीरे चूर्ण छोड़ कर मिला दे। चूर्ण कम हो तो पाक ठण्डा होने के पहले डाले, अधिक हो तो उतारते ही मिलादे। औषधि के चूर्ण में चूर्ण के बराबर गुड़ और मोदक में औषधि से दूना गुड़ मिलावे।

मोदक

मोदक या लड्डू पाक का ही एक भेद है। जिस वस्तु के मोदक या लड्डू बनाने हों उन्हें घी में भून कर रखे। फिर जो औषधि डालनी हो वह कूट-कपड़छान कर रखे। द्रव्य से दूना गुड़ लेवे और चासनी करे। यदि चीनी लेनी हो तो चौगुनी चीनी की चासनी करे। इसकी चासनी कड़ी बनायी जाती है, ताकि लड्डू बन सकें। चासनी होने पर चासनी में मोदक-द्रव्य मिलावे, फिर धीरे धीरे औषधि मिला कर एक

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

एक या दो दो तोले के लड्डू बनाले। कभी कभी जिस द्रव्य का मोदक बनाना हो उसे पीस चौगुने दूध में डाल औटाकर खोवा कर फिर घी में भून पूर्वोक्त विधि से लड्डू बनाते हैं। इसका अनुपान पाक के समान होता है। मोदक छः महीने तक वीर्यवान रह सकते हैं।

मुरब्बा

किसी फल को चासनी से युक्त कर अधिक दिनों तक सेवन करने योग्य टिकाऊ बनाने को मुरब्बा कहते हैं। आंवला, सेव, नासपाती, अमरूद, आम, बिजौरा नींबू आदि के मुरब्बे बनाये जाते हैं। आम तथा नासपाती ऐसे जिन फलों का छिलका कड़ा होता है, उनका पहले छिलका छील डाले। सब फलों को बांस की कमची से छेद करे ताकि उनके भीतर चासनी पैठ सके। इसके बाद उन्हें दबा कर रख दे ताकि उनका जो रस निकलना हो निकल जावे। आंवलों को पहले फिटकरी के पानी में डाल थोड़ी देर भाफ दे जिससे उनका कषाय भाग निकल जावे। अन्य फलों को यों ही थोड़ा पानी डाल कुछ गर्मी पहुँचावे। फिर फलों से चौगुनी चीनी लेकर चासनी करे और चासनी सिद्ध होने पर आवे तब उसी में फलों को डाल पकने दे। फिर उतार कर किसी बरनी या मिट्टी या पत्थर या कांच के बर्तन में रख दे। आवश्यकतानुसार इनमें केसर, इलायची, जावित्री आदि भी छोड़ दे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुलकन्द

किसी वृक्ष के फूलों की पखड़ियों को चीनी या मिश्री के साथ मिला कर सूर्य की किरणों के द्वारा पका कर सिद्ध करने को गुलकन्द कहते हैं। अधिकतर गुलाब का गुलकन्द बनाया जाता है। अच्छे चैती गुलाब के फूल लेकर उनकी पखड़ियां अलग करले। फूलों की दूनी पिसी मिश्री लेकर किसी बरनी में पहले थोड़ी मिश्री भुरकावे और फिर गुलाब की पखड़ियां फैलावे। उनके ऊपर फिर मिश्री भुरकावे और फिर पखड़ियां फैलावे। इसी तरह दोनों की तह जमाता जाय। बरनी का मुंह बन्द कर उसे आठ दिन तक सूर्य की धूप में रहने दे। कोई कोई दिन में सूर्य की किरणों से और रात में चन्द्र किरणों से पकाना अच्छा समझते हैं। आठ दिनों के बाद यह सेवन करने के योग्य होता है। उष्णप्रकृति और पित्तविकार वालों के लिये यह बहुत लाभदायक होता है। आवश्यकतानुसार इसमें इलायची आदि औषधियों का भी योग कर सकते हैं।

शर्बत

किसी पदार्थ के अर्क, रस, काढ़े या हिम को चीनी या मिश्री के संयोग से पका कर जो पीने योग्य तरल पदार्थ बनाया जाता है उसे शर्बत कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जिस चीज़ का शर्बत बनाना हो उसका यातो स्वरस निकाल ले या अर्क निकाल ले, अथवा काढ़ा तथा हिमविधि से उसका सार-द्रव तैयार करले। इस द्रव-पदार्थ से दूनी, तिगुनी या चौगुनी चीनी या मिश्री लेकर चासनी बनाले। चासनी में एक तार आने लगे तब उसे उतार छान कर बोतलों में रखदे। इसे योंही चाटे या पानी अथवा दूध में मिलाकर पीवे। शर्बत की खुराक एक तोले से चार तोले तक है।

अर्क

कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें कटु-तिक्तादि औषधि पसन्द नहीं; अथवा औषधि के वास से भी उन्हें घृणा होती है। उनके लिये औषधियों का अर्क तैयार कर देना अच्छा होता है। किसी औषधि के सार भाग को नलिका-यन्त्र द्वारा तरल भाग में निकालने को अर्क निकालना कहते हैं। जिन औषधियों का अर्क निकालना हो उन्हें अच्छी तरह कूट कर किसी मिट्टी के घड़े या कलईदार डेग में चौगुने या अठगुने पानी में भिगोदे। कमसे कम चौबीस घण्टे या तीन चार दिनों तक उसे भीगता रहने दे। फिर उसे बकयन्त्र अर्थात् डेगभपके में चढ़ाकर अर्क उतार ले। जिस वर्तन में अर्क उतरे उसके नीचे पानी रखा जाय ताकि अर्क की उष्णता का शमन हो जाय। डेग के ऊपरी पात्र भपके से बराबर गरम पानी निकालता रहे और ठण्डा पानी भरता रहे जिस से

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नीचे के वर्तन से निकली हुई भाफ ऊपरी वर्तन में आकर जल का रूप ग्रहण करती रहे। अर्क की खुराक दो तोले से ६ तोले तक है।

घृतसाधन

घी में कुछ औषधि और कुछ द्रव पदार्थ डालकर अग्नि संयोग से उसमें जो औषधियों का गुणाधान किया जाता है उसे घृतसाधन कहते हैं।

घृत स्वभावतः बुद्धिवर्द्धक, स्मरणशक्ति को उत्तेजित करने वाला, धारणाशक्ति दृढ़ करने वाला, जठराग्नि, शारीरिक शक्ति, आयुष्य, वीर्य और नेत्रों की दृष्टि-शक्ति बढ़ाने वाला है। बालकों और बूढ़ों के लिये हितकारी, शारीरिक कान्ति और सुकुमारता सम्पादित करनेवाला, कण्ठस्वर मधुर बनाने वाला तथा उरःक्षत, क्षय, विसर्प, शस्त्राघात तथा अग्निदाह से क्लान्त शरीरवालों को हितकारी है। घृत वात-पित्त शामक, विषविकारनाशक और उन्माद, शोष, शारीरिक ताप एवं आलस्य नष्ट करनेवाला है। घी सब स्नेहों में श्रेष्ठ, शीतल और यौवन-रक्षक है। घी में विशेषता यह है कि यह अपनी गुणशक्ति कायम रखता हुआ अन्य औषधियों के योग और संयोग-संस्कार से अनेक प्रकार की शक्ति उत्पन्न करता है और सहस्रवीर्य होकर अनेक रोगों में उपकारी होता है। पुराना घी उन्माद, अपस्मार, मूर्च्छा, शिरोरोग, कर्णरोग, नेत्र-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रोग, योनिरोग में हितकारी है, घाव शुद्ध कर भरता है। इस लिये औषधियोग से घृतसाधन कर अनेक रोगों में अनुकूल फल प्राप्त किया जाता है।

जिन औषधियों के कल्क से घृत सिद्ध करना हो, उन औषधियों के योग का चौगुना घी लेवे और घी से चौगुना द्रवपदार्थ दूध या औषधियों का काढ़ा या औषधियों का स्वरस आदि डाले। यदि जल में पकाना हो तो घी का अठगुना डाले। जिन औषधियों का क्वाथ घृत में डालना हो, तो गुडूची, खस आदि नरम औषधियों को चौगुना पानी डाल पकावे। जब चौथाई जल शेष रहे तब उतार छान कर उसे घी में डाल दे। यदि औषधियां मध्यम दशमूल जैसी कठिन काष्ठ की हों तो अठगुना पानी डाल अष्टमांश शेष रहने पर काढ़ा घृत में डाले। यदि औषधियां बहुत कठिन खैरसार, पदमाख आदि के समान हों तो सोलहगुना पानी डालकर षोडशांश जल रहने पर काढ़े में डाले। एक तोले से लेकर चार तोले तक की दवाइयों का काढ़ा करना हो तो सोलहगुना पानी डाले। यदि चार तोले से पाव भर तक की दवाइयों का काढ़ा करना हो तो अठगुना पानी डाले। यदि एक सेर से एक खारी तक की दवाइयों का काढ़ा करना हो तो चौगुना पानी डाल काढ़ा करे। यदि केवल जल में घृत सिद्ध करना हो तो घृत का चतुर्थांश कल्क डाले। यदि काढ़े में सिद्ध करना हो तो घृत का षष्ठांश कल्क डाले। यदि मांस-रस में स्नेह सिद्ध करना हो तो स्नेह का अष्टमांश कल्क डाले। दूध, मट्ठा, दही अथवा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

धतूरे के रस आदि में घृत सिद्ध करना हो तो उसमें घृत का अष्टमांश कल्क डाले। कल्क की औषधियां अच्छी तरह घी के साथ पक जावें इसलिये कल्क के साथ समान भाग से लेकर चौगुना तक जल डाले। यदि घृत सिद्ध करने में पांच से अधिक द्रव पदार्थ डालने पड़ें तो सब को स्नेह के समान तौल में डाले। यदि पांच से कम हों तो प्रत्येक को चौगुना लेवे। जहां केवल एक द्रव्य से घृतपाक करना हो वहां उस द्रव्य का कल्क कर चौगुना पानी डाल पका लेवे। यदि काढ़े में स्नेह-पाक करना हो तो कल्क-द्रव्य को पीस चौगुना पानी डाले। जिसमें कल्क डालना नहीं लिखा वहां गोमूत्रादि द्रवपदार्थ डाल कर घी पकावे। जब द्रवपदार्थ जल जावें और स्नेह मात्र शेष रहे तब उतार छान कर बोतल में भर कर रख दे। जिस स्नेह में फूलों का कल्क डालना लिखा है उसमें स्नेह का चौगुना जल डाले और फूलों का कल्क स्नेह का अष्टमांश डाले।

स्नेह सिद्ध होने की पहचान यह है कि स्नेह में बत्ती डुबा कर जलावे। यदि बत्ती बिना फड़फड़ाये जले तो समझ ले कि पाक हो गया। अथवा स्नेह की कल्क-औषधि करछुली से निकाल हाथ की अंगुलियों से मले, यदि उसकी बत्ती सी बने तो समझे कि स्नेह सिद्ध हो गया। कल्क की पकी औषधि आग पर डालने से यदि चटचटाहट न हो तो समझे कि स्नेह सिद्ध हो गया। यदि झाग आकर शान्त हो गयी हो तो समझे कि घृत सिद्ध हो गया। कल्कौषधि ने यदि स्नेह छोड़

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दिया हो, उसमें सुगन्धि आने लगी हो, उसमें ललाई आ गयी हो तो स्नेह सिद्ध हुआ जाने।

स्नेह-पाक तीन प्रकार का होता है; नम्र, मध्यम और कठिन। जिस स्नेह-पाक में कल्क की कुछ कुछ आर्द्रता बनी रहती है, अर्थात् कल्क पूरी तरह नहीं जलता, उसे नम्रपाक कहते हैं। जिस स्नेह-पाक में कल्क का सम्पूर्ण जलांश जल जाता है उसे मध्यम पाक कहते हैं। जिस स्नेह-पाक में कल्क जल कर दाहिल महँक देता हो और कुछ स्नेह का अंश भी जल गया हो, वह कठिन-पाक है। कठिन-पाक का स्नेह दाहकारक और बेकाम होता है। कच्चे पाक में शक्ति कम रहती है, उसे पीने से अग्निमन्द होती है और पचने में भारी मालूम होता है। मध्यम-स्नेह-पाक सब काम के लिये उत्तम माना जाता है। स्नेहपाक एक दिन में ही न करे। एक दिन कल्क की औषधि भीगती रहे। फिर क्रमशः कल्क, क्वाथ, द्रवपदार्थ मन्दाग्नि से पचावे।

घृतमूर्छा

औषधि-संयोग से घृत का आमदोष (कच्चापन) नष्ट कर, उसकी उग्रता मिटाकर औषधिगुणों का संस्कार जिसमें अच्छी तरह हो उसके लिये घृतपाक करने के पहले जो क्रिया की जाती है उसे घृतमूर्छा विधि या मूर्छन संस्कार कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इस क्रिया से घी की शक्ति खिल जाती है। हर्रा, बहेड़ा, आंवला, नागरमोथा, हल्दी और बिजौरा नींबू का रस, घृत-मूर्छन की औषधियां हैं। चार सेर घी का मूर्छन संस्कार करना हो तो ये छहों चीजें चार-चार तोले लेवे। सब को अलग अलग कूट-पीस कर रखे। एक अच्छी कड़ाही में घी चढ़ा देवे। जब घी पिघल कर कड़कना बन्द हो तब उसमें पहले पिसी हुई हल्दी दो सेर पानी के साथ डाल दे। धीमी आंच से घी पकने दे। जब अन्दाज एक-चौथाई पानी बाकी रहे तब बिजौरा नींबू का रस और दो सेर पानी डाल दे। जब इसका भी कुछ जल शेष रहे तब शेष चारों औषधियां पीस कर डाल दे और १२ सेर पानी और डाल दे। जब फेन का आना बन्द हो और पानी का अंश जल जाय तब कड़ाह उतार कर छान ले। इसके बाद ऊपर की विधि से रोगोक्त औषधियों के साथ घृतपाक करे तो वह अधिक लाभदायक होता है।

तैलसाधन

कुछ औषधियों और द्रवपदार्थों के संयोग से अग्निपाक द्वारा तेल में रोगनाशक शक्ति की विशेषता लाने की क्रिया को तैलसाधन कहते हैं।

तेल स्वभावतः तीक्ष्ण, शरीर भर में शीघ्र फैलनेवाला, शरीर की सूक्ष्मनाड़ियों और शिराओं में प्रवेश करने वाला, कृशमनुष्यों को पुष्ट करनेवाला और स्थूल मनुष्यों को दुबला

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

करने वाला ❀ तथा औषधिसंयोग से उन औषधियों का गुण ग्रहण कर रोगनाशन में उपयोगी होता है।

तैलमूर्छन

तैल को गन्ध, आमदोष और रंग दूर कर औषधि गुण-ग्रहण करने की शक्ति बढ़ाने के लिये तेल में जो प्रथम संस्कार किया जाता है उसे तैलमूर्छन संस्कार कहते हैं।

तेलों में मुख्य तेल तिल का है और अधिकांश औषधियां इसी से बनती हैं। इसलिये पहले इसी के संस्कार की विधि लिखते हैं। मजीठ, हलदी, पठानीलोध, नागरमोथा, कमल-पुष्प, आंवला, हर्रा, बहेड़ा, खस, बरगद की जटा और सुगन्धबाला तैलमूर्छन की औषधियां हैं। ४ सेर तेल में एक

❀ दुबले मनुष्य को मोटा और मोटे को दुबला करना परस्पर विरोधी कार्य होने से एक ही वस्तु से कैसे हो सकते हैं, यह प्रश्न हो सकता है। बात यह है कि दुबले मनुष्यों के स्रोतस सूख जाते हैं और उनमें अन्नरस तथा पोषक धातु नहीं पहुँच सकते। तेल तीक्ष्ण होने के कारण स्रोतसों के मुख खोल देता है और उस मनुष्य का पोषण होने लग जाता है, जिस से वह पुष्ट हो जाता है। इसी तरह स्थूल मनुष्य में मेद बढ़ जाने से स्रोतस सँटे रहते हैं, तेल सूक्ष्म होने से स्रोतसों में प्रवेश कर मेद को फाड़ देता है जिससे मनुष्य दुबला होने लगता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पाव मजीठ लेवे तथा अन्य द्रव्य एक एक छटांक लेकर अलग अलग कूट डाले। पहले तेल कड़ाह में चढ़ा दे, जब वह गरम हो झाग देना बन्द करे तब उसमें हल्दी दो सेर पानी में पीस कर डाल दे। जब उसका पाक होने को आवे तब मजीठ दो सेर पानी में पीस कर डाल दे। इसके बाद अन्य पदार्थ पीस कर बारह सेर पानी के साथ घोल कर डाल दे। जब तैल-पाक सिद्ध हो तब उतार कर ठण्डा होने पर छान ले और फिर औषधि बनाने के लिये कड़ाह में चढ़ाकर तैल-पाक साधन करे।

ऊपर तिल-तैल-मूर्छन की साधारण क्रिया बतलायी गई है। यदि सुगन्धित तैल तैयार करने के लिये तिल तैल का मूर्छन करना हो तो आम, जामुन, कैथा, बिजौरा नींबू और बेल, इन पांच पेड़ों की कोमल पत्तियां एक एक सेर लेवे और इन्हें अलग अलग कुचल कर उनमें दो-दो सेर पानी डाल रस निचोड़ ले। ४ सेर तैल कड़ाही में चढ़ाकर गरम करे जब झाग निकलने लगे तब क्रमशः रस डालता रहे। फिर एक सेर दही चार सेर पानी में घोल डाले और फिर एक पाव पीपल की लाख थोड़ी बेर की पत्ती और सज्जी डाल चार सेर पानी में पकावे। जब एक सेर पानी रहे, उतार छान कर उसी तेल में डाल सिद्ध करे। इससे तेल में उत्तम रंग और सुगन्धि आती है।

यदि तेल अधिक मनभावन और सुगन्धित तैयार करना हो तो ऊपर लिखी विधि से मूर्छन संस्कार करने के बाद निम्न लिखित सुगन्धित द्रव्यों से उसे ऐसा तैयार करलें ताकि उस में अन्य जिन सुगन्धित पदार्थों का संयोग किया जाय उन्हें

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अच्छी तरह अपने में मिला सके। बड़ी इलायची, लाल चन्दन, केसर, अगर, कपूरकचरी, बालछड़, कचूर, सफेद चन्दन, गठिवन, कपूर, शिलारस, लोबान, खस, कस्तूरी, नख, सुगन्धकोकिला, गजपीपर, प्रियंगु, मेथी, लौंग, देवदारु, धूप, तगर, दालचीनी, तेजपात, नागरमोथा, पानड़ी, सौंफ, सुगन्धित चम्पा, असवर्ग, शीतलचीनी, वच, छोटी इलायची, जायफल और लताकस्तूरी; इन सब चीजों का संमिश्रण तेल का अष्टमांश होना चाहिये। इन चीजों का कल्क कर चौगुना पानी डाल विधिवत पकाले। फिर ग्रन्थोक्त औषधियों से तैल सिद्ध करे।

तैलपाक

ऊपर घृत-पाक की जो विधि बतलायी गयी है उसी तरह तैल-पाक भी करना चाहिये। तेल पकते पकते जब उसमें झाग आने लगे और सुगन्धि उठने लगे तब उसे सिद्ध हुआ समझे। स्नेहपाक में जहां कोई द्रवपदार्थ न कहा गया हो वहां स्नेह से चौगुना दूध ले उसे सिद्ध करे। यदि और भी द्रवपदार्थ हों तो दूध स्नेह के बराबर ले। क्वाथ-द्रव्य अठगुने जल में पका कर चौथाई शेष रहने पर उतार छान स्नेह-पाक के काम में लावे। क्वाथ से चौथाई स्नेह और स्नेह से चौथाई कल्क रखे। जहां स्नेह-पाक में जल का वज़न न लिखा हो वहां स्नेह से चौगुना जल समझे। जहां स्नेह का परिमाण न लिखा हो वहां आध सेर स्नेह और ८ तोला

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कल्क लेवे। वजन से कम या अधिक स्नेह लेने से वह हीन-वीर्य होता है। जहां द्रव्य का अंग न कहा हो वहां उसकी जड़ ले। जहां द्रव्य का भाग न कहा हो वहां समान भाग ले। घृत या तैल की मात्रा चार तोले तक कही गयी है। किन्तु वैद्य रोग की शक्ति के अनुसार मात्रा निश्चित करे। क्वाथ बनाने के लिये बड़ा वर्तन लेना चाहिये, ताकि आवश्यक जल एकसाथ ही डाल दिया जाय। छोटे वर्तन में अनेकबार थोड़ा थोड़ा जल डाल कर क्वाथ करने से औषधि का सार ठीक तरह नहीं निकलता और औषधि हीनवीर्य तैयार होती है। स्नेहसाधन के पाठ में लिखी कोई औषधि अनुपयुक्त हो तो वैद्य उसे निकाल दे और अन्य आवश्यक वस्तु बढ़ा दे। दूध का पाक दो रात में, स्वरस का पाक तीन रात में, तक्र का पाक और कांजी का पाक पांच रात में करे। मूल और लतादि का पाक १२ दिन में तथा मांसादि का पाक एक दिन में करे। इसके विरुद्ध जल्दी स्नेह-पाक करने से औषधि गुणकारी नहीं बनती। स्नेह के मृदुपाक, मध्यपाक और खरपाक ये तीन भेद कहे गये हैं। खरपाक घृत काम में नहीं लाया जाता; परन्तु खरपाक तैल शरीर में मालिश करने के काम आता है। मृदुपाक का स्नेह नस्य लेने में तथा मध्य-पाक का स्नेह सब क्रियाओं में व्यवहार किया जाता है। वस्तिप्रयोग (पिचकारी) में भी मध्यपाक ही लेना चाहिये।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सत्वनिष्कासन

किसी पदार्थ के सार भाग को अलग कर लेने की क्रिया का नाम सत्वनिष्कासन या सत्व निकालना है। जिस वनस्पति का सत्व निकालना हो उसे साफ कर बारीक कुचल डाले। फिर उसे पानी में मथकर खुदरा भाग अलग करले और शेष द्रवभाग को छान कर किसी बड़े वर्तन में डाले। कुछ देर रखा रहने के बाद कुछ सफेद सत्व नीचे जम जायगा और जल भाग ऊपर रह जायगा। जल-भाग थिराकर निकालदे। सब जल एक बार में ही न निकाले। जब वर्तन में से सत्व भाग निकलने लगे तब वर्तन को फिर स्थिर रख जल भाग थिराने दे। ऐसा कई बार करने से जल अलग हो जावेगा और सत्व नीचे जम जावेगा। सत्व को अधिक साफ करने और उसकी कड़ुवाहट आदि हटाने के लिये उसमें पानी भर दे और उसे भी थिराकर निकाल दे। दो-तीन बार ऐसा करने से स्वच्छ सत्व अलग हो जायगा। उसे धूप में रख सुखाले। सत्व से जल का भाग शीघ्र निकलने के लिये वर्तन में कई जगह कपड़े की बत्ती लगा दे तो जल उनके द्वारा नीचे टपक जाता है। गुर्च का सत्व, गेहूँ का सत्व आदि इसी तरह निकाला जाता है। कभी कभी जल शीघ्र नहीं निकलता, तब कुछ जल शेष रहने पर सत्वधन को कड़ाही पर चढ़ा हलकी आंच से जल-भाग जला देते हैं। इस प्रकार निकले हुए सत्व को धन कहते हैं। कुरैया की छाल का धन इसी तरह बनाया जाता है। सत्व की मात्रा दो रत्ती से एक माशे तक होती है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

क्षार निकालना

किसी किसी वनस्पति में लवण का भाग अधिक रहता है। उस वनस्पति के काष्ठांश को अलग कर क्षार भाग अलग निकाल लेने की विधि को क्षार निकालना कहते हैं। अपामार्ग, पीपल, जव, पलाश, केला, भटकटैया, तिल, मन्दार, मूली आदि में क्षार अधिक रहता है। जिस वनौषधि या द्रव्य का क्षार निकालना हो उसे काट कर सुखाले। फिर उसे जला देवे। जहां तक हो सके जला कर बिलकुल राख करदे। उस राख को १६ गुने पानी में एक मिट्टी के मटके में डाल कर खूब मिलादे और रात भर उसे उसी तरह भीगता रहने दे। सबेरे मटके का साफ पानी एक कलईदार वर्तन में या साफ कड़ाह में छानले। छानने में राख का हिस्सा न आने पावे नहीं तो क्षार मैला निकलेगा। थिराते समय जब पानी कम रह जाय तब एक मोटे वर्तन के चारों कोने ऊंचे ढीले बांध दे और उसमें मटके का पानी छोड़ दे और बीच में एक वर्तन रख दे। इस से धीरे धीरे पानी थिराकर नीचे के बर्तन में टपक जायगा। उसे भी उसी कड़ाह में डाल, कड़ाह को आग की आंच में चढ़ा दे। धीरे धीरे उस जल भाग को जलादे। नीचे सफेद क्षार वर्तन में लगा मिलेगा। जब थोड़ा जल का भाग रह जाय तब कड़ाह आंच में से उतार ले और उसे धूप में सुखा ले या किसी कटोरे में रख खौलते हुए पानी में इस तरह रखे कि पानी में डूबने न पावे। उस खौलते पानी की आंच से कटोरे का

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जलांश सूख जावेगा। यदि कड़ाही में ही क्षार सूखा बनाया गया तो वह कुछ कमज़ोर होता है। क्षार की मात्रा एक रत्ती से ४ रत्ती तक की होती है। गुल्मादि रोग में जो क्षार-जल दिया जाता है उसे छः गुना जल में २१ बार या चौगुने जल में २१ बार चुआ ले और दिया करे।

आसव और अरिष्ट

औषधियों के द्रव भाग को सन्धान विधि से आसुत कर (उठाकर) जो स्थायी प्रवाही पदार्थ (द्रव पेयपदार्थ) तैयार किया जाता है, उसे आसव और अरिष्ट कहते हैं। जिस विधि में मुख्य औषधि का स्वरस लेकर अथवा पानी के साथ उस वनौषधि को कुचल कर बिना पकाये ही मधु, गुड़ या मिश्री तथा अन्य औषधियों के साथ उसे आसुत करते हैं उसे आसव कहते हैं और जिस विधि के द्वारा मुख्य औषधि का क्वाथ कर मधु-गुड़ या मिश्री तथा अन्य औषधियों के साथ उसे मद्यनिर्माण विधि से उठाया जाता है उसे अरिष्ट कहते हैं। गीली औषधियों का स्वरस भी लिया जा सकता है।

क्वाथ नित्य तैयार करना पड़ता है और अर्क उतना ज़ोरदार नहीं होता, इसलिये आसव-अरिष्ट की क्रिया अधिक सुविधाजनक और लाभदायक है। विशेषता यह है कि आसव अरिष्ट जितने ही पुराने हों उतने ही अधिक लाभदायक होते हैं। मद्य की और इनकी प्रारम्भिक निर्माण विधि समान

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ही होती है। इसलिये शास्त्रीय दृष्टि से इन्हें मद्यवर्ग में ही गिना गया है; किन्तु मद्य में डेगभपके से उस आसुत पदार्थ का अर्क निकाल लिया जाता है तभी उसकी मद्य संज्ञा होती है। किन्तु आसव अरिष्ट अपने पूर्वरूप में ही रहते हैं। इसलिये इनकी मर्यादा रायता, कांजी और सिरके के समान समझनी चाहिये। यद्यपि आसव अरिष्ट में भी स्रोतसों और स्नायु तथा नाडियों को उत्तेजित करने की शक्ति है किन्तु मद्य के समान इनमें नशा नहीं होता। इसलिये भी ये शुद्ध और ग्राह्य पेय हैं। आसव अरिष्ट में सम्मिलित औषधियों का सत्वांश निकल आता है। इसलिये औषधि प्रयोग में ये असरकारक होते हैं।

आसव अरिष्ट में जो औषधियां मिलानी हों उन्हें मिला कर एक मटके में सब रखे। मटके के मुंह में परई रख मुद्रा करदे ताकि मुंह बन्द रहे। पन्द्रह दिन अथवा एक महीने तक इसे रखा रहने दे तो यह औषधि तैयार हो जायगी। कभी कभी कच्ची चीजें होने के कारण आसुत होने पर वर्तन फट जाने का डर रहता है, अथवा बिगड़ कर दवा खट्टी पड़ जाती है। खट्टी दवा बेकाम समझनी चाहिये। इसलिये आसव बनाने के लिये हमेशा मज़बूत वर्तन लेना चाहिये। चीनी मिट्टी के हौज़ या मटके इसके लिये अच्छे होंगे। जिन वर्तनों में विदेश से एसिड भर कर आता है वे भी इसके लिये अच्छे होंगे। लकड़ी के जिन पीपों में शराब या अलकतरा भर कर आता है वे अधिक परिमाण में आसव अरिष्ट बनाने वालों के लिये उपयोगी होते हैं। ऐसे वर्तनों को धोने के लिये

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उपयोगी सोडा से साफ़ कर लेना आवश्यक है। अच्छा हो कि इसके बाद चूने के पानी से धोवे और फिर उसमें एक दिन रात पानी भर कर रखे। इसके बाद उसे गरम पानी से धोकर सुखा ले। तब ऐसे वर्तन आसव अरिष्ट बनाने के काम में लावे। जिस पात्र में बीस सेर पानी समा सकेगा उसमें १५ सेर तक आसवारिष्ट तैयार हो सकेगा। क्योंकि पात्र अधिक भर दिया जायगा तो जब सन्धान आसुत होंगे, खमीर उठने के लिये उसमें जगह नहीं रहेगी। इसलिये पात्र का चौथाई हिस्सा सदा खाली रखना चाहिये।

अरिष्ट का क्वाथ करने के लिये स्मरण रहे कि नरम द्रव्य हो तो द्रव्य का चौगुना जल डाल क्वाथ करे और चतुर्थांश शेष रहने पर उतार कर छान ले। किन्तु यदि दशमूल या रोहितक जैसी कड़ी चीज़ें हों तो अठगुना पानी डाल चतुर्थांश क्वाथ लेवे। इस प्रकार का क्वाथ यदि १० सेर हो तो उसमें २॥ से ३ सेर तक गुड़, चीनी या मधु जैसे मधुर द्रव्य डाले। प्राचीन विधि के अनुसार बनाने में जहां द्रव-पदार्थ का तौल न लिखा हो वहां द्रवपदार्थ एक द्रोण (१६ सेर), गुड़ ४०० तोले, शहद २०० तोले डाले। उसमें औषधियों का चूर्ण गुड़ का दशमांश डालकर सिद्ध करना चाहिये। किन्तु इतना अधिक मधुर पदार्थ से खमीर अच्छा नहीं उठता। दवा ज़ोरदार नहीं होती इसलिये द्रव का चतुर्थांश मधुर द्रव्य डालना अच्छा है।

अरिष्ट बनाने के लिये पहले क्वाथ तैयार करे। फिर उसमें मधुर पदार्थ डाल खूब हिलावे। जिस वर्तन में यह मिश्रण हो

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उसे सूखी जगह निर्वातस्थान में मुंह को कपड़े से ढँक रख देवे। इसका मुंह पुरानी रीति के अनुसार पहले ही बन्द न करे किन्तु ज़रा खुला रखे। जब उसमें खमीर आवे और उफान उठना बन्द हो जाय तब उसमें औषधियों का चूर्ण छोड़ दे और मुंह अच्छी तरह बन्द करदे; ताकि बाहरी हवा भीतर न जा सके और भीतरी उठान बाहर न निकल सके। इसे एक से दो महीने तक रखा रहने दे, फिर छान कर बोतलों में भर दे। इस विधि से तैयार हुआ आसव-अरिष्ट खट्टा नहीं पड़ता। ज़ोरदार, साफ और मूल द्रव्य के गुणवाला बनता है। यदि चूर्ण आदि डालने की चीज़ पहले ही मिलादें तो तैलयुक्त सुगन्धित द्रव्य होने के कारण यदि वर्तन का मुंह खुला रखें तो सुगन्धित अंश उड़ जावेगा और आसव गुणहीन हो जावेगा। डालने का चूर्ण बहुत बारीक न रहे, नहीं तो आसव छानने में असुविधा होगी। इस चूर्ण के साथ धौके फूल भी डालने की चाल है। इससे मद्यार्क अच्छा बनता है। मुलेठी में भी ऐसी ही शक्ति है। आसव में पानी कुछ गरम लेने से भी खमीर जल्दी और अच्छा उठता है। यदि गर्मी के दिन हों, जहां दवा रहे वहां हवा न पहुँचती हो, वहां सर्दी न हो तो आसव अरिष्ट में तीसरे दिन से खमीर उठना आरम्भ होगा और १५ दिन में बैठ जाता है। यदि आरम्भ में ही वर्तन का मुंह बन्द करदें तो वह खमीररूपी गैस आसव के भीतर ही समाकर रह जायगी और आसव अरिष्ट को खट्टा बना देगी, हिलाते समय फेन ऊपर उठ कर गिरेगा और वर्तन को भी तोड़ देगा। इसलिये खमीर शान्त होने पर मिलाने वाली दवाइयां डालना अच्छा है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

खमीर के बाद उसमें मद्यार्क (अलकोहल) बनना आरम्भ होता है। इसीलिये खमीर के बाद महीने दो महीने आसव अरिष्ट रखे रहना अच्छा है। उसी समय सब दवाइयों का गुण-रसायनरूप ग्रहण करता है। किसी पदार्थ में मद्यार्क जल्दी उठता है और किसी में विलम्ब से। मद्यार्क बनने के समय वर्तन का मुंह खुला रहे तो बाहरी वायु का उसमें प्रवेश होगा और मद्यार्क बनना बन्द हो जायगा।

आसव अरिष्ट के वर्तन का मुंह कपड़े से ढका रहे; किन्तु ढक्कन ज़रा खुला रहे। खमीर उठने की पहचान यह है कि वर्तन में कान लगा कर सुने तो पहले दिन उसे कोई आवाज़ उठती हुई नहीं मालूम पड़ेगी, दूसरे दिन कुछ आवाज़ सुनाई पड़ेगी और मुंह खोल कर देखें तो ऊपरी भाग में कुछ फेन उठता सा दिखेगा। इसके बाद उसमें से बुद बुद या सूं सूं आवाज़ स्पष्ट सुनाई पड़ेगी और वर्तन फेन से भरा मालूम पड़ेगा। इसी क्रिया को खमीर उठना कहते हैं। जब खमीर न उठता होगा तब ऐसी आवाज़ नहीं मालूम पड़ेगी और न फेन का उठान ही होगा। जब खमीर उठता होगा तब वर्तन के मुंह के पास जलती हुई बत्ती बुझ जायगी। जब खमीर नहीं होगा तब बत्ती जलती रहेगी। खमीर उठना बन्द होने पर दवा छान और फिर वर्तन में भर उसमें चूर्णादि मिलादे।

पुरानी प्रथा के अनुसार आसव अरिष्ट को जमीन के भीतर गाड़ते हैं या अन्नराशि में दवा कर रखते हैं; या धान की भूसी या भूसे के ढेर में गाड़ रखते हैं। कुछ लोग ऐसा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वर्तन धूप में रख कर आसुत करते हैं। किन्तु आज कल कई फार्मसी वाले उसे योंही बन्द हवा और सूखी जगह वाले मकान में रख कर ही उठा लेते हैं। तैयार होने के बाद आसव-अरिष्ट छान कर बोतलों में भरदे, किन्तु बोतलों का हिस्सा कुछ खाली रखे। यदि आसव-अरिष्ट ठीक बना होगा तो बोतल हिलाने से उसमें कुछ फेन उठेगा; किन्तु बोतल का कार्क नहीं खुलेगा। यदि आसव-अरिष्ट कच्चा रह गया होगा तो इस तरह हिलाने से "भक" आवाज के साथ काग निकल जावेगा। कच्चे आसव-अरिष्ट की बोतल हिलाने से जो फेन उठेगा वह शान्त नहीं होगा; किन्तु पक्के का फेन थोड़ी देर में बैठ जावेगा। ठीक बने हुए आसव-अरिष्ट का स्वाद खट्टा न होकर तेज़ सिरके का सा या शराब का सा और मीठा होगा। बिना पानी मिलाये उसे पीने से गले से आंत तक सरसराहट पैदा करेगा और चीरतासा चला जायगा।

नरम पदार्थ का आसव और कठिन पदार्थ का अरिष्ट बनाना ठीक है। क्योंकि नरम पदार्थ को पकाकर काढ़ा करने में उसकी सुगन्धि और तैलयुक्त भाग उड़ जावेगा।

आसव-अरिष्ट के सिवाय सन्धान विधि से और भी कुछ पदार्थ बनते हैं और उनका उपयोग औषधियों में भी होता है। अतः उनकी परिभाषा भी यहां दिये देते हैं।

अपक्व ऊख के रस आदि मधुर पदार्थों से जो सन्धान सिद्ध किया जाता है उसे शीतरस सीधु कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ऊख के रस, गुड़ आदि मधुर द्रव्य द्वारा जो सन्धान सिद्ध किया जाता है उसे पक्वरस सीधु कहते हैं।

उबाल कर पके हुए चावल आदि अन्न के द्वारा जो पदार्थ आसुत कर यन्त्र द्वारा खींच लिया जाता है, उसे सुरा कहते हैं। सुरा के घन भाग को कादम्बरी कहते हैं। सुरा के नीचे जो पतला द्रव रहता है उसे जगल कहते हैं। बिना यन्त्र द्वारा निकाले हुए आसुत अन्न के द्रव को छानने पर जो पेय बनता है उसे सुरामण्ड तथा प्रसन्ना कहते हैं।

जगल में जो गाढ़ा अंश होता है उसे मेदक कहते हैं। मेदक के निकले हुए सारभाग को पुक्कस कहते हैं। इसी को सुराबीज और किएवक कहते हैं।

ताड़ और खजूर के रस के द्वारा सन्धान कर यन्त्र द्वारा खींचा हुआ जो पेय होता है उसे वारुणी कहते हैं। इसी को देशी बोली में ताड़ी और खजूरी कहते हैं।

कन्द, मूल, फल आदि को उबाल कर उसमें नमक, तेल आदि डाल कर जो सन्धान बनता है उसे सूक्त, संधान या अचार कहते हैं। यह सिरके की तरह द्रवभाग में भी डालकर बनाया जाता है। जो आसव-अरिष्ट या मधुर द्रवपदार्थ अथवा मद्य की सामग्री ठीक से आसुत न होकर, ठीक से न उठ कर, बिगड़ जाती है या खट्टी पड़ जाती है, उस सन्धान को चुक्र कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुड़ की चासनी कर उसमें तेल, नमक, मसाला के सहित कन्द, मूल, फल डाल कर जो सन्धान सिद्ध किया जाता है उसे गुड़सूक्त कहते हैं। इसी तरह ऊख के रस से जो बनता है इक्षुसूक्त, और मुनक्के या अंगूर से जो बनता है उसे मृद्वीकासूक्त कहते हैं। देशी भाषा में जिसे सिरका कहते हैं यह वही पदार्थ है।

कच्चे जौ को कुचल कर पानी डाल सड़ाने से जो सन्धान होता है उसे तुषाम्बु कहते हैं।

जौ के छिलके निकाल कुचल कर पकावे और फिर उसे मद्य की तरह सड़ा कर जो पेय बनता है, उसे सौवीर कहते हैं। इसे यन्त्र द्वारा निकाल कर भी काम में लाते हैं।

कुलथी अथवा चावल को पानी डाल पकावे और फिर उसका मांड निकाल सन्धान विधि से तैयार करे उसे कांजी कहते हैं। कांजी तीन चार दिन में तैयार होती है।

मूली आदि को जरा उबाल उसमें राई, नमक, हींग, जीरा आदि डाल जो सन्धान तैयार किया जाता है उसे सण्डाकी या रायता कहते हैं।

तीसरा अध्याय समाप्त

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चौथा अध्याय

पथ्यनिर्माण-परिभाषा

पथ्य

रोगी के लिये औषधि के अतिरिक्त कुछ रोगनाशक और रोगी के लिये हितकारी जो आहार-विहार के उपाय हैं, उन्हें पथ्य कहते हैं। इसी तरह रोगी के लिये हानिकारी आहार-विहार को अपथ्य कहते हैं। रोगी के स्वास्थ्य-सुधार का बहुत कुछ दारमदार पथ्य पर भी है, इसलिये यहां पर कुछ उसका भी वर्णन करना आवश्यक है।

उष्णोदक

रोगी के लिये साधारणतः कच्चा जल हानिकर होता है। इसलिये रोगी के पीने के लिये जो जल आग में पका कर दिया जाता है उसे उष्णोदक कहते हैं। रोग और रोगी की अवस्था के अनुसार जल इतना पकाया जाता है कि वह

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अष्टमांश या चतुर्थांश या अर्धांश अथवा तीन चौथाई शेष रहे। अल्पदोष विकार होने पर जल को अच्छी तरह खौला लेना अथवा एक चतुर्थांश जला कर तीन चतुर्थांश शेष रखने की भी विधि है। चतुर्थांश शेष जल कफनाशक, हलका और पाचकाग्नि बढ़ाने वाला होता है। अर्धावशेष जल पित्तशमन करता है। यदि एक चौथाई जले और तीन चौथाई शेष रहे तो वह जल (त्रिपादहीन जल) वातनाशक होता है। प्रायः वसन्त में पादाव-शेष, शरद और ग्रीष्म में अर्धावशेष, त्रिपादा-वशेष (तीन चौथाई बचा हुआ) हेमन्त और शिशिर में देना चाहिये। अष्टावशेष जल वर्षा ऋतु में देना चाहिये। जो जल पका हुआ, बिना वेग का, बिना फेन का और निर्मल हो उसे क्वथित जल कहते हैं। यह हलका, पाचक और दोषशामक होता है।

मदात्यय (अत्यन्त शराब या नशे की चीज़ खा लेने से होने वाले विकार), ग्लानि, मूर्छा, वान्ति, थकी, भ्रम, तृषा, उष्णता, दाह, रक्तपित्त और विषविकार होने पर शीतल जल ही देना चाहिये। अन्य विकारों में उष्ण जल का प्रयोग करना हित है। क्योंकि उष्ण जल अग्नि को प्रदीप्त करने वाला, पाचक, कण्ठ के लिये हितकारी, हलका और मूत्ररेचक होता है। उष्ण जल से हिचकी, पेट का फूलना, वायु और कफ के विकार, नवज्वर, सन्निपात, खांसी, अजीर्ण, श्वास और छाती के दर्द के विकार नष्ट होते हैं। जिन्होंने वमन, विरेचन लिया है उन के लिये भी यह हितकर है। पका कर ठण्डा किया हुआ पानी कफविकार नहीं करता, क्लेद बढ़ने

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नहीं देता और हलका होता है। पित्तविकार में पका कर ठण्डा किया हुआ जल हितकारी है। पका हुआ पानी यदि बासी हो गया हो तो उसे नहीं पीना चाहिये, क्योंकि वह त्रिदोष को उत्पन्न करता है। रात में गरम जल पीने से कफदोष, आमवात, मेदो रोग, खांसी, श्वास और ज्वर नष्ट होते हैं।

क्षीरपाक

दूध के आम दोष तथा मन्दाग्नि दोष आदि को दूर कर रोगी के लिये सुपच तथा हितकारी बनाने के लिये औषधि और जल योग से जो पाक किया जाता है उसे क्षीरपाक कहते हैं।

जिस औषधि के साथ दूध पकाना हो उससे आठगुना गाय या बकरी का दूध और दूध से चौगुना जल डालकर पकावे। जब देखे कि जल का भाग जल गया, केवल दूध शेष रहा है, तब उसे उतार छान कर काम में लावे। आज-कल वैद्य लोग रोगी और दोष के विचार से दूध में जल कभी समान, कभी दूना और कभी चौगुना तक डालते हैं।

जब दूध के बराबर पानी डालकर पकाया जाता है, और आधा पानी जल जाने पर उतार कर पिलाया जाता है, तब उसे अर्धोदक क्षीर कहते हैं। यह पचने में हलका होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

यूष

किसी अन्न को औषधि संयोग से अथवा यों ही जल डालकर उबालने पर जो उसका उबला हुआ जल निकाला जाता है उसे यूष या जूस कहते हैं।

जिस द्रव्य का यूष बनाना हो उसे एक पल लेकर कूटकर कल्क करे। फिर एक प्रस्थ (दो सेर) जल में पकावे। जब चतुर्थांश या अष्टमांश जल रहे, तब उतार छान कर काम में लावे। यूष बनाते समय यदि पीपल या सोंठ का व्यवहार करना हो तो आधा तोला लेवे। यदि दोनों का व्यवहार करना हो तो दोनों मिला कर आधा तोला लेवे।

षडङ्गजल

षडङ्गजल बनाने के लिये जिन औषधियों को डालना हो उन्हें सब को बराबर दो-दो तोले लेकर चार सेर जल में पकावे। जब आधा जलजाय तब उसे उतार छान कर यों ही पीने के काम में लावे अथवा इसी कथित जल में मण्ड (मांड) पेया, यवागू, यूस, मांसरस आदि सिद्ध करे। इसे षडङ्ग यूस या षडङ्ग जल कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मुद्गयूष

मूंग को दलकर ४ तोले लेवे और ३२ तोले पानी में पकावे। उसमें अन्दाज से सेंधानमक, अद्रक, धनियां, पीपल, जीरा पीस कर डाले। जब पकते पकते चौथाई पानी रहे तब उसे मल कर छान ले और उसमें चार तोले अनार का रस मिलाकर पीवे। यह पित्त-श्लेष्मनाशक, दीपन, शीतल और लघु होता है। इसे मूंग का जूस कहते हैं।

यवागू

औषधियुक्त पक्वजल में जव या चावल पकाकर जो खाद्य-पेय द्रव्य तैयार किया जाता है, उसे यवागू कहते हैं।

जिन औषधियों के क्वाथ में यवागू बनाना हो उन्हें कूट कर चार पल (१६ तोले) लेकर ८ सेर जल में पकावे; जब चौथाई शेष रहे तब उतार छान कर उस में चावल, जव, मूंग, उड़द, तिल आदि जिस वस्तु की यवागू बनानी हो वह सोलह तोले डाल पकावे। जब गाढ़ी हो तब उतार कर काम में लावे। दूसरी विधि यह है कि चार तोले औषध ले १६ गुना जल में डाल पकावे। जब आधा शेष रहे तब उसे उतार छान कर उसमें चावल, जव, मूंग आदि डालकर पकावे और जब गाढ़ी हो तब उतार कर देवे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सप्तमुष्टिकयूष

कुलथी, जव, बेरकाबेचुन (चूर्ण), मूंग, छोटी मूली, सोंठ और धनियां, इन सात औषधियों को एक एक मुट्ठी (एक एक पल) लेकर सोलह गुने पानी में डाल पकावे। जब चतुर्थांश जल शेष रहे उतार कर काम में लेवे। किसी किसी के मत में गाढ़ी पेया के समान होने पर उतारे। इसे सप्तमुष्टिकयूष कहते हैं। यह कफवायु, सन्निपात, ज्वर, आमवात आदि में हितकर होता है।

पानक

पीने की चीज़ को पानक कहते हैं। इसे हिन्दी में पना कहते हैं। जिस चीज़ का पना बनाना हो उसे चार तोला लेवे और कूटकर टुकड़े कर उसमें चौंसठ गुना पानी डाल पकावे। आधा शेष रहने पर उतार छान कर काम में लावे। पना भोजन के समय रुचि बढ़ाने के लिये अथवा ज्वरादि रोगों के समय प्यास अधिक लगने पर उसकी शान्ति के लिये देते हैं। रुचि बढ़ाने के लिये जो पना बनाया जाता है वह प्रायः अम्ल पदार्थों से तैयार करते हैं। इमली, आम की मावट अथवा आम की अमकली पानी में भिगोकर अथवा कच्चा आम उबाल कर रस निकाल और पानी मिला उसमें नमक, चीनी, कपूर तथा पोदीना, इलायची, किसमिस, छुहारे, अद-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रख के टुकड़े आदि रुचि और आवश्यकता के अनुसार डालते हैं। जो पना बिना पकाये काम में लाया जाता है उस में १६ गुना से ३२ गुना तक पानी डालते हैं। रुचि के अनुसार जैसा पतला या गाढ़ा बनाना हो तदनुसार जल कम अथवा अधिक किया जा सकता है। यह रुचिवर्धक, बलकारक और शीघ्र इन्द्रियों को तृप्त करने वाला होता है।

अष्टगुणमण्ड

चार तोला मूंग और ८ तोला चावल को भूनकर चौदह गुना जल में पकावे और उसमें हींग, सेंधानमक, धनिया, सोंठ, मिर्च, पीपल आदि अन्दाज से मिलावे। जब चावल के सीत मिल जावें तब उतार कर देवे। यह मण्ड भूख को बढ़ाता, बल लाता और बस्तिका शोधन करता है।

प्रमथ्या

एक पल औषध लेकर कूट पीस कल्क करे। यदि औषध सूखी हुई हो तो उसे भिगोकर कल्क करे। उस कल्क में आठ गुना जल डालकर औटावे। जब चौथाई अर्थात् दो पल जल रहे तब उतार कर देवे, इसे प्रमथ्या कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अन्नस्वरूप यवागू

चावल अथवा मूंग अथवा उड़द या तिल लेकर छः गुना पानी डाल पकावे। जब गाढ़ी हो जाय जब खाने को देवे। इसे अन्नयवागू या अन्नस्वरूप-यवागू अथवा अन्नप्रक्रिया कहते हैं। जब चावल और दाल मिलाकर अन्नस्वरूप यवागू बनाते हैं तब उसे कृसरा (खिचड़ी) या घना कहते हैं।

विलेपी

जिस चीज़ की विलेपी बनानी हो उसे बारीक टुकड़े कर या मोटे आटे के समान कर चौगुना पानी डाल पकावे। जब अच्छी तरह पककर गाढ़ी हो जाय तब उसे उतार कर काम में लावे। इसे विलेपी या लपसी कहते हैं। जिस चीज़ की विलेपी बनानी हो उसे यदि पहले ज़रा तल कर (कल्हार कर) पकावे तो वह अधिक स्वादिष्ट होती है। विलेपी बृंहणी (ताकत लाने वाली), तर्पणी (तृप्ति करने वाली), हृद्या (हृदयको हितकारक), मधुर और पित्तशामक होती है। यदि मीठी विलेपी बनानी हो तो उसमें मिश्री डालदे। यदि नमकीन लेने की इच्छा हो तो अन्दाज से सेंधानमक मिलावे अथवा नमक के साथ जीरा और काली मिर्च भी अन्दाज से मिलादे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लप्सिका

पावभर गेहूँ का आटा, पावभर घी में तले और उसमें पावभर चीनी और पावभर दूध अथवा गरम पानी डालकर मन्दाग्नि में कलछी से चलाते हुए पकावे। जब गाढ़ी हो जाय तब उसमें नागकेसर, लौंग, इलायची, दालचीनी, सोंठ, मिर्च, गरी के टुकड़े डाल चलावे; जब लाल हो जावे तब उतारे। इसे लप्सिका (हलुवा) अथवा मोहनभोग कहते हैं। इसे शीतकाल में खाना लाभदायक है। यह बृंहणी, वृष्या, बलकारक, स्निग्ध, भारी, रोचक, तर्पक, श्लेष्मकर और पित्तवात नाशक है।

पेया

द्रव्य से चौदह या पन्द्रह गुना पानी डालकर पतली फेन के समान कुछ गाढ़ी लसदार चावल सहित औटी हुई चीज़ को पेया कहते हैं। पेया पचने में बहुत हल्की और मल मूत्रादि का स्तम्भन करने वाली है। यह धातु को पुष्ट करती, बल बढ़ाती, कण्ठ को हितकारक, हल्की और कफनाशक है।

साबूदाना

साबूदाना से चौदह गुना जल लेकर पकावे, जब गाढ़ा हो जाय तब उतार कर देवे। यह साबूदाना पचने में हल्का

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रुचिकर और मलमूत्रादि को रोकने वाला तथा तृप्ति करनेवाला होता है। यदि मीठा साबूदाना बनाना हो तो उसमें मिश्री मिलावे। यदि नमकीन की इच्छा हो तो नमक, मिर्च, जीरा मिलादे। यदि रोगी बहुत कमज़ोर न हो तो आधा दूध और आधा पानी मिला कर साबूदाना पकावे। यदि रोगी बलवान हो तो केवल दूध में भो पका सकते हैं। कोई कोई साबूदाना पकाने के बाद उसमें उबाला हुआ दूध मिला देते हैं। यदि साबूदाना और भी हलका बनाना हो तो उसे तवा में डाल हलकी आंच पर रख जरा कलहार ले, फिर सिल पर पीस पानी या पानी और दूध में पकावे। ऐसा साबूदाना अधिक गाढ़ा होने के पहले ही उतार लेना चाहिये।

भात

चार पल साफ किये हुए पुराने साठी चावल लेकर चौदह गुना पानी में पकावे। जब सीज जावे तब मांड निकाल दे। इसे भात या भक्तान्न कहते हैं। यह मधुर और हलका होता है। बिना मांड निकाला हुआ भात कुछ भारी होता है।

दलिया

जव अथवा गेहूँ को मोटे दानेदार दल कर हलकी आंच में कलहार ले और पहले से उबलते हुए पानी में डालकर औटावे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भात से कुछ पतला रहने पर उतार कर काम में लावे। इसे दलिया कहते हैं। यह भात से भी हलकी होती है।

शुद्धमंड

चावलों को चौदह गुना जल में डालकर पकावे। जब चावल सीज जावे तब उसका पानी पसार (निकाल) ले। भात से निकले हुए उस गाढ़े अन्न-सत्वांशरूप-पेय को मण्ड या मांड अथवा शुद्धमण्ड कहते हैं। इस में सोंठ और सेंधानमक मिलाकर पीवे तो रुचिकर, पाचक और अग्नि प्रदीप्त करने वाला होता है।

अष्टगुणमंड

१ धनियां, २ सोंठ, ३ कालीमिर्च, ४ पीपल, ५ सेंधानमक, ६ मूंग, ७ चावल और ८ हींग, अन्दाज से लेकर तेल अथवा घी में तले। चावल दो पल और मूंग एक पल लेवे। अन्य चीज़ें अन्दाज से छोड़े ताकि अधिक खारी या अधिक कटु न हो। फिर उस मूंग और चावल को चौदह गुना जल में डाल पकावे। जब पक जाय तब मांड निकाल लेवे। यह अष्टगुणमण्ड अग्नि को प्रदीप्त करता, तबियत में तेज़ी लाता, वस्ति का शोधन करता, रक्त बढ़ाता, ज्वर और वात-पित्त-कफ तीनों दोषों को शान्त करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वाष्पमण्ड

साफ जव लेकर उसे मोटा दले और फिर जरा भूनकर चौदह गुना पानी में पकावे। पकने पर उसका मांड निकाल ले। इस मण्ड को वाष्पमण्ड कहते हैं। यह हल्का, पित्तप्रकोप नाशक, कण्ठ के लिये हितकारी और रक्तपित्त का प्रकोप शमन करने वाला होता है।

लाजामंड

धान की भुनी हुई खील (लावा) लेकर चौदह गुना पानी डाल पकावे। फिर उसका मांड निकाल कर वह मांड काम में लावे। इसे लाजामंड कहते हैं। यदि लावा तैयार न हो तो चावल भून कर भी काम में ला सकते हैं। यह लाजामण्ड कफ, पित्त का प्रकोप नष्ट करता, संग्रहणी और अतीसार को शान्त करता, मलको रोकता और गाढ़ा करता तथा ज्वर की प्यास शान्त करता है। लावा आधा दुध और आधा पानी मिला कर भी उबाल सकते हैं। ऐसी दशा में मांड निकालने की आवश्यकता नहीं। लावा सहित पका दूध पथ्य के काम आता है। अथवा लावा पानी में डाल नमक, मिर्च, जीरा, धनियां आदि डालकर पकावे और काम में लावे। यह भी हलका और मल को बांधने वाला होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

परवर

जब परवर का पथ्य देना हो तो परवर लेकर सोलहगुना पानी में डाल कर पकावे। उसमें पीपल, पिपलामूर, चव्य, चित्रक, सोंठ, कालीमिर्च, जीरा, धनियां आदि अन्दाज से डाल दे, अथवा इनमें से जो वस्तु आवश्यक हो वह डाले। अन्दाज से नमक भी डाल दे। जब अष्टमांश अथवा चतुर्थांश पानी जल जावे तब उसे छान कर रख छोड़े और थोड़ा थोड़ा थोड़ी थोड़ी देर में पीता रहे। यह बल को कायम रखता है, दोषों को पचाने में सहायक होता है, हलका और तृप्तिकारक है। दूसरी विधि यह है कि परवर छील कर बीच से आधा चीर दे, किन्तु दूसरी ओर न चिरने पावे। फिर उसमें सेंधानमक, कालीमिर्च, अदरख के छोटे टुकड़े अन्दाज से भर हरएक परवर को अलग अलग सात-आठ पर्त गीले कपड़े के टुकड़े से लपेट दे और एक बटलोई में उन्हें रख आंच पर चढ़ादे। बटलोई के मुंह पर एक कटोरी में जल रख दे ताकि बटलोई से उठी हुई भाफ कटोरी के पानी की सर्दी पाकर फिर बटलोई में वापस आवे और उसी भाफ से बटलोई के परवर पक जावें। चूल्हे की आंच मन्दी रहनी चाहिये। ये परवर स्वादिष्ट, रुचिकर और पाचक होते हैं। अन्य कोई पथ्य देने लायक जब रोगी न हो तब इससे काम चल जाता है और दोषों के पाचन में भी सहायता मिलती है। जब रोगी साधारण दोष वाला हो तब परवर छीलकर टुकड़े करे और बिना घी के ही कढ़ाई या तवे पर रख भूने। उसमें अन्दाज से नमक, मिर्च,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जीरा, अदरख डाल पानी के छींटे देकर ढांक दे और पकाले। यह भी हलका पथ्य होता है।

भुने मुनक्के

मुनक्कों के बीज निकाल उनमें अन्दाज़ से नमक-मिर्च भुरका कर मुनक्कों को एक सींक की सलाई में पोहदे और कोयलों की आंच में उन्हें भून ले। इनसे प्यास रुकती, तृप्ति होती और दोष पचन में सहायता मिलती है। जब रोगी कड़ा लंघन नहीं कर सकता तब इनसे अच्छी सहायता मिलती है। अन्य पथ्य आरम्भ करने के पहले इनसे काम चलता है।

रोटी

आरम्भिक पथ्य के समय जब रोगी को रोटी देने की आवश्यकता हो तब पहले ही सादी रोटी न देकर बिना छना हुआ मोटा आटा लेवे, उसे गाढ़ा गूंद कर लोंदा बनावे। फिर एक बटलोई में पानी चढ़ा चूल्हे पर रख उस आटे के लोंदे को एक साफ कपड़े में बांध पानी में डालकर उबाले। इससे आटे का वह अंश निकल जावेगा जो देर से हज़म होता है। फिर उस लोंदे को निकाल ज़रा नमक, मिर्च, जीरा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मिला कर गूंधे और उसकी रोटी बना कर देवे। ये रोटियां बहुत हल्की और रुचिकर होती हैं। जब रोगी पथ्य हज़म करने लायक होजावे तब आटे को न उबाल कर एक घण्टे पहले गूंद कर रखे और नमक, मिर्च, जीरा मिला रोटी बना कर देवे। ये भी साधारण रोटी से हलकी होती हैं।

दाल का पथ्य

रोटी देने के पहले रोगी को दाल का पानी और दाल का पथ्य देना चाहिये। पुरानी मूंग चार तोला लेकर पहले तवा में कलहार ले, फिर खड़ी मूंग मिट्टी के वर्तन में चौदह गुने जल में चढ़ादे। उसमें पिप्पली, पिपरामूर, चव्य, चित्रक और सोंठ दो-दो या तीन-तीन रत्ती लेकर टुकड़े कर एक कपड़े की पोटली बना पकते समय छोड़दे। अष्टमांश या चतुर्थांश जल शेष रहने पर उतार कर छान कर वही जूस पीने को देवे। पकते समय उसमें अन्दाज से नमक भी छोड़दे। दो तीन दिन इसके देने के बाद उस सिंकी हुई मूंग को दरोर कर दाल बना दे और उसकी ऊपर लिखी विधि से ही दाल बना कर दे। यदि अरहर की दाल देनी हो तो इसी विधि से उसे भी पहले जूस और फिर दाल देवे। आवश्यकतानुसार दाल में जीरा, धनियां आदि का भी उपयोग कर सकते हैं।

विशेष

यदि रोगी पाव भर चावल खाने का आदी हो तो उसके लिये यवागू बनाने के लिये एक छटाक चावल लेने चाहिये

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अर्थात् यवागू के लिये खुराक का चौथाई अन्न ग्रहण करे। अन्नादि साधना में चावलों से अन्दाज पचगुना जल लेकर पाक करे। विलेपी चौगुने जल में, मण्ड चौदहगुने जल में और पेया छः गुने जल में पकावे। जिसमें ज़रा भी कण न रहे उसे मण्ड कहते हैं। जिसमें चावल के सीत भी रहें उसे पेया (पेय) कहते हैं। जिसमें अन्न का अंश अधिक और जलांश कम हो उसे विलेपी समझना चाहिये। यदि छः गुना जल डाल कर यवागू की तरह चावल और दाल मिला कर बनावें तो उसे खिचड़ी कहते हैं।

मांसरस

यदि मांसरस बनाना हो तो चावल या दाल जितनी ले उसका दूना मांस लेकर सब वजन के अठगुने जल में पकावे और चतुर्थांश शेष रहने पर उतार छान कर काम में लावे। इसे षडङ्गयूस मांसरस कहते हैं।

यदि गाढ़ा मांसरस बनाना हो तो १२ पल अर्थात् ९६ तोले मांस ४ सेर जल में सिद्ध करे। यदि पतला मांसरस बनाना हो तो ४८ तोले (६ पल) मांस ४ सेर पानी में पकावे। यदि अच्छतर (अधिक पतला) मांसरस तैयार करना हो तो एक पल मांस को पत्थर पर पीस गोलियां बना घी में भून ले, फिर पकावे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सहकाररस

आम की मौर लेकर कुचल-पीस कर उसका रस निकाले। उसमें गुलाबजल और केवड़ाजल तथा इलायची, लौंग, जावित्री और मिश्री मिलाकर पीवे। यह कफ को शान्त करता, शरीर को तृप्त और हृष्टपुष्ट करता है। यदि मौर न हों तो आम की कच्ची अमिया कूट कर रस निकाल ले।

आमकी चटनी

कच्चे आम की अमिया छीलकर उसमें नमक, मिर्च, जीरा, धनियां, इलायची, लौंग, अदरख, पोदीना और चीनी मिलाकर पीसले। यह रुचि को बढ़ाती, पाचन और तृप्ति-कारक है। इसी तरह आलू बुखारे की और पके कैथे की चटनी भी बनायी जाती है।

आम्ररस

पके आम का रस निचोड़ कर दही का तोड़ या दही मिला केसर, इलायची, चीनी डाल कर जो पिया जाता है उसे आम्ररस या शिखरिणी कहते हैं। यह पचने में हल्की, रुचि-कर, कान्तिवर्धक, मधुर, बलकारक और वातपित्त नाशक है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आम्रलेह

बिना पके हुए, जाली जिस में पड़ चुकी है, ऐसे आम आग में भूनकर मले और उसमें गुड़ या चीनी तथा सेंधानमक, मिर्च, हींग, (भुनी हुई) मिलाकर चाटन बना ले। यह आम्रलेह रुचिकर, मधुर, तृप्तिकारक, हृदय को हितकारी, स्निग्ध और पचने में भारी होता है।

पञ्चसार पानक

अंगूर, अनार (अथवा महुवा), छुहारा, काश्मरीफल और फालसा का रस बराबर बराबर लेकर छान ले और उस में लौंग, इलायची, कपूर, नागकेसर, दालचीनी, तेजपात, मिर्च, शक्कर और अद्रक अन्दाज से मिलावे। इसे पंचसार पना कहते हैं। यह पचने में भारी, ताक़त बढ़ाने वाला, धातुवर्धक, पित्त, पिपासा, श्रम और दाह नष्ट करने वाला होता है।

पञ्चसाराम्बु

छुहारा (खजूर), अंगूर, फालसा, शहद और चीनी पानी में घोल छानकर जो शर्वत-सा बनाया जाय या पना-सा बनाया जाय उसे पञ्चसाराम्बु कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रागखाण्डव

चीनी और शहद मिलाकर जो चटनी बनायी जाय उसे राग कहते हैं। इसी राग में यदि मीठी, खट्टी, नमकीन, कटु आदि पदार्थ मिलाकर चाटन तैयार किया जाय तो उसे राग-खाण्डव कहते हैं। इस में चीनी के बदले गुड़ और खटाई के बदले खट्टा अनार भी मिलाते हैं। इसे मुरब्बे की विधि से भी बनाते हैं। मुरब्बे में जिस फल का मुरब्बा बनाते हैं उसे साफ कर लकड़ी की काड़ी से कोंच कर छेद करते और ज़रा उबाल कर उसे चीनी के सीरे में डुबो कर रखते हैं।

पानक

पक्के आम या भूने अथवा उबाले कच्चे आम का रस अथवा इमली पानी में भिगो कर मले और उस रस को लेवे। फिर उसमें चीनी या गुड़, मिर्च, लौंग, इलायची, दालचीनी, तेजपात आदि डालकर जो पना बनाया जाता है उसे पानक कहते हैं। पना थकावट, क्षुधा, तृषा, क्लम हारक, चित्त प्रसन्न करने वाला, भारी, विष्टम्भी, पेशाब लाने वाला, हृदय को हितकारी, ठण्डा और पित्तनाशक होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

औषधकाल

औषधि सेवन के समय का विचार

औषधि सेवन काल दस प्रकार का है। १ निर्भक्त, जिसमें बासी मुंह केवल दवा खायी जाती है। २ प्राग्भक्त, जो औषधि भोजन के पहले खायी जाती है। ३ अधोभक्त, भोजन के बाद जो दवा खायी जाय। ४ मध्येभक्त, जो दवा भोजन के बीच में खायी या पी जावे। ५ अन्तराभक्त, जो दवा अन्तर देकर खायी जाय; एक दवा खाने के बाद बीच में दूसरी दवा खावे और फिर पहले की दवा लेवे। इस तरह अदल बदल कर खायी जावे। ६ सभक्त, जिस दवा के साथ भोजन तैयार किया जाय; जैसे किसी औषधि के काथ में भोजन बने या भोजन सामग्री के साथ दवा मिलाकर भोजन तैयार कर वही खावे। ७ सामुद्र, जो दवा भोजन के पहले और पीछे खायी जावे। ८ मुहुर्मुहुः, जो दवा भोजन के साथ या योंही थोड़ी थोड़ी देर में बारम्बार ली जावे। ९ ग्रास, जो दवा भोजन के समय प्रत्येक ग्रास या कौर के साथ खायी जावे। १० ग्रासान्तर, जो कौर का अन्तर देकर बीच बीच में ली जाय। निर्भक्त औषधि अधिक वीर्यवाली होती है। प्राग्भक्त औषधि का परिपाक शीघ्र होता है और बल की हानि नहीं होती। अधोभक्त औषधि ऊपरी शरीर-ऊर्ध्वाङ्ग के रोग नष्ट करती और ऊपरी हिस्सों को बल देती है। मध्येभक्त शरीर के मध्यभाग के रोगों में लाभकारक होती है। अन्तराभक्त औषधि हृदय को हितकारी होती,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मानसिक बल बढ़ाती और अग्नि तथा मानसिक शक्ति प्रदीप्त करने वाली होती है। सभक्त औषधि पथ्य है और निर्बलों में बल पैदा करती है।

कांजी

इसे आरनाल, सौवीर, कुल्माष, अभिषुत, अवन्तिसोम, धान्याम्ल, कुञ्जल, सिद्धजल, भक्तवारि, तुषाम्बु, शुक्त, सुवीराम्ल आदि भी कहते हैं। ताजे अन्न को कूटकर एक सेर लेवे, उसमें सेर भर कोमल मूली के टुकड़े मिलावे और उसमें एक आढक जल मिला मुंह बन्द कर जब तक खट्टा न हो जाय रखा रहने दे; यही कांजी है। अथवा साठी के चावल एक तुला ले उसमें एक द्रोण जल डाल २१ दिन रखे; कांजी बन जायगी। यह भेदी, तीक्ष्ण, उष्ण, पित्तशोधक, वस्तिशोधक, रुचिकर, अग्निवर्धक, छूने में ठण्डी, थकावट और उदासी हटाने वाली, पुरानी होने से हृद्रोग, पाण्डुरोग और कृमिरोग नष्ट करती तथा अग्नि को प्रदीप्त करती है।

काम्बलिक

मांसरस अथवा भात का मांड, मूली, तिल का कल्क, मट्ठा, दही का तोड़, दही, कैथा, चांगेरी, मिर्च, जीरा, चीता,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उड़द, नमक मिलाकर जो कांजी-विधि से अम्ल तैयार किया जाता है उसे काम्बलिक कहते हैं। इसमें मट्ठा ४ सेर, कैथा, चांगेरी आदि आठ-आठ तोला लेवे।

कृशरा

चावल, दाल और तिल मिलाकर अथवा चावल दो भाग, दाल एक भाग मिलाकर छः गुना जल में पकावे। उस में नमक, अदरख मिला हींग की छौंक दे, उसे कृशरा या खिचड़ी कहते हैं। यह शुक्रवर्द्धक, बलकारक, भारी, पित्त-कफ वर्धक, देर से हजम होनेवाली, विष्टम्भ करने वाली, मलमूत्र बढ़ाने वाली होती है।

चौथा अध्याय समाप्त

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पांचवां अध्याय

गुण-क्रिया परिभाषा

इस अध्याय में ऐसे शब्दों की परिभाषा लिखी जायगी जो अपने गुण और क्रियाशक्ति द्वारा अर्थबोधक कार्य सम्पादन करते हैं अथवा चिकित्सा कर्म करने वालों के लिये उनका जानना और समझना आवश्यक है।

अनुलोमन

जो औषधि या द्रव्य वातादि दोषों और मलों का पाक कर और बद्ध मल को अलग अलग कर नीचे लाकर प्रवृत्त करे अर्थात् मल-मूत्र और अधोवायु की रुकावट तथा बद्धकोष्ठ दूर कर मल और मूत्र द्वारा उन्हें निकाले उसे अनुलोमन कहते हैं; जैसे हरीतकी।

दीपन

जो औषधि आम (दोषों की आमावस्था) को न पचावे किन्तु अग्नि को प्रदीप्त करे उसे दीपन कहते हैं; जैसे सौंफ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पाचन

जो द्रव्य या औषधि आम को तो पचाती है; किन्तु अग्नि को प्रदीप्त नहीं करती उसे पाचन कहते हैं; जैसे नागकेसर।

दीपन-पाचन

जो औषधि आम को भी पचाती और अग्नि को भी प्रदीप्त करती है, उसे दीपन-पाचन कहते हैं; जैसे चित्रक।

प्रमाथी

जो द्रव्य अपने वीर्य की शक्ति के कारण तथा सूक्ष्म और तीक्ष्ण होने के कारण स्रोतसों में प्रवेश कर वहां के दोष-संचय को मथकर फ़ैला देते और कान, नाक, मुख आदि मार्गों से निकालते हैं, उन्हें प्रमाथी कहते हैं; जैसे बच, कालीमिर्च, लालमिर्च आदि।

भेदन

जो पदार्थ बँधे हुए मल अथवा बिना बँधे हुए पिण्डी या गांठ के समान बने हुए मलों को भेदन कर (फोड़ कर) नीचे निकालते हैं, उन्हें भेदन कहते हैं; जैसे कुटकी।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

छेदन

जो द्रव्य लिपटे और मिले हुए कफादि दोषों को बलपूर्वक छेद कर अलग करदें उन्हें छेदन कहते हैं; जैसे जवाखार, मिर्च और शिलाजीत।

लेखन

जो द्रव्य शरीरस्थ धातु और मलों को सुखाकर खरोंच निकालते हैं, उन्हें लेखन कहते हैं; जैसे मधु, गरम जल और जव।

लंघन

जो आहार विहार और औषधि शरीर में लघुता लाकर दुर्बलता उत्पन्न करती हैं उन्हें लंघन या अपतर्पण कहते हैं; जैसे शोधन और शमनकर्म, उपवास, पिपासा रोकना, वायु और धूप में घूमना, व्यायाम करना आदि।

ग्राही

जो द्रव्य दीपन और पाचन होने पर भी अपने उष्ण गुण के कारण सोमगुणभूयिष्ठ कफादि दोष, धातु और मल का शोषण करे उन्हें ग्राही कहते हैं; जैसे सोंठ, जीरा, गजपीपर।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मदकारी

जिन द्रव्यों के सेवन से उनके तमोगुणप्रधान होने के कारण बुद्धि का लोप हो, नशा आवे, उन्हें मदकारी कहते हैं; जैसे शराब, भांग, धतूरा आदि। बुद्धि शब्द में मेधा, धृति, स्मृति, मति और प्रतिपत्ति का समावेश होता है। विद्या और ज्ञान-विज्ञान की धारणा शक्ति को मेधा कहते हैं। धैर्यपूर्वक सन्तुष्टता और नियामिका बुद्धि को धृति कहते हैं। बीती हुई बातों को स्मरण रखने तथा अर्थधारणा शक्ति को स्मृति कहते हैं। बिना जानी हुई वस्तु के ज्ञान को मति कहते हैं। अर्थावबोध पूर्वक उसके तत्व को प्रकट करने का नाम प्रतिपत्ति है।

अभिष्यन्दी

जो द्रव्य अपने पिच्छिल और भारी गुण के कारण रसवाहिनी शिराओं को रोक कर शरीर में भारीपन उत्पन्न करते हैं, उन्हें अभिष्यन्दी कहते हैं; जैसे दही।

काल

पृथ्वी और सूर्य की गति के कारण जो समय की परिणति होती है उसे काल कहते हैं। यह तीन प्रकार का है—भूत, वर्तमान, भविष्य। अथवा वर्षा, हिम और उष्ण की परिणति के साथ जो समय आता जाता है उसे काल कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

औषधिभक्षण काल

रोग की प्रवृत्ति, वृद्धि और शान्ति के विचार से औषधि-सेवन का जो समय निर्धारित किया जाता है, उसे औषधि-सेवनकाल कहते हैं। औषधि देने का मुख्य समय प्रातःकाल है। कषाय, स्वरस, कल्क, काढ़ा, फांट, हिम आदि विशेषकर सवेरे ही देने चाहिये। किन्तु रोगी और रोग तथा रोग की अवस्था के विचार से वैद्य औषधि-सेवनकाल निश्चय करे।

पंचविध काल

साधारणतः औषधि सेवन के पांच काल निश्चित हैं। १—किञ्चित सूर्योदयकाल; पित्त और कफ के कुपित होने पर पित्त को विरेचन और कफ के वमन द्वारा निकालने अथवा लेखन अर्थात् दोषों को पतला करने के लिये किंचित सूर्योदय के समय भोजन के पहले ही सवेरे औषधि देवे। २—भोजनकाल; अपान वायु के कुपित होने पर भोजन के कुछ पहले औषधि देवे। अरुचि होने पर अनेक प्रकार के स्वादिष्ट भोजनों के साथ औषधि मिलाकर रुचि उत्पन्न करे। नाभिस्थ समान वायु के विकृत होने और मन्दाग्नि में अग्नि को प्रदीप्त करने के लिये भोजन के बीच में औषधि देवे। सर्वदेहव्यापी व्यानवायु के प्रकुपित होने पर भोजन के अन्त में औषधि देवे। हिचकी, आक्षेपकवायु और कम्पवायु में भोजन के पहले और भोजन के बाद भी औषधि

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

देवे। यह द्वितीय औषधि-सेवन काल हुआ। ३—कण्ठस्थ उदानवायु के कुपित होने पर अर्थात् स्वरभंग आदि विचार होने पर सन्ध्या के भोजन के समय प्रत्येक कौर में अथवा बीच में एक एक कौर का अन्तर देते हुए औषधि देवे। हृदय-स्थित प्राणवायु के कुपित होने पर सायंकालीन भोजन के अन्त में औषधि भक्षण करावे। ४—तृषा, वमन, हिचकी, श्वास तथा विषदोष होने पर थोड़ी थोड़ी देर में (मुहुर्मुहुः) तथा भोजन के साथ भी औषधि सेवन करावे। ५—ऊर्ध्वजत्रु (शिर, आंख, नाक, कान आदि) विकारों में तथा लेखन और बृंहण अर्थात् बढ़े हुए दोषों को निकालने और क्षीण दोषों को बढ़ाने के लिये औषधि देनी हो तो रात में (भोजन के साथ नहीं बल्कि अलग) पाचन तथा शमन औषधि देवे। यहां प्रश्न होगा कि जैसे वायु के भिन्न भिन्न भेदों के लिये औषधि सेवनकाल कहे गये, उसी तरह पित्त और कफ के भेदों के लिये क्यों नहीं कहे गये। इसका समाधान यह है कि वायु ही सब दोषों का प्रेरक और गति देनेवाला नियन्ता है। उसे ठीक सँभाल रखने से वह औरों को भी ठीक रखेगा। इसलिये उनके भेदों के विवेचन की आवश्यकता नहीं समझी गयी।

अर्थ

पंचमहाभूतों के गुणों को अर्थ कहते हैं। यथा शब्द आकाश का, स्पर्श वायु का; रूप अग्नि का, रस जल का और गन्ध पृथ्वी का अर्थ है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कर्म

शारीरिक, मानसिक और वाचिक चेष्टाओं को कर्म कहते हैं।

सम्यग्योग

काल, अर्थ और कर्म के उचित उपयोग का नाम सम्यक्योग है।

हीनयोग

काल, अर्थ और कर्म के आवश्यकता से कम (स्वरूप हानिरूप) उपयोग का नाम हीनयोग है।

अतियोग

काल, अर्थ और कर्म के अधिक उपयोग (स्वरूपातिशय उपयोग) को अतियोग कहते हैं।

वामक

जो द्रव्य अपक पित्त और श्लेष्मा को आमाशय और छाती के विकारों को बलपूर्वक ऊर्ध्वगामी कर बलपूर्वक मुख द्वारा निकालते हैं उन्हें वामक कहते हैं; जैसे मैनफल।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वयःसंस्थापनी

जो वस्तुएं शरीर की आरोग्यता सम्पादन कर आयुष्य स्थापित करती हैं, उन्हें वयःसंस्थापनी कहते हैं; जैसे ब्राह्मी, हरीतकी, आमलकी, काकोली, क्षीरकाकोली, दारुहल्दी, सोमलता, गुडूची, इलायची, सेमल का मुसला, चांगेरी आदि।

वर्ण्य (वर्णप्रसादक)

जो द्रव्य शारीरिक मल और रूक्षता दूर कर शारीरिक स्निग्धता और कान्ति बढ़ाते हैं, वे वर्ण्य अथवा वर्णप्रसादक कहलाते हैं; जैसे हल्दी, सरसों, चिरौंजी, नागरमोथा, छरीला, केसर, चन्दन, कमल, खस, पद्माख, मुलेठी, मजीठ, सारिवा, भूमिकूष्माण्ड, नागकेसर, चीनी और दूब।

विरेचन

जो द्रव्य पके हुए अथवा अपक्व दोष और मलों को पतला बना अधोगामी कर गुदामार्ग अथवा मूत्रमार्ग से बाहर निकालते हैं वे विरेचक अथवा विरेचन द्रव्य कहलाते हैं; जैसे निशोथ। ऐसे पदार्थ पृथ्वी और जलतत्व वाले होते हैं। विरेचन द्रव्य छः प्रकार से देते हैं। १ क्षीर द्रव्य, २ रस, ३ कल्क, ४ कषाय, ५ शीतकषाय और ६ चूर्ण। इन में एक के बाद दूसरा हलका होता है। विरेचन द्रव्य की उत्तम मात्रा ४ तोले, मध्यम २ तोले और कनिष्ठ मात्रा १ तोला

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

है। विरेचन के उत्तम वेग ३०, मध्यमवेग २० और कनिष्ठ वेग १० माने गये हैं। ठीक विरेचन से बुद्धि निर्मल होती, शरीर शुद्ध होता, इन्द्रियों को बल मिलता, धातु स्थिर होती, अग्नि प्रबल होती और शरीर में बुढ़ापा जल्दी नहीं आता।

बाजीकरण

जिन औषधियों के सेवन से पुरुष में वीर्य की वृद्धि होकर सन्तानोत्पादनी और सम्भोगशक्ति की वृद्धि होती है तथा स्त्रियों को हर्ष होता है उन्हें बाजीकरण कहते हैं; जैसे नागबला और केवांच के बीज स्त्री शुक्र का प्रवर्तन करते और बड़ी भटकटैया का फल वीर्य का रेचन कराता है। जायफल वीर्य का स्तम्भन करता और हरीतकी वीर्यशोषक है।

विकाशी

जो पदार्थ शारीरिक अंगों के सन्धिबन्धन ढीले कर रसादि धातुओं के सार ओज को सुखाते और धातुओं को भी शिथिल करते हैं उन्हें विकाशी कहते हैं; जैसे सुपारी और कोदो धान्य।

व्यवायी

जो औषधि पचने के पहले ही सारे शरीर में व्याप्त हो जाती है; इसके पश्चात् उनका विपाक होता है उन्हें व्यवायी कहते हैं। जैसे भांग और अफीम।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विशद

जो द्रव्य शारीरिक आशयों के क्लेद और पिचपिचेपन को दूर कर निर्मल करते हैं वे विशद कहलाते हैं; जैसे मधु, हीराकस और निर्मली।

विष

जो द्रव्य शरीर में प्रविष्ट होकर विषाद उत्पन्न करते और हृदय में प्रभाव जमा कर बेहोशी लाते तथा प्राणहरण करते हैं वे विष कहलाते हैं। ये प्रायः तीक्ष्ण, ऊष्ण, लघु, रूक्ष, विशद, व्यवायी और विकाशी होते हैं। ओज को नष्ट करते हैं। अग्नितत्वप्रधान, योगवाही और मदकारक होते हैं। ये ही यदि युक्ति से शुद्ध कर उपयोग में लाये जावें तो कफ-वातनाशक, योगवाही, त्रिदोषघ्न, बृंहण और वीर्यवर्धक होते हैं। विष स्थावर और जंगम भेद से दो प्रकार के हैं। पदार्थों के संयोग से जो कृत्रिम विष बनाये जाते हैं वे गर कहलाते हैं। जैसे सींगिया, संखिया या सर्पविष आदि। ऐसे द्रव्यों को प्राणहारक भी कहते हैं।

विषघ्न

जो पदार्थ विष के विपरीत गुणवाले होकर हृदय को शुद्ध करते हैं वे विषघ्न कहलाते हैं; जैसे कुटकी, रास्ना, इन्द्रवारुणी, बबई, भूम्यामलकी, रक्तपुनर्नवा, हल्दी, विछुवा, पूतिकरंज, बन्दाल, कदलीरस, श्वेतापराजिता आदि।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विष्टम्भी

जो पदार्थ मल का अवरोध करने वाले होते हैं वे विष्टम्भी कहलाते हैं; जैसे कुरैया।

विश्राठ्य

जो द्रव्य संचित दोषों को पकाकर बाहर बहाते और निकालते हैं वे विश्राठ्य कहलाते हैं। ऐसे द्रव्य घाव फोड़ कर बहाने का काम करते हैं; जैसे नमक।

वृंहण

जो पदार्थ शारीरिक बल की वृद्धि करते हैं वे वृंहण कहलाते हैं। ऐसे पदार्थों में पृथ्वी और जलतत्व की अधिकता रहती है; जैसे दूध, मिश्री, घी, मिठाई, स्निग्धवस्ति, अभ्यंग, हर्ष, सोना, वाराहीकन्द, वाराहमांस। इसी का दूसरा नाम संतर्पण है।

वृष्य (पौष्टिक)

जो पदार्थ शरीर को मोटा-ताज़ा कर, सांड सा बना देते हैं, स्वास्थ्यसम्पादन कर ओज बढ़ाते और मन को हर्षित करते हैं वे वृष्य कहलाते हैं; जैसे गेहूँ, जीवक, ऋषभक,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ऊख, उड़द, आमलकी, शतावरी, मूसली, अतिबला, दालचीनी, तेजपात आदि।

व्यायाम

जिस शरीर-संचालन क्रिया के द्वारा शरीर में परिश्रम-जन्य थकावट आवे और उससे शरीर की पुष्टि तथा स्वास्थ्य की वृद्धि हो उसे व्यायाम कहते हैं। इसी तरह मानसिक विचारों के संचालन से मानसिक व्यायाम भी होता है।

शमन

जो पदार्थ शरीरस्थ दोष और मलों को न तो सोधन कर बाहर निकालते और न समान दोष-मलों को दूषित कर उभाड़ते; किन्तु बिगड़े हुए दोषों को समान अवस्था में लाकर स्वास्थ्य सम्पादन करा देते हैं उन्हें शमन या संशमन कहते हैं। यह सात प्रकार से होता है। १—दीपन, २—पाचन, ३—क्षुधा, ४—तृषा, ५—व्यायाम, ६—आतप, ७—वायुसेवन।

संशोधन

जो द्रव्य स्वस्थान में संचित शरीरस्थ दोषों और मलों को ऊर्ध्वगामी होकर वान्ति द्वारा अथवा अधोगामी होकर गुदामार्ग द्वारा निकाल कर शरीर का स्वास्थ्य सम्पादन करते हैं वे संशोधन कहाते हैं; जैसे मैनफल, सनाय, बन्दाल आदि।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

संस्कार

किसी पदार्थ में जल, अग्नि, सन्निकर्ष, शौच, मन्थन, देशकालादि के द्वारा अथवा काल-प्रकर्ष भोजनादि के द्वारा गुणान्तर का आधान करने को संस्कार कहते हैं।

स्रंसन

कोष्ठाश्रित मलादिक दोष जो पचने को शेष हैं, उन्हें बिना पचे ही जो द्रव्य नीचे लाकर गुदा द्वारा निकाल बाहर करते हैं, उन्हें स्रंसन औषध कहते हैं; जैसे अमिलतास का गूदा।

संग्राही या स्तम्भन

जो औषध द्रव्य अपने रूक्ष गुण के कारण, शीतवीर्य के कारण, कषाय रस के कारण और लघुपाक अर्थात् पचने में हलके होने के कारण वात को बढ़ाकर धातु और मलों को रोकते हैं उन्हें स्तम्भन कहते हैं; जैसे कुरैया की छाल, श्योनाक आदि।

सत्व

मन के विकाश को, स्वभाव के प्रकाश को और किसी पदार्थ के मुख्य सार अंश को सत्व कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सद्यःप्राणकर

जिनके सेवन से शरीर में शीघ्र ही शक्ति का संचार और जीवनी शक्ति की वृद्धि हो उन्हें सद्योप्राणकर कहते हैं; जैसे तुरन्त का मारा हुआ मृगादि का मांस, नूतन अन्न, बालास्त्री, दूध का भोजन, घी और उष्णोदक से स्नान, ये सद्यो-प्राणकर हैं।

सद्यःप्राणहर

जिससे तुरन्त ही जीवनीशक्ति का ह्रास हो अथवा जीवन नाश हो उन्हें सद्योप्राणहर कहते हैं; जैसे यकृत, हृदय, तालु, गलभागादि मर्मस्थानों में आघात होना, सूखे और सड़े मांस, विना जमे हुए दही का भोजन, वृद्धा स्त्री का सेवन, सबेरे के सूर्य की किरणों का सेवन, सबेरे मैथुन करना अथवा सोना ये कार्य सद्यः प्राणहारक हैं।

सन्तर्पण

जिनके सेवन से मन की तृप्ति और प्रसन्नता तथा रस रक्तादि की वृद्धि हो उन्हें सन्तर्पण कहते हैं। इसके सिवाय अंगूर, अनार, छुहारा, केला, चीनी, मधु, घृत मिश्रित धान के लावों के चूर्ण को सन्तर्पण कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सात्म्य

जिस आहार विहार का सेवन किसी के लिये व्याधिगुण विपरीत तथा प्रकृति के अनुकूल और सुखकारी हो उसे उसका सात्म्य कहते हैं।

सारक

जो द्रव्य दोष और मलों को अपने स्थान से अलग कर चलायमान करते हैं (सरकाते हैं) उन्हें सारक कहते हैं; जैसे जैपाल, एरण्ड तैल आदि।

रसायन

जो द्रव्य या औषधि देह के बुढ़ापा और ज्वरादि व्याधियों को नष्ट कर शरीर कार्यक्षम बनाये रखते हैं उन्हें रसायन कहते हैं; जैसे गुर्च, रुदन्ती, गुग्गुल और हरीतकी आदि।

शुक्रल

जो पदार्थ शारीरिक वीर्य की वृद्धि करते हैं उन्हें शुक्रल अथवा धातुवृद्धिकारी औषधि कहते हैं; जैसे असगन्ध, मुसली, मिश्री, सतावर आदि।

धातुप्रवर्तक

जो पदार्थ शुक्र धातु को उत्पन्न कर चैतन्य करते और प्रवर्तन करते हैं उन्हें धातुप्रवर्तक द्रव्य कहते हैं; जैसे भिलावें की मींगी, दूध, उड़द आदि।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सूक्ष्म

जो द्रव्य या औषधि शरीर के सूक्ष्म छिद्रों में प्रवेश कर सकती है, उसे सूक्ष्म कहते हैं; जैसे सेंधानमक, शहद, नीम, एरण्डतैल, नीमतैल आदि ।

त्रिदोष

शरीर में वात, पित्त और कफ (गतिउत्पादक, उष्णता स्थापक और जलीयांश द्वारा शान्ति संरक्षक) ये तीन शक्तियां काम करती रहती हैं । जब ये शुद्ध रूप में रहते हैं तब शरीर का धारण और पोषण करते हैं और जब विकृत अवस्था में रहते हैं तब शरीर का नाश कर सकते हैं । वायु रूक्ष, लघु, शीत, स्वर, सूक्ष्म और चलगुण विशिष्ट; पित्त स्नेहयुक्त, तीक्ष्ण, उष्ण, लघु, विसैंधा, सारक और द्रवरूप; तथा कफ शीत, गुरु मन्दक्रिया वाला, लिबलिबा, मुर्दे कीसी वास वाला और स्थिर स्वभाव वाला है । ये तीनों दोष यद्यपि शरीर भर में व्याप्त हैं तथापि वस्ति और आंत वायु के; यकृत, प्लीहा, पित्त के और छाती का भाग कफ के विशेष स्थान हैं । वायु की अधिकता होने से जठराग्नि विषम होती है और कोठा कड़ा होने से मल-विसर्जन क्रिया अनिश्चित अवस्था में रहती है । पित्त की अधिकता में अग्नि तीक्ष्ण रहता और कोठा नरम रहता है। कफ की अधिकता में अग्निमन्द और कोठा मध्यम स्थिति का रहता है । अवस्था, दिन, रात और भोजन के बाद तीन भाग करे तो प्रारम्भ में कफ का, बीच में पित्त का और अन्त में

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वायु का प्रभाव विशेष रहता है। जब दो दोष मिल कर व्याधि उत्पन्न करते हैं तब उन्हें द्वन्द्व या संसर्ग कहते हैं और जब तीनों दूषित होकर व्याधिकर होते हैं तब उन्हें सन्निपात कहते हैं।

सप्तधातु

हम जो भोजन करते हैं उसके सार अंश से क्रमशः रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र ये सात धातुयें बनती हैं। ये सातों शरीर का धारण करते हैं इससे धातु कहलाते हैं। इन्हें वातादि दोष दूषित करते हैं इससे दूष्य भी कहलाते हैं।

पदार्थगुण

सांसारिक पदार्थ आकाश, वायु, जल, अग्नि और पृथ्वी तत्व के संयोग से बनते हैं। किसी पदार्थ में उसके स्वभाव तथा प्रभाव बोधक जो भाव या शक्ति रहती है उसे पदार्थ के गुण कहते हैं। पदार्थों में बीस प्रकार के गुण पाये जाते हैं; १—गुरु, २—लघु, ३—मन्द, ४—तीक्ष्ण, ५—हिम, ६—उष्ण, ७—स्निग्ध, ८—रूक्ष, ९—श्लक्ष्ण, १०—खर, ११—सान्द्र, १२—द्रव, १३—मृदु, १४—कठिन, १५—स्थिर, १६—सर, १७—सूक्ष्म, १८—स्थूल, १९—विशद और २०—पिच्छिल। सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण का समावेश भी पदार्थों में रहता है। इन गुणों का प्रकटीकरण पदार्थ के रस, वीर्य, विपाक और प्रभावशक्ति के द्वारा हुआ करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रस

किसी पदार्थ को जीभ में रखने पर जो उसके स्वाद का अनुभव होता है उसे रस कहते हैं। रस छः प्रकार का है। १—मधुर, २—अम्ल, ३—लवण, ४—कटु, ५—तिक्त, ६—कषाय। इनमें से पहले तीन वायु को नष्ट करते और अन्त के तीन वायु को बढ़ाते हैं। अन्त के तीन कफ को नष्ट करते और आदि के तीन कफ को बढ़ाते हैं। कषाय, तिक्त और मधुर रस पित्त को नष्ट करते और अन्य तीन पित्त को बढ़ाते हैं। मधुर रस वाले पदार्थ पृथ्वी और जलतत्व प्रधान, अम्लरस वाले पदार्थ पृथ्वी और अग्नितत्व प्रधान, लवण रस वाले पदार्थ जल और अग्नितत्व प्रधान, कटु रस वाले पदार्थ आकाश और वायु तत्व प्रधान, तिक्त रस वाले पदार्थ वायु और अग्नितत्व प्रधान तथा कषाय रसवाले पदार्थ पृथ्वी और वायु तत्व प्रधान होते हैं।

वीर्य

कोई पदार्थ अपने जिस स्वभाव से क्रिया करता है अर्थात् कार्य सम्पादन करता है, उसे वीर्य कहते हैं। संसार में सोम और सूर्य की ही शक्ति प्रधान है, अतएव पदार्थ में दो वीर्य माने जाते हैं। १—शीतवीर्य, २—उष्णवीर्य।

विपाक

भोजन किये हुए पदार्थों के रस का जठराग्नि के योग से जो रसान्तर होता है, रसों के उस परिणाम को विपाक कहते

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हैं। यद्यपि रस छः हैं तथापि विपाक में उनकी संख्या तीन ही रह जाती है। १—मधुर, २—अम्ल, ३—कटु। मधुर और लवण रस का विपाक मधुर, अम्ल का अम्ल और कटु, तिक्त कषाय का विपाक कटु होता है।

प्रभाव

किसी पदार्थ में जो विशेष क्रियाशीलता या अचिन्त्य शक्ति होती है उसे उसका प्रभाव कहते हैं। यों तो पदार्थ रस, वीर्य और विपाक के अनुकूल गुण प्रकट करते हैं किन्तु जब रस, वीर्य, विपाक के क्रम की समता होने पर भी उस गुण विशिष्ट होते हैं तब उसे प्रभावजन्य गुण कहते हैं; जैसे चित्रक और दन्ती समान रस वीर्य विपाक वाली है तो भी दन्ती विरेचक होती है किन्तु चित्रक नहीं। इसी तरह मुलेठी और मुनक्का समान रसवीर्य विपाक वाले होने पर भी मुनक्का विरेचक है मुलेठी नहीं। दूध और घी समान रसवीर्य विपाक वाले हैं परन्तु घी अग्नि दीपक है दूध नहीं। यह शक्ति उन पदार्थों के प्रभाव के कारण है।

ऋतु

पृथ्वी सूर्य के आसपास घूमती है। यह चक्कर दो प्रकार का होता है। एक तो पृथ्वी अपनी ही कक्षा में एक चक्कर करती है उससे रात दिन होते हैं। पृथ्वी का जो भाग सूर्य के सामने पड़ता है वहां दिन और जो भाग पीछे रहता है

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

और जहां सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँचता, वहां रात रहती है। पृथ्वी की दूसरी परिक्रमा अपनी परिधि में होती है। यह परिक्रमा एक साल में ३६५ दिन छः घण्टे और कुछ मिनट में समाप्त होती है। एक साल का समय व्यतीत होने में पृथ्वी का कोई भाग कभी सूर्य के पास और सीध में रहता है और कभी दूर और तिरछा रहता है। इस अन्तर के कारण काल में जो अन्तर पड़ता है उस से ऋतुएं होती हैं। जब पृथ्वी सूर्य के समीप और सीध में रहती है तब उसका झुकाव उत्तर की ओर रहता है उस समय 'उत्तरायण काल' माना जाता है। जब पृथ्वी तिरछी सूर्य से दूर दक्षिण की ओर रहती है, तब 'दक्षिणायन काल' कहाता है। एक अयन का मार्ग अतिक्रम करने में जो समय लगता है, उसमें भी समय का परिवर्तन होता रहता है, उससे एक अयन में तीन तीन ऋतुएं होती हैं। उत्तरायण में शिशिर, वसन्त और ग्रीष्म तथा दक्षिणायन में वर्षा, शरद और हेमन्त ऋतुएं होती हैं।

सञ्चय

जब दोष अपने स्थान में वृद्धि पाते रहते हैं और उनकी वृद्धि के कारणों से द्वेष और विपरीतगुण की इच्छा होती है, तब उसे दोषों का सञ्चय कहते हैं। एक सञ्चय स्वाभाविक होता है; जैसे ग्रीष्म में, वायु का सञ्चय, वर्षा में पित्त का संचय और हेमन्त तथा शिशिर में कफ का संचय। दूसरा संचय आहार-विहार के कारण होता है। जैसे वातगुण के अनुसार रूक्ष हल्के आदि आहार-विहार से

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वायु का संचय, पित्त के अनुकूल उष्ण आहार-विहार से पित्त का सञ्चय और कफ के अनुकूल शीत, मन्द, तरल, आहार-विहार से कफ का संचय होगा।

प्रकोप

जब दोष बढ़कर अथवा कुपित होकर अपने स्थान से निकल टेढ़े तिरछे गमन करते हैं और उनके चिन्हों का प्रकटीकरण होता है तब उसे उनका प्रकोप या उत्वण दशा कहते हैं। दोषों का स्वाभाविक प्रकोप—वर्षा में वायु का, शरद में पित्त का और वसन्त में कफ का होता है। वात, पित्त, कफ को बढ़ाने वाले और अहित आहार-विहार करते रहने से उनका कृत्रिम प्रकोप होता है।

प्रशमन

जब कुपित दोष स्वस्थान में आकर शान्त होते हैं तब उसे उनका प्रशमन कहते हैं। जैसे वायु का शमन शरद में, पित्त का हेमन्त में और कफ का शमन ग्रीष्म ऋतु में स्वाभाविक रूप से हो जाता है। जिस दोष के वृद्धि के जो कारण हैं, उनके विपरीत गुणक्रिया विशिष्ट आहार-विहार का सेवन करने से दोषों का कृत्रिम प्रशमन होता है। दोष का प्रकोप तो सहसा हो सकता है; किन्तु प्रशमन धीरे धीरे होता है; जैसे नदी में बाढ़ एकदम आ सकती है किन्तु घटाव धीरे धीरे ही होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वेग

शारीरिक कार्य संचालन की आवश्यकता और उसकी पूर्ति की सूचना के लिये जो लक्षण प्रदर्शित होते हैं, उन्हें वेग कहते हैं। मूत्र, पुरीष, छींक, प्यास, क्षुधा, निद्रा, खांसी, श्रमश्वास, जमुहाई, अपानवायु, अश्रु, वान्ति और वीर्य ये तेरह शारीरिक वेग हैं। इन की जब प्रवृत्ति हो तब उन्हें रोके नहीं अन्यथा रोगों की उत्पत्ति होती है। किन्तु लोभ, हर्ष, ईर्षा, द्वेष, मत्सरता तथा रागादि मानसिक वेगों को सदा रोकते रहना चाहिये।

रोपण

जो औषधियां घाव को साफ कर जलदी भरती हैं उन्हें रोपण कहते हैं; जैसे बरगद।

दारण

जो औषधियां फोड़े को गला कर और फोड़कर घाव करती हैं उन्हें दारण या विदारण कहते हैं; जैसे सज्जीखार, कंजी, अग्निमन्थ, दन्ती, चीता, कनेर तथा कपोत, गीध और कंक इन पक्षियों का वीट ये दारण औषधि हैं।

विवन्धकर

जो पदार्थ स्रोतसों का अवरोध कर मल को रोकते हैं उन्हें विवन्ध कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आनाहकर

जिन पदार्थों के सेवन से स्रोतस भर जावें और पेट फूल कर तना रहे उन्हें आनाह करने वाले पदार्थ कहते हैं।

विरुद्धाहार

जो अन्न-पान या औषध दोषों को कुपित कर अपने स्थान से चलायमान कर देते हैं किन्तु न तो उसे पचा सकते और न वमन विरेचनादि द्वारा बाहर ही निकाल सकते हैं, उन्हें विरुद्धाहार कहते हैं; जैसे दूध और नमक, दूध और मछली, समान मात्रा में घी और शहद आदि।

ऋतुसन्धि

किसी ऋतु की समाप्ति का अन्तिम सप्ताह और आने वाली ऋतु का आदि सप्ताह मिलकर एक पक्ष ऋतुसन्धि कहलाता है। इस अवधि में व्यतीत ऋतु के आहार-विहार को क्रमशः छोड़ते जाना और आनेवाली ऋतु के आहार-विहार को ग्रहण करते जाना चाहिये।

स्नेहन

जो द्रव्य शरीर की रूक्षता को दूर कर स्निग्धता लाते और कान्तिवर्धन करते हैं उन्हें स्नेहन कहते हैं; जैसे घी, तेल, वसा, मज्जा आदि।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रूक्षण

जो पदार्थ शरीर की स्निग्धता दूर कर रूक्षता और खरखरापन उत्पन्न करते हैं वे रूक्षण कहलाते हैं।

पांचवां अध्याय समाप्त

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

छठा अध्याय

आयुर्वेदोक्तगण

चरकोक्त ५० महाकषायगण

जीवनीय कषायगण

जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, बनमूंग, बनउड़द, जीवन्ती (मैना) और मुलेठी ये दश जीवनीय कषायगण हैं अर्थात् इस गण की जीवनी शक्ति बढ़ाती हैं ।

बृंहणीय कषायगण

खस्खार, दुधिया, बरियारी, काकोली, क्षीरकाकोली, सफेद खरैंटी, सहदेवी, बनकपास, विदारीकन्द और विधारा ये दश चीजें बृंहणीयगण हैं अर्थात् शक्तिबर्धक हैं ।

लेखनीय कषायगण

नागरमोथा, कूट, हल्दी, दारुहल्दी, बच, अतीस, कुटकी, चीता, करञ्ज और दुधबच ये लेखनीय अर्थात् दोषों को निकालने वाले हैं ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भेदनीय कषायगण

निसोथ, मन्दार, एरण्ड, भिलावा, दन्ती, चीता, करञ्ज, शंखिनी (गुलाचीन), कुटकी और स्वर्णक्षीरी ये दश भेदनीय अर्थात् मल को फोड़ कर पतला करदेने वाली हैं।

सन्धानीय कषायगण

मुलेठी, गुर्च, पिठवन, पाटला, मजीठ (अथवा वाराह-क्रांता), मोचरस, धव के फूल, पठानीलोध, प्रियंगु, कायफल ये सन्धानीय अर्थात् जोड़नेवाली हैं। पाठ भेद से इन्हें सन्धारणीय अर्थात् मल रोकने वाली भी कहते हैं।

दीपनीय कषाय

पीपली, पिपरामूर, चव्य, चित्रक, सोंठ, अम्लवेत, मिर्च, अजमोदक, भिलावे की बीजी और हींग ये दीपनीय अर्थात् अग्निप्रदीप्त करने वाली हैं।

बलकारक

इन्द्रायण, केंवाच, सतावर, विधारा, विदारीकन्द, असगन्ध, सालपर्णी, कुटकी, बरियारी, अतिबला, ये दश बलकारक (बल्य) गण की दवायें हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वर्ण्य

(वर्णशोधक)

चन्दन, नागकेसर, पद्माख, खस, मुलेठी, मजीठ, सारिवा, क्षीरकाकोली, चीनी और सफेद इष ये दश वर्णशोधक हैं।

कण्ठ्य

(कण्ठ खोलने और स्वर सुधारने वाला गण)

सारिवा, ऊख की जड़, मुलेठी, पीपर, मुनक्का, भूमि-कूष्माण्ड, कायफल, लाजवन्ती, छोटी भटकटैया और बड़ी भटकटैया।

हृद्य

(हृदय के लिए हितकारी गण)

आम, आमड़ा, बड़हर, करौंदा, इमली, अम्लबेत, प्योंदी बेर, वनबेर, अनार और बिजौरा नींबू।

तृप्तिनाशक

(किन्तु रुचिकर)

सोंठ, चीता, चव्य, बायंबिडंग, गूर्वा, गिलोय, वच, नागरमोथा, पीपर और परवर।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अर्शोघ्न

कुरैया, बेल, चीता, सोंठ, अतीस, हर्रा, धमासा, दारुहल्दी, वच और चव्य।

कुष्ठघ्न

खैर, हरीतकी, आंवला, हल्दी, भिलावां, सप्तपर्ण, अमिलतास, कनेर, बायविडंग और चमेली की कोंपल।

कण्डुघ्न

(खुजली नष्ट करने वाला गण)

लालचन्दन, खस, अमिलतास, कंजा, नीम, कुरैया की छाल, सरसों, मुलेठी, दारुहल्दी और नागरमोथा।

कृमिघ्न

सहिंजन, मिर्च, कनकनासूरण, करेमुआ का शाक, बायविडंग, संभालू, श्वेतापराजिता (सफेद विष्णुक्रान्ता) गोखरू, मूषाकर्णी और भारंगी।

विषनाशक

हल्दी, मजीठ, रासना, छोटी इलायची, अनन्तमूल, चन्दन, निर्मली का फल, सिरस, संभालू और लसोढ़ा।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

स्तन्यजनक

(दूध बढ़ाने वाला गण)

खस, साठीधान्य, शालिधान्य, तालमखाना, कांसा, कुश, गुर्च, रोहिषतृण, गोंदैलाघास, मूंज ।

स्तन्यशोधक

(स्तनों के बिगड़े दूध को शोधन करने वाला गण)

पाढी, सोंठ, देवदारु, नागरमोथा, मूर्वा, गुर्च, इन्द्रजव, चिरायता, कुटकी और अनन्तमूल ।

शुक्रजननवर्ग

जीवक, ऋषभक, काकोली, क्षीरकाकोली, बनमूंग, बनउड़द, मेदा, भूआंवला, जटामांसी, ककड़ासिंगी, बांदा (किसी पेड़ में जो पेड़ उगता है) ।

वीर्यशोधक

कूट, एलुवा, कायफल, समुद्रफेन, कदम्ब की गोंद, ऊख, कांसा, तालमखाना, अगस्त के फूल और खस ।

स्नेहोपयोगीगण

मुनक्का, मुलेठी, गुर्च, मेदा, विदारीकन्द, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, जीवन्ती और शालपर्णी ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

स्वेदोपयोगी

सहिजना, अकौवा, एरण्ड, श्वेत पुनर्नवा, लाल पुनर्नवा, जव, तिल, कुलथी, उड़द और वेर।

वमनोपयोगी

शहद, मुलेठी, लाल कचनार, सफेद कचनार, कदम्ब, जलवेत, शणपुष्पी, अकौवा और अपामार्ग ये वमनोपयोगी द्रव्य हैं।

विरेचनोपयोगी

मुनक्का, खम्भार, फालसा, हर्रा, आंवला, बहेड़ा, सौंफ, पीलु, बड़ाबेर, और छोटाबेर।

आस्थापनोपयोगी

निशोथ, वेल, पीपल, कूट, सरसों, वच, इन्द्रजव, सौंफ, मुलेठी और मैनफल ये आस्थापन वस्ति में देने योग्य हैं।

अनुवासनोपयोगी

रासना, देवदारु, वेल, मैनफल, सतावर, सफेद पुनर्नवा, लाल पुनर्नवा, गोखरू, अग्निमन्थ और श्योनाक ये अनुवासन-वस्ति में देने योग्य हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शिरोविरेचनीय

मालकांगनी, नकछिकनी, मिर्च, पीपल, बायविडंग, सहिंजन, सरसों, अपामार्ग के बीज, श्वेतापराजिता और सिरस के बीज ये शिरोविरेचन अर्थात् छींक लाने के लिये उपयोगी हैं।

छर्दिनिग्रह

जामुन के पत्ते, आम के पत्ते, बिजौरा नींबू, खट्टीबेर, अनार, जव, मुलेठी, खस, गोपीचन्दन और धान के लावा, ये वमन रोकने वाले हैं।

तृषानिग्रह

सोंठ, जवासा, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, चन्दन, चिरायता, गुर्च, खस, धनियां और परवर के पत्ते प्यास रोकने वाले हैं।

हिक्का निवारक

कचूर, पोहकरमूल, बेरकी मींगी, भटकटैया, बड़ी भटकटैया, आकाशबेलि, हर्रा, पीपल, जवासा और ककड़ासिंगी ये हिचकी रोकने वाले हैं।

पुरीषसंग्रहण

प्रियंगु, सारिवा, आमकी गुठली, सोनापाठा, लोध, मोचरस, मजीठ, धवके फूल, भारंगी और कमलकेसर ये मल रोकनेवाले हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मलशोधक

जामुन, सरई, (शल्ल की) की छाल या गोंद, जवासा, मुलेठी, सेमर की छाल, रालाधूप, क्षीरकाकोली, कमल, तिल और जली हुई मिट्टी।

मूत्रसंगृहण

जामुन, आम, पाकर, बरगद, आमड़ा, गूलर, पीपल, भिलावां, कचनार और खैर ये मूत्र रोकने वाले हैं।

मूत्रशोधक

कमल, नीली कमल, लाल कमल, कुमुदनी, गुलाब के फूल, पुण्डरीक, मुलेठी, प्रियंगु और धवके फूल ये मूत्र शुद्ध करने वाले हैं।

मूत्रविरेचनीय

बांदा, गोखरू, अगस्त के फूल, पाषाणभेद, कुश, कांसा, डाभकुश, गोंदैला और सरपत की जड़ ये पेशाब लानेवाली हैं।

कासहर कषायगण

मुनक्का, हर्रा, आंवला, पीपल, जवासा, ककड़ासिंगी, भटकटैया, लाल पुनर्नवा, सफेद पुनर्नवा और भुईआंवला।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

श्वासहर

कचूर, पोहकरमूल, अमलवेत, छोटी इलायची, हींग, अगर, तुलसी, भूम्यामलकी, जीवनी और चण्डा (शंखपुष्पी अथवा सुगन्धवाला)।

शोथहर

पाटला, अरणी, बेल, सोनापाठा, खम्भार, भटकटैया, बड़ी भटकटैया, सरिवन, पिठवन और गोखरू।

ज्वरहरकषाय

अनन्तमूल, मिश्री (तुरंजबीन तथा शीरखिस्त), पाठी, मजीठ, मुनक्का, पीलू, फालसा, हर्रा, आंवला और बहेड़ा।

श्रमहर

(थकावट मिटाने वाले)

मुनक्का, खजूर, चिरौंजी, बेर, अनार, गूलर, फालसा, ऊख, जव और साठी के चावल।

दाहनाशक

धान के लावा, चन्दन, खम्भार के फल, मुलेठी, मिश्री, नीलोफर, खस, अनन्तमूल, गुर्च और हाहूबेर (कोई कोई सुगंध-वाला लेते हैं)।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शीतप्रशमन

तगर, अगरु, धनियां, सोंठ, अजवाइन, बच, भटकटैया, अरणी, सोनापाठा और पीपल ये शीत को हटाती हैं।

उदर्दप्रशमन

तेंदू, चिरौंजी, बेर, खैर, पपड़िया खैर, सप्तपर्ण, शालवृक्ष, अर्जुन, विजयसार और अरिमेद (विटखदिर)।

अङ्गमर्दप्रशमन

शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, भटकटैया, बड़ी भटकटैया, एरण्ड की जड़, काकोली, चन्दन, खस, इलायची और मुलेठी ये दश द्रव्य देह की टूटन बन्द करते हैं।

शूलनाशक

पीपल, पिपरामूर, चव्य, चित्रक, सोंठ, मिर्च, अजवाइन, अजमोदा, जीरा और सेहुँड ये शूलनाशक हैं।

शोणितस्थापन

शहद, मुलेठी, केसर (या लालचन्दन), मोचरस, मिट्टी का खपरा, लोध, गेरू, प्रियंगु, मिश्री और धान का लावा ये रक्त बन्द करने वाली हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वेदनाशामक

शाल, कायफल, कदम्ब, पदमाख, नागकेसर, मोचरस, सिरसां, वेत, एलुवा और अशोक।

संज्ञास्थापक

हींग, कायफल, अरिमेद (दुर्गन्धित खैर), वच, ब्राह्मी, जटामासी, गूगल, कुटकी और गठिवन ये दश द्रव्य बेहोशी दूर करने वाले हैं।

प्रजास्थापन

(पुत्रोत्पादक और गर्भस्थिर करने वाले)

इन्द्रायण, ब्राह्मी, दूव, सफेददूव, पाडर, आंवला, हर्रा, कुटकी, खरेंटी और प्रियंगु।

वयःस्थापनकषायवर्ग

गुर्च, हर्रा, आंवला, रासना, श्वेतापराजिता, जीवन्ती, सतावर, मण्डूकपर्णी (ब्राह्मी), शालपर्णी और पुनर्नवा ये दश द्रव्य वय-उमर को स्थापित करते हैं-स्थिर करते हैं।

छठा अध्याय समाप्त

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सातवां अध्याय

सुश्रुतोक्त ३८ गण

विदारिगन्धादिगण

शालपर्णी, विदारीकन्द, सहदेवी, नागबना (गंगेरन), गोखरू, पिठवन, सतावर, अनन्तमूल, कृष्णसारिवा, जीवक, ऋषभक, बनमूंग, बनउड़द, छोटीभटकटैया, बड़ीभटकटैया, पुनर्नवा, एरण्डमूल, हंसराज, बिछुवा और केवाच यह बिदारागन्धादिगण पित्त, वायु नाशक तथा शोष, गुल्म, अंगमर्द, ऊर्ध्वश्वास और खांसी नष्ट करनेवाला है।

आरग्वधादिगण

अमिलतास, मैनफल, कर्कोटकी, कुरैया, पाठी, बनभांटा, पाटला, मूर्वा, इन्द्रजव, सप्तपर्णा, नीम की छाल, पीली कंठसरैया, नीली कंठसरैया, गुर्च, चीता, करञ्ज, पूतिकरञ्ज, परवर, काकजंघा, चिरायता और करेला। इन्हें आरग्वधादि कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

यह वर्ग श्लेष्मा, विष, प्रमेह, कुष्ठ, ज्वर, वमन, खुजली को नष्ट करता है और घाव को शुद्ध करने वाला है।

वरुणादिगण

वरुन, नीलीकटसरैया, सहिंजन, मुनंगा, छोटीअरणी, अग्निमन्थ, मेढ़ासिंगी, जयन्ती, पूतिकरञ्ज, करञ्ज, शाखोटक, (सिहोर) सफेद कटसरैया, पियावांसा, कुन्दरू, चीता, सतावर, अगस्त, अपामार्ग, अजशंगी, कुशमूल, छोटी भटकटैया, बड़ी भटकटैया यह वरुणादिगण कफ, मेदोरोग, शिरःशूल, गुल्म और अन्तर्विद्रधि नष्ट करता है। वाग्भट इसमें मूर्वा, बेल, हर्रा और अर्कमन्दार भी लेते हैं तथा गुणों में अग्निमांद्य और अधोवातनाशक भी मानते हैं।

वीरतर्वादिगण

सरपत, नीलकटसरैया, पीलीकटसरैया, कुशमूल, बांदा, गुर्च, गोंदैला, नरकट, हरिद्वारीकुशा, कांसा, पाषाणभेद, अरणी, ऊख की जड़, हुरहुर, अपामार्ग, सफेद पियावांसा, नीलोफर, ब्राह्मी और गोखरू वीरतर्वादिगण हैं। इससे वायुविकार, अश्मरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात नष्ट होते हैं। वाग्भट इसमें वकुल, अडूसा, और मूर्वा भी लेते हैं।

सालसारादिगण

शालवृक्ष, पीतसाल, खैर, पपरियाखैर, तमालवृक्ष, सुपारी, भोजपत्र, मेढ़ासिंगी, तिनिश, चन्दन, लालचन्दन, सिरस

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(शीशम), असन, तेन्दू, विजयसार, दारुहल्दी, धव, अर्जुन, ताड़, साखो, करञ्ज, पूतिकरञ्ज, तगर, अगर। यह सालसारादिगण, कुष्ठ, प्रमेह, पाण्डु, कफ और मेदोरोग नष्ट करता है।

रोध्रादिगण

लोध, साबरलोध, पलाश, विकंकनवृक्ष, अशोक, भारंगी, कायफल, एलुवा, खर्जरस, धूप, मोचरस, कदम्ब, शाल और केला रोध्रादिगण हैं। यह मेदोरोग, कफ और योनिदोष नष्ट करता है। वाग्भट इसमें कपूरकचरी, कालासेमर और रास्ना भी लेते हैं और गुणों में इसे स्तम्भक, वर्णकर और विषघ्न भी मानते हैं।

अर्कादिगण

मन्दार, श्वेतमन्दार, करञ्ज, पूतिकरञ्ज, हस्तिशुंडा, अपामार्ग, भारंगी, रासना, कलियारी, बिदारीकन्द, भूमिकूष्मांड, मेढ़ासिंगी, अलवन (लताफिटकरी) और इंगुदी (इंगुवा) अर्कादिगण हैं। यह कफ, मेदोरोग, विषदोष, कृमि और कुष्टरोग नष्ट करता है। वाग्भट इस में मालकांगनी, सफेद विष्णुक्रांता और नीला विष्णुक्रांता भी लेते हैं और गुणों में विशेषकर व्रणशोधक मानते हैं।

सुरसादि गण

काली तुलसी, सफेद तुलसी, छोटे पत्ते की तुलसी, वन तुलसी, काली बवई, सुगन्धतृण, मरुवा, कालामरुवा, कसौंधी,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नकछिकनी, दौना, दामोदरो, वायबिडंग, कायफल, निर्गुण्डी, मूषाकानी, तालमखाना, भारंगी, मकोय, कौवाटोड़ी और विषदोडी ये सुरसादिगण हैं। यह कफ, कृमि, जुकाम, अरुचि, श्वास और खांसी नष्ट करता है। वाग्भट इसमें काला सिरस, लाल इन्दोरन और वकायन भी लेते हैं तथा मेदनाशक भी मानते हैं।

मुष्ककादिगण

घण्टापाटल (मोषा), पलाश, धव, चीता, मैनफल, कुड़ची (कुरैया), शीशम, सेहुँड़, यह मुष्ककादि गण है। इसके सेवन से मेदोरोग, शुक्रदोष, प्रमेह, अर्श, पाण्डु, शर्करा, और अश्मरी विकार नष्ट होते हैं। वाग्भट इसमें त्रिफला भी लेते हैं और गुणों में गुल्म तथा वीर्यनाशक भी मानते हैं।

पिपल्यादिगण

पीपल, पिपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, मिर्च, गजपीपर, रेणुकबीज, बड़ी इलायची, अजमोदा, इन्द्रजव, पाढ़ी, जीरा, राई, बकायन नीम का फल, हींग, भारंगी, मूर्वा, अतीस, वच, वायविडङ्ग और कुटको पिपल्यादिगण है। इससे कफ, प्रतिश्याय, वायुविकार, अरुचि, गुल्म और शूलविकार नष्ट होते हैं। अग्नि का दीपन होता और आम का पाचन होता है।

एलादिगण

छोटी इलायची, बड़ी इलीयची, तगर, कूट, जटामासी, गन्धतृण, दालचीनी, तेजपात, नागकेसर, प्रियंगु, रेणुकबीज,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नखी, सुगन्धबाला, नखसूती, चण्डा (खुरासानी अजवाइन) शिलारस, गन्दाविरोजा, गूगल, राल, लोभान, कुन्दरू का गोंद, अगर, तगर, खस, देवदारु, नागरमोथा, केसर, कुसुम, नागकेसर, गठिवन, सरल धूप, कपूरकचरी, तेजपात, लजालू-सेवती, ब्राह्मी। यह एलादिगण वात, कफ, विष, खुजली, फोड़ा-फुंसी और ददोरे नष्ट करता तथा शरीर की रंगत खोलता है।

वचादिगण

वच, नागरमोथा, अतीस, हरीतकी, देवदारु और नागकेसर इसे वचादिगण कहते हैं। वाग्भट इसमें सोंठ, हल्दी, दारुहल्दी, मुलेठी, पिठवन और इन्द्रजव भी लेते हैं।

हरिद्रादिगण

हल्दी, दारुहल्दी, पृष्ठपर्णी, इन्द्रजव और मुलेठी इसे हरिद्रादिगण कहते हैं।

(ये दोनों अर्थात् वचादिगण और हरिद्रादिगण स्त्रियों के स्तनों के बिगड़े हुए दूध को शुद्ध करते, आमातीसार नष्ट करते और दोषों को पचाते हैं। वाग्भट मेद, कफ और उरुस्तम्भ-नाशक भी कहते हैं।)

श्यामादिगण

श्वेतसारिवा, कृष्णसारिवा, निशोथ, दन्ती, शंख-पुष्पी, सफेद निशोथ, पठानीलोध, कबीला, सुपारी, करञ्ज, पूतिकरञ्ज,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुर्च, सप्तपर्ण, सुवर्णक्षीरी, शिकेकाई, महानीम, मूसाकानी, कालोदन्ती, इन्द्रवारुणी, अमिलतास और विधारा को श्यामादिगण कहते हैं। यह गुल्म, विषदोष, आनाह, उदर और उदावर्त नष्ट करता है। वाग्भट इसमें अपामार्ग, ऊख और पीलू के फल भी लेते हैं और गुणों में कफदोषहारी, अरुचिनाशक, हृद्रोग और मूत्रकृच्छ्र विकार नष्ट करने वाला भी कहते हैं।

बृहत्यादिगण

बड़ी भटकटैया, छोटी भटकटैया, इन्द्रजव, पाठी और मुलेठी यह बृहत्यादिगण है। इसके व्यवहार से पित्त, वायु, कफ, अरुचि, जीमचलाना और मूत्रकृच्छ्र विकार नष्ट होते हैं।

पटोलादिगण

परवर, चन्दन, लाल चन्दन, मूर्वा, गुडूची, पाठी और कुटकी पटोलादिगण है। इससे पित्तविकार, कफविकार, अरुचि, ज्वर, व्रण, वमन, खुजली और विषदोष नष्ट होते हैं। वाग्भट इसे कुष्ठ और कामलानाशक भी बताते हैं।

काकोल्यादिगण

काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, बनमूंग, बनउड़द, मेदा, महामेदा, गुर्च, ककड़ासिंगी, वंशलोचन, पदमाख, कमल, ऋद्धि, वृद्धि, मुनक्का, जीवन्ती और मुलेठी,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

काकोल्यादिगण है। इसके व्यवहार से रक्तपित्त, रक्तदोष, पित्तदोष और वातविकार नष्ट होते हैं। यह जीवनी शक्ति को बढ़ाता है, शरीर को मोटा-ताजा करता है, शरीर में वीर्य बढ़ाता, दूध बढ़ाता और कफ वृद्धि करता है।

ऊषकादिगण

रेह, सेंधानोन, शिलाजीत, हीराकसीस, लाल हीराकस, हींग और तूतिया। इस ऊषकादिगण के सेवन से कफविकार, मेदोरोग, पथरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र और गुल्मरोग नष्ट होते हैं।

सारिवादिगण

अनन्तमूल, मुलेठी, चन्दन, लालचन्दन, पद्माख, खँभार, महुवा का फूल और खस, सारिवादिगण है। इसके सेवन से पिपासा, रक्तपित्त, रक्तदोष, पित्तज्वर और दाह नष्ट होता है। वाग्भट इसमें फालसा भी लेते हैं।

अंजनादिगण

सुरमा, सफेद सुरमा, नागपुष्प (नागकेसर), प्रियंगु, नीलोफर, खस, पद्मकेसर और मुलेठी अंजनादिगण है। यह रक्तपित्त, विष और भीतरी दाह को नष्ट करता है। वाग्भट इसमें जटामासी और इलायची भी लेते हैं और पित्तनाशक भी बताते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

परूषकादिगण

फालसा, मुनक्का, कायफल, अनार, खिरनी, निर्मलीफल, सागोन का फल, आंवला, हर्रा, बहेड़ा, परूषकादिगण है। इस से वायुविकार और पिपासा नष्ट होती है। यह मूत्रदोषनाशक, हृदय के लिये हितकारी और रुचिवर्द्धक है। वाग्भट इसे तृषा और वायुनाशक भी बताते हैं।

प्रियंग्वादिगण

प्रियंगु, लजालू, धौकेफूल, नागकेसर, लाल चन्दन, बकायन, मोचरस, रसाञ्जन, पलाशपत्र, कालासुर्मा, भोजपत्र, जस्ते का फूल, स्थल कमलिनी, पद्मकेसर, त्तारमूर्वा और मजीठ प्रियंग्वादिगण हैं।

अम्बष्ठादिगण

अम्बष्ठ (पोदीना), धौकेफूल, लजालू, सोनापाठा, मुलेठी, वेल, पठानीलोध, सावरलोध, पलासगोंद, पद्मकेसर, जटामासी और पाकर इसे अम्बष्ठादिगण कहते हैं।

(ये दोनों प्रियंग्वादि और अम्बष्ठादिगण पक्कातीसार नष्ट करते, कटे हुए जोड़ते (सन्धानक) और व्रणरोधक हैं।)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

न्यग्रोधादिगण

बरगद, गूलर, पीपर, पलाशपीपल, पाकर, मुलेठी, आमड़ा, अर्जुन, आम, बेल, लाख, जामुन, तेजपत्र, कठजामुन, चिरौंजी, महुवा, बेत, कदम्ब, बेर, तेंदू, पठानीलोध, धूप, सावरलोध, भिलांवा, पलाश, नन्दीवृक्ष ये न्यग्रोधादिवर्ग है। यह व्रणशोधक, व्रणनाशक, संग्राही, घाव भरनेवाला, कटे को जोड़ने वाला, रक्तपित्त और तृषा तथा दाह नष्ट करने वाला, मेदोरोग, योनिरोग और योनिदोष नष्ट करने वाला है। वाग्भट इसमें कायफल, पिप्पली, खिरनी और मुलेठी भी लेते हैं।

गुडूच्यादिगण

गुर्च, नीम, धनियां, लाल चन्दन और पदमाख, गुडूच्यादि गण है। इससे सब प्रकार के ज्वर, हृल्लास, अरोचक, वमन, पिपासा और दाह की शान्ति होती है। वाग्भट इसे पित्त, कफ नाशक और अग्नि प्रदीप्त करने वाला भी मानते हैं।

उत्पलादिगण

नीलोफर, लाल कमल, कुमुदनी, सफेद कमल, सुगन्धित नीलकमल, कुवलय, पुण्डरीक, महुवा या मुलेठी को उत्पलादि गण कहते हैं। यह दाह, रक्तपित्त, पिपासा, विष, हृद्रोग, छर्दि और मूर्च्छा नष्ट करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मुस्तादिगण

नागरमोथा, हल्दी, दारुहल्दी, हरीतकी, आंवला, बहेड़ा, कूट, कड़ू वच, दुधवच, पाढ़ी, कुटकी, करंज, अतीस, इलायची, भिलांवा और चीता मुस्तादिगण है। यह श्लेष्मनाशक, योनिदोषहारक, स्तन के बिगड़े हुए दूध को शुद्ध करनेवाला और मलपाचक है।

त्रिफला

हर्रा, आंवला और बहेड़ा को त्रिफलागण कहते हैं। यह कफ-पित्तनाशक, प्रमेह और कुष्ठ को दूर करने वाला, चर्मरोग मिटाने वाला, नेत्रों की शक्ति बढ़ाने वाला, अग्निप्रदीप्त करने वाला और विषम ज्वरनाशक है।

त्रिकटुक

पिप्पली, मिर्च और सोंठ को त्रिकटुक या त्र्यूषण कहते हैं। यह कफदोष, मेदोरोग, प्रमेह; कुष्ठ और चर्मरोग नाशक है, अग्नि को प्रदीप्त करने वाला, गुल्म, पीनस और मन्दाग्नि मिटाने वाला है।

आमलक्यादिगण

आंवला, हर्रा, पीपल और चीता आमलक्यादिगण कहाता है। यह सर्व ज्वरनाशक, नेत्रों के लिए हितकारी,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अग्निप्रदीप्त करने वाला, शक्ति और वीर्य बढ़ाने वाला, कफ और अरुचि को भगाने वाला है।

त्रप्वादि या वंगादिवर्ग

रांगा, सीसा, ताम्र, चांदी, कान्तलोह, स्वर्ण और माडूर वंगादि सप्तधातुवर्ग कहाता है। यह गरदोष (कृत्रिमविष), कृमि, पिपासा, विषदोष, हृद्रोग, पाण्डु और प्रमेह नष्ट करने वाला है।

लाक्षादिगण

लाख, रेवत (जम्बीर अथवा अमिलतास), कुरैया, कनेर, कायफल, हल्दी, दारुहल्दी, नीम, सप्तपर्ण, मालती और त्रायमाण लाक्षादिगण है। यह कषाय, तिक्त और मधुर रस विशिष्ट है, एवं, कफ और पित्तजनित पीड़ा नाशक, कुष्ट और कृमि निवारक और दुष्टव्रण शोधक है।

लघुपंचमूल

गोखरू, छोटी भटकटैया, बड़ी भटकटैया, सरिवन और पिठवन को स्वल्पपंचमूल या लघुपंचमूल कहते हैं। यह कषाय-तिक्त-मधुर-सविशिष्टगण वायुनाशक, पित्तशामक, तथा बृंहण और बलवर्द्धक है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बृहत्पंचमूल

बेल, अरणी, श्योनाक, पाटला और काश्मरी बृहत्पंचमूल है। यह तिक्तरस विशिष्ट और मधुर, अनुरस वाला है। कफ-वातनाशक, पचने में हलका और अग्नि प्रदीप्त करने वाला है।

दशमूल

ऊपर के लघु और बृहत्पंचमूल मिलकर (शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, भटकटैया, बड़ी भटकटैया, गोखरु, बेल, अग्निमंथ, श्योनाक, पाटला और खँभार) दशमूल बनता है। यह श्वासनाशक, कफ, पित्त और वातदोषनाशक, आम को पचाने वाला, तथा सर्वज्वर विनाशक है।

वल्लीपंचमूल

विदारीकन्द, अनन्तमूल, हल्दी*, गुर्च और अजश्रृङ्गी (मेढासिंगी) वल्लीपंचमूल है।

कण्टकपंचमूल

करौंदा, गोखरू, नीलीकटसरैया, सतावर और कांटेवाला पालीवृक्ष, कण्टकपंचमूल है।

---

* रजनी शब्द का अर्थ हल्दी होता है; किन्तु हल्दीलता नहीं। इससे बथुवा अथवा नील या दारुहल्दी भी ले सकते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वल्लीपंचमूल और कण्टकपंचमूल श्लेष्मदोषनाशक, रक्त-पित्त, शोथ तथा सब प्रकार के प्रमेह और शुक्रदोष नाशक है।

तृणपंचमूल

कुश, कास, नरकट, दर्भ (हरिद्वारी कुशा) और सरपत अथवा पतली ऊख तृणपंचमूल है। यह दूध के साथ सेवन करने से सब प्रकार के मूत्रदोष विकार और रक्तपित्त नष्ट करता है। यह सम्पूर्ण पित्तविकार शामक है।

पांचो प्रकार के पंचमूल श्लेष्मदोषशामक माने गये हैं। ऊपर जो गण गिनाये गये हैं, इन का काढ़ा, लेप, तैलपाक, घृतपाक, शर्बत, पना, हिम, कषाय आदि उचित प्रकार से बुद्धिमान वैद्य उपयोग कर सकता है।

सातवां अध्याय समाप्त

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आठवां अध्याय

श्रीवाग्भटोक्त शोधनादिगण

छर्दिगण

मैनफल, मुलेठी, कटुलौकी, नीम, कटु कुन्दरू, इन्द्रायन, कडूखीरा, कुरैया, मूर्वा, वन्दाल, वायबिडंग, जलवेत, चीता, दन्ती, कडूतरोई, कडूनेनुवा, करंज, पीपली, लवण, वच, इलायची और सरसों छर्द वर्ग है। इन्हें वान्ति कराने के लिये काम में लावे।

रेचकवर्ग

दन्ती, निशोथ, त्रिफला (आंवला, हर्र, बहेड़ा) कडू इन्द्रायण, कन्हेरी, कौंहरी, तिधारा, सेहुँड, शंखपुष्पी, नील (अथवा कालादाना), लोध, अमिलतास, कबीला, रेवन्दचीनो, स्वर्णक्षीरी, दूध और मूत्र यह विरेचनीय वर्ग है। इन्हें जुलाब देने में उपयोग करे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

निरूहणवस्ति

मैनफल, कुरैया, कूट, देवदाली (बन्दाल), मुलेठी, वच, दशमूल, देवदारु, रासना, जव, सौंफ, कड़ू तरोई, कुलथी, शहद, सेंधानमक और निशोथ, निरूहणवस्ति के लिए उपयोगी द्रव्य है।

शिरोविरेचन

वायविडंग, अपामार्ग के बीज, व्योष (सोंठ, मिर्च, पीपल) दारुहल्दी, रालाधूप, सिरस के बीज, छोटी भटकटैया, बड़ी भटकटैया, सहिंजन के बीज, महुवा का सार या गोंद, सेंधा-नमक, रसवत, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, बहुफली और नकछिकनी शिरोविरेचन के लिये उपयोगी है।

वायुनाशक

देवदारु, तगर, कूट, दशमूल, वरियारी, सहदेवी, वीर-तरादिगण और विदार्यादिगण की चीजें वायुनाशक हैं।

पित्तनाशक

दूब, अनन्तमूल, जवासा, नीम, अडूसा, केवांच, गुन्डा (गोंदैला), सतावर, सफेद घुंघची, प्रियंगु, न्यग्रोधादिगण, पद्मकादिगण, सरिवन, पिठवन, कमल, नागरमोथा तथा सारिवादिगण की चीजें पित्तनाशक हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कफनाशक

आरग्वधादिगण, अर्कादिगण, मुष्ककादिगण, असनादिगण, सुरसादिगण, मुस्तादिगण और वत्सकादिगण की चीजें कफनाशक हैं।

जीवनीयगण

चरक के अनुसार पहिले लिखा जाचुका है।

विदार्यादिगण

सुश्रुत के विदारिगन्धादिवर्ग में ककड़ासिंगी, देवदारु, केवांच, जीवनपंचमूल, लघुपंचमूल और लजालू को अधिक लिखकर गुणों में हृदय को हितकारी और वृंहण भी मानते हैं।

पद्मकादिगण

पदमाख, पुण्डरीक कमल (या कमलगट्टा), मुण्डी, वंशलोचन, गोरखमुण्डी, ककड़ासिंगी, गुर्च और जीवनीयगण की दश औषधियां मिलकर पद्मकादिगण होता है। यह स्त्रियों का दूध बढ़ाने वाला, वातपित्त नाशक, प्रीणन (तुष्टिदायक), जीवनीयशक्ति आरोग्यता बढ़ाने वाला, वृंहण (पौष्टिक) और वृष्य (वीर्यवर्धक) है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

असनादिगण

असन, तिनिश, भोजपत्र, अर्जुन, कंजी (पूतिकरंज), खैर, सफेदखैर, सिरस, शीशम, मेढ़ासिंगी, सफेद चन्दन, लालचन्दन, हरिचन्दन, ताड़, पलाश, अगरु, सागोन, साखो, रालाधूप का वृक्ष, सुपारी, धव, इन्द्रजव, अजकर्ण (पीतशाल) और अश्वकर्ण असनादिगण है। यह सफेद कुष्ठ, कुष्ठ, कफ, कृमि, पाण्डु, प्रमेह और मेदोरोग नष्ट करता है।

वत्सकादिगण

कुरैया की छाल, मूर्वा, भारंगी, कुटकी, काली मिर्च, अतीस, सेहुँड़, इलायची, पाढ़ो, जीरा, सोनापाठा, मैनफल, अजमोदा, सरसों, वच, स्याहजीरा, हींग, वायविडंग, बन-तुलसी और पंचकोल (पीपल, पिपरामूर, चव्य, चित्रक, सोंठ), वत्सकादिगण है। यह वायु, कफ, मेद, पीनस, गुल्म, ज्वर, शूल और अर्शनाशक है।

नोट—ऊपर तीनों अध्याय में आये हुए गणों में जो औषधि न मिले उसके बदले उसी गुणवाली दूसरी औषधि डाल देनी चाहिये। अथवा कही हुई औषधि में कोई अलग करने योग्य हो तो उसे अलग कर उपयुक्त औषधि उसके बदले सम्मिलित करदे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मधुरगण

घृत, सुवर्ण, गुड़, दूध, अखरोट, केला, नारियल, कटहर, फालसा, सनव्वर, खिरनी, वला, अतिवला, महावला, मेदा, महा मेदा, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, वनमूंग, वनउड़द, जीवन्ती, जीवक, ऋषभक, मुलेठी, मुनक्का, महुवा, कुन्दरू, बिदारीकन्द, मुण्डी, गोरखमुण्डी, काकोली, क्षीरकाकोली, वंशलोचन, वाराहीकन्द, काश्मरी, कटसरैया, नीली कटसरैया, ऊख, गोखरू, शहद आदि।

अम्लवर्ग

आंवला, इमली, नींबू, बिजौरानींबू, अम्लवेत, खट्टा अनार, चांदी, मट्ठा, चूक, आलबुखारा, दही, आम्र, आमड़ा, कमरख, कैथा, करौंदा आदि।

तिक्तवर्ग

परवर, त्रायमाण, खस, सुगन्धबाला, चन्दन, चिरायता, नीम, कुटकी, तगर, अगर, कुरैया, इन्द्रजव, करंज, हल्दी, दारुहल्दी, नागरमोथा, मूर्वा, रूसा, पाठी, अपामार्ग, कांसा, लोहा, गुर्च, जवासा, भटकटैया, बड़ी भटकटैया, बृहत्पंचमूल, करिहारी, अतीस, वच आदि।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लवणवर्ग

सेंधानमक, सोंचरनमक, कालानोन, बिडनमक, समुद्र-नमक, रोमक, उद्भिद (वनस्पतियों से निकलने वाले क्षार), खारीनोन, नोना, सीसा आदि।

कटुवर्ग

सहिंजन, मुनगा, मूली, लहसुन, तुलसी, बनतुलसी, सफेद तुलसी, शिफ (मौरी), कूट, देवदारु, रेणुकबीज, बाकुची, गुग्गुल, शंखपुष्पी, नागरमोथा, करियारी, सोनापाठा, पोलू, पिपल्यादिगण, सालसारादिगण, तथा सुरसादिगण की चीजें कटुवर्ग में हैं।

कषायवर्ग

त्रिफला, धूप, कच्चा कैथा, मधु, कदम्ब, गूलर, प्रवाल, मोती, सूती, गेरू, सुर्मा, जामुन की गुठली, आम की गुठली, बबूल, खजूर, तेंदू, बरगद, न्यग्रोधादिगण, अम्बष्ठादिगण, प्रियंग्वादिगण, लोध्रादिगण, शालसारादिगण, निर्मली, साखू, पाषाणभेद, कचनार, जीवन्ती, चिल्ली, पालकी, कोदो, सावां, मूंग, अरहर, खैर, भसींड़ा, सिरस, कमल आदि कषायवर्ग हैं।

आठवां अध्याय समाप्त

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नवां अध्याय

रसतन्त्रोक्त परिभाषा

रस

रस नाम पारद का है। रसतन्त्र शास्त्र में पारद की प्रधानता है इसलिये इस शास्त्र का भी नाम रसतन्त्र है।

रससंस्कार

पारद को शुद्ध करने, उसके दोष दूर कर उसमें गुणाधान करने और उसे शक्तिशाली बनाने के लिये जो क्रिया की जाती है, उसे रस-संस्कार या पारद-संस्कार कहते हैं। ये संस्कार १८ हैं; १—स्वेदन, २—मर्दन, ३—मूर्छन, ४ उत्थापन, ५—पातन, ६—रोधन, ७—नियमन, ८—दीपन, ९—अभ्रकग्रास, १०—चारण, ११—गर्भद्रुति, १२—बाह्यद्रुति, १३—जारण, १४—सारण, १५—क्रामण, १६—वेधन, १७—रंजन और १८—सेवन। इनमें से पहले के आठ औषधनिर्माण में अत्यन्त आवश्यक हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पारददोष

पारद में पांच दोष होते हैं; १—मलदोष, २—विषदोष, ३—वह्निदोष, ४—मददोष और ५—दर्पदोष ।

पारदमल

पारद में सात मल होते हैं, उन्हें कंचुकी कहते हैं। १—मिट्टी, २—पत्थर, ३—पानी, ४—तांबा, ५—लोहा, ६—सीसा और ७—रांगा ।

पारदबन्धन

पारद आग की आंच नहीं सह सकता, उड़ जाता है। इसलिये उसे १—जड़ी बूटियों से, २—हीरा माणिक आदि मणिरत्नों से, ३—सुवर्ण चांदी आदि धातु से और ४—सीसा और रांगा से बांध कर रखा जाता है। इंगुदी-मूलनिर्यास, नागार्जुनी (दुधिया) की जड़, अर्कमूल, जलकुम्भी, धतूरे के बीज, इंगुवा के पत्तों का रस, भृङ्गराज, विषखपरी, पाढ़ी, लजालू, भटकटैया, सेहुँड़, घीकुवांर, लांगली, हंसराज आदि पारद बांधनेवाली बूटी हैं।

भावनीयगण

रसौषधि निर्माण में जिन औषधियों के द्वारा भावना दी जाती अर्थात् जिनके साथ उन्हें खरल किया जाता है उन्हें

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भावनीयगण कहते हैं। वे औषधियां ये हैं। सर्पाक्षी, क्षीरिणी (खँभार, खिरनी, स्वर्णक्षीरी, श्वेतसारिवा, क्षीरकाकोली), वन्ध्याकर्कोटकी (बांझ खेखसा), मत्स्याक्षी (मछेछी), शंखपुष्पी, काकजंघा, मयूरशिखा, ब्रह्मदण्डी, मूषाकर्णी, पुनर्नवा, दूब, कटसरैया, सेम, नीलोफर, कमलगट्टा, सतावर, अपराजिता, मण्डूकपर्णी, ब्राह्मी, हड़जोड़, शकरकन्द, चीता, छिरहटा, गीमा शाक, मालती, मकोय, महाराष्ट्री, हल्दी, तिलपर्णी, सफेदमन्दार, सहिंजन, धतूर, भृङ्गराज, मूर्वा, केला, रसांकुशा, निर्गुण्डी, लजालू, देवदारु, चमेली, जयन्ती, श्रीदेवी, सूरण, कुसुम, बनतरोई, कटुतुम्बी, रुद्रवन्ती, करिहारी, चक्रमर्द, गुडूचीकन्द, हुरहुर, शरपुंखा, वाराहीकन्द, हस्तिशुण्डी इत्यादि। येही औषधियां रस के स्वेदन और मूषालेप (सकोरे बन्द करने) में भी काम आती हैं।

पुटपाकीयगण

जिन औषधियों के साथ रसौषधियों को मिलाकर फूंका जाता है उन्हें पुटपाकीय औषधि कहते हैं। रस की भावना और पुटपाक में ये औषधियां काम आती हैं। भारंगी, मूसाकानी, शरपुंखा, सौंफ, रुद्रवन्ती, मण्डूकपर्णी, अपराजिता, पुनर्नवा, मयूरशिखा, अनार, चीता, सेंधिया, शणपुष्पी, कुन्दरू, इन्द्र-वारुणी, तिधारा, सेहुँड़, लाल तिधारा, सूर्यमुखी, अपामार्ग, एरण्डबीज, शंखपुष्पी, बन्दाल, कर्कोटी, शकरकन्द, करेला, विष्णुक्रांता, नाकुली, करेली, लांगली, क्षीरविदारीकन्द, कोकम, सोमलता, ब्राह्मी, इत्यादि।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सप्तमहालता

काकजंघा, वृहती, शरपुंखा, अजश्टङ्गी, नीलदूव अथवा श्यामालता, प्रियंगु, इन्द्रवारुणी और घृतकुमारी अथवा बन्ध्या-कर्कोटकी ये सप्तमहालता कहाती हैं।

नियामकओषधियां

सर्पाक्षी, चीता, ककोड़ा, भिलावां, जलचिञ्चिका, शतावरी, भृङ्गराज, शरपुंखा, पुनर्नवा, मण्डूकपर्णी, मत्स्याक्षी, ब्रह्मदण्डी, गुञ्जालता, अनन्तमूल, काकजंघा, मकोय, कोमलमूली, विष्णु-क्रांता, पियावासा, सहदेवी, महाबला (कंघी), बरियारी, नागबला (गंगेरन), मूर्वा, चकौंड़ा, बनमूंग, पाढ़ी, आंवला, नील, मूर्वा, भारंगी अथवा हल्दी, गोभी, नृजिह्वा, तालमखाना, नागरमोथा, मूसाकानी, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, सुगन्धकचूर, तितड़ीक, खिरनी, रास्ना, मेषश्टङ्गी, सेमर, तुलसी, काली तुलसी, सफेद विष्णुक्रांता और श्वेता (फिटकरी या दुधवच), ये नियामक ओषधियां हैं। इनके द्वारा स्वेदन कर पारद को वीर्यवान बनाया जाता है।

मारणओषधियां

शिवलिंगी, चण्डालकन्द, भटकटैया, अपराजिता, षट-कारी, शरपुंखा अथवा शंखपुष्पी, दुरालभा, लांगली, केवैया, लालसेहुँड़, लालसींगिया, घुंघची, नीला चीता, बड़ी भटकटैया,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

राई, भूमिकूष्माण्ड, ककड़ासिंगी, चक्रमर्द, वन्ध्याकर्कोटकी, रुद्रवन्ती, भारंगी, सफेदघुंघची, मानकन्द, लालचीता, लाल कंटसरैया, मेढासिंगी, सफेद तुलसी, शाखोटक, मालकांगनी, सोमलता, स्वर्णक्षीरी, व्यघ्रनखी, शमी, कचनार, हल्दी, काकमाची, कचनार, कुमोदनी, विधारा, कौवाटोटी, पान, हुरहुर, नील, मजीठ, ककड़ासिंगी अथवा काकोली, जल-पिप्पली, हंसराज, शेफालिका, ये औषधियां रससारण के लिये प्रयुक्त होती हैं। इनके सिवाय कटुतुम्बी, वन्दाल, इन्द्रवारुणी, बकुची, बनकपास, स्याहजीरा, कलौंजी, कालाधतूरा, सफेद-मन्दार, पीलू, दन्ती, करेला, वनगोभी, काकजंघा, वनतुलसी, अंकोल (ढेरा), वनपरवर, वेल, ब्रह्मदण्डी, केवांच आदि को भी इस काम में लेते हैं।

रसजारणीय औषधियां

भटकटैया, सेहुँड़, घीकुवांर, लांगली, दुरालभा, हंसराज, केला और सेमर रसजारण के काम में आते हैं।

रससिद्धौषध

लाल सेहुँड़, सोमलता, रुद्रवन्ती, लालचीता, सिहोर, तिल, कुटकी, विधारा, चकौंड़, क्षीरकाकोली, वन्दाल, शंखपुष्पी, मकोय, नील, ज्योतिमती, ब्रह्मदण्डी, अर्कपत्री, ताम्रपर्णी, ये औषधियां रससिद्ध करने वाली हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रसद्रावकगण

हुरहुर, केला, बन्ध्याककोंटकी, शकरकन्द, मकोय, सहिंजन, वन्दाल आदि औषधियां पारद के दोष दूर कर उसका द्रावण करने वाली हैं।

रसायनओषधियां

मकोय, नागरमोथा, कसौंदी, लजालू, असगन्ध, हंसराज, सतावर, ताम्बूल, ब्राह्मी, लक्ष्मणा, अर्जुन, क्षीरकाकोली, अर्क-पत्री, भटकटैया, ब्रह्मदण्डी, तुलसी और गोरखमुण्डी आदि औषधियां रसायन हैं अर्थात् जरा व्याधि को रोकनेवाली हैं।

महारस

अभ्रक, वैक्रान्त, सुवर्णमाक्षिक, विमल, शिलाजीत, तूतिया, चपल (विसमथ) और खपरिया ये आठ महारस हैं। अन्य मत से पारद, अभ्रक, हिंगुल, वैक्रांत, स्वर्णमाक्षिक, रौप्यमाक्षिक, शंख और कान्तलोह महारस हैं। एक मत में हिंगुल, पारद, सीसा, वैक्रांत, कान्तलोह, अभ्रक, सुवर्ण-माक्षिक, विमल, ये अष्टमहारस हैं।

उपरस

गन्धक, गेरू, कौसीस, फिटकरी, हरिताल, मैनसिल, अंजनसुर्मा और कंकुष्ठ ये आठ उपरस हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

साधारणरस

कबीला (कम्पिल्ल), गौरीपाषाण (संखिया), नवसादर, कपर्द (कौड़ी), अग्निजार (सामुद्रिकक्षार), गिरिसिंदूर, हिंगुल और मुरदासंग ये आठ रससिद्धि-कारक साधारण रस कहलाते हैं।

मणि (रत्न)

वैक्रांत (तुरमुली), सूर्यकान्तमणि, हीरा, मोती, चन्द्रकान्त मणि (हाथी के मस्तक अथवा सर्प के मस्तक से निकलने वाले मणि), राजावर्त (लाजवर्द-रावटी) और पन्ना, हैं। इनके सिवाय पुष्पराज (पुखराज), महानील (इन्द्रनील), पद्मराग (माणिक्य), प्रवाल (मूंगा), वैडूर्य (विदुरमणि) और नीलम भी मणि कहाते हैं। ये सब पारदबन्धन करने वाले हैं।

महारत्न

पद्मराग (माणिक), इन्द्रनील, मरकतमणि (पन्ना), पुष्पराज (पुखराज) और हीरा ये पांच महारत्न कहलाते हैं।

नवरत्न

माणिक्य, मोती, प्रवाल, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद (रक्तमणि-ओनिक्स) और वैडूर्यमणि (लहसनियां),

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ये नवरत्न कहाते हैं। ये रत्न क्रमशः सूर्य से आरम्भ कर नवग्रहों के दोष दूर करने के लिये धारण किये जाते हैं।

पञ्चरत्न

सोना, मोती, माणिक, हीरा और पद्मराग। अथवा सोना, हीरा, नीलम, पद्मराग और मोती।

मुद्राधृत रत्न

कुरुविन्द (पद्मराग), पुखराज, प्रवाल, मोती, पन्ना, हीरा, नीलमणि, गोमेद और लहसनियां ये रत्न अंगूठी में जड़ाकर पहनने के काम आते हैं। इन्हें सूर्य के क्रम से क्रमपूर्वक लेवे तो नवग्रहों की प्रसन्नता के कारण होते हैं।

अष्टधातु

सोना, चांदी, तांबा, अश्मसारलोह, सीसा, रांगा, कांसा, पीतल ये आठ धातु हैं। वर्तलोह को भी धातु में गिनते हैं। वर्तलोह शायद् एलूमिनम वा जर्मन सिलवर है।

शुद्धधातु

सोना, चांदी, तांबा औंर शुद्ध लोहा इन्हें शुद्ध लोह या शुद्ध धातु कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पूतिलौह※

नाग और वंग पूतिलौह या पूतिधातु कहलाते हैं।

मिश्रलौह

पीतल, कांसा और वर्तलौह ये मिश्रलौह या मिश्रधातु कहलाती हैं।

षड्लौह

सोना, चांदी, तांबा, रांगा, सीसा और लोहा इन्हें षड्-लौह या षड्धातु कहते हैं।

कृत्रिमलौह

कांसा और पीतल कृत्रिमधातु या कृत्रिमलौह कहलाते हैं।

षड्लवण

समुद्रलवण, सेंधानमक, विडनोन, सौवर्चल (सोंचरनोन), रोमक (सांभरनोन) और चूलिकालवण (नवसादर)।

※ रसतन्त्र में लौह शब्द लोहे के लिये तथा अन्य सब धातुओं के लिये भी आता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पंचलवण

सेंधानोन, समुद्रनोन, विडनोन, सौवर्चलनोन और सांभरनोन।

लवणत्रिक्

सेंधा, सांभर और सोंचर ये लवणत्रिक् कहलाते हैं।

क्षारद्वय

सज्जीखार और जवाखार ये क्षारद्वय कहलाते हैं।

क्षारत्रयम्

सज्जीखार, जवाखार और सोहागा ये क्षारत्रय हैं।

क्षारपंचक

पलाशक्षार, मुष्कक (मोखाक्षार), यवक्षार, सज्जीखार और तिलक्षार इन्हें क्षारपंचक कहते हैं।

क्षाराष्टक

टङ्कणक्षार, पलाश, अपामार्ग, इमली, तिल, सज्जीखार, अर्कक्षार और जवाखार ये क्षाराष्टक हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मधुरत्रय

घी, गुड़ और शहद मधुरत्रय कहलाते हैं।

मूत्रपंचक

गाय, बकरी, भेंड़ी, भैंस और गदही का मूत्र मूत्र-पंचक कहलाता है।

मूत्राष्टक और मूत्रदंशक

हाथी, ऊंट, भैंस, गदहा, घोड़ा, गाय, बकरी और भेड़ी इनके मूत्र को मूत्राष्टक कहते हैं। इनमें से हाथी, गदहा, ऊँट और घोड़े के नर का मूत्र और गाय, भैंस, बकरी और भेड़ी की मादी का मूत्र लेना चाहिये। गाय का मूत्र सब में श्रेष्ठ है। जहां कहीं मूत्र लेने में किसी पशु का निर्देश न किया गया हो वहां गाय का मूत्र लेवे। इसमें मनुष्य पुरुष और स्त्री का मूत्र मिला देने से मूत्रदंशक कहलाता है।

गोर्वर

पशुओं के चरने की जगह में जो गोबर पशुओं के पैरों से रौंद कर चूर्ण हो सूख जाय उसे रसकर्म में ग्रहण करना चाहिये।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अम्लवर्ग

जम्बीरीनींबू, कागदीनींबू, अम्लवेत, इमली, नारंगी, खट्टा अनार, वृक्षाम्ल (विषामिल), बिजौरानींबू, चांगेरी (तिपतिया), चूक, चूका, चने की खटाई, करौंदा और तिनडीक, कोकम, मकोय, खट्टीबेर ये अम्लवर्ग हैं। इनमें अम्लवेत और चने का अम्ल श्रेष्ठ है।

अम्लपंचक

अम्लवेत, जम्बीरीनींबू, बिजौरानींबू, नारंगी और कागदी नींबू ये अम्लपंचक हैं। किसी किसी के मत में खट्टी वनबेर, खट्टा अनार, वृक्षाम्ल (अथवा खट्टी लोनियां) और चूक ये अम्लपंचक हैं।

पंचतिक्तक

गुर्च, नीम की जड़, अडूसा, भटकटैया और परवर के पत्ते ये पंचतिक्तक हैं।

पंचमृत्तिका

ईंट का चूरा, राख, बामी (बिमौर) की मिट्टी, गेरू और लोना (पुरानी इमारतों का क्षार) इन्हें पंचमृत्तिका कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पंचामृत

गाय का दूध, गाय का दही, गाय का घी, शहद और चीनी इन्हें पञ्चामृत कहते हैं।

पंचगव्य

गाय का दूध, गाय का दही, गाय का घी, गोमूत्र और गाय का गोबर इन्हें पंचगव्य कहते हैं।

क्षीरत्रय

अकौवा का दूध, बरगद का दूध और सेहुँड़ के दूध को क्षीरत्रय कहते हैं।

पंचमाहिष

भैंस का मूत्र, भैंस के गोबर का रस, भैंस का दूध, भैंस का दही और भैंस का घी इन्हें पञ्चमाहिष कहते हैं।

छागलपंचक

बकरी का मूत्र, बकरी की लेंड़ी, बकरी का दूध, बकरी का दही और बकरी का घी इनके सम्मेलन को छागलपंचक कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दुग्धवर्ग

हथिनी, ऊंटनी, घोड़ी, गदही, गाय, बकरी, भेंड़ी, भैंस, मनुष्यस्त्री, कठूमर, गूलर, दुधिया, मन्दार, सेहुँड़, बरगद, पीपल और लोध के दूध दुग्धवर्ग में गिने जाते हैं।

तैलवर्ग

तिल, सरसों, धतूरा, भिलावां, एरंड, नीम, अलसी, मालकांगनी, लौकी, सौंफ, करील, बेल, नेनुवां, करंज, बड़ी भटकटैया, बकुची, राई, अपामार्ग, वन्दाल, दन्तीबीज, तुम्बुरु, अंकोल (ढेरा) और पलाश के बीज तैलवर्ग में हैं।

वसावर्ग

शृगाल, मण्डूक, कछुवा, केकड़ा, सूस, गौ, सुवर, मनुष्य, बकरा, ऊंट, गदहा, भैंसा, भेड़ा इनकी चरबी वसावर्ग में मानी जाती है।

सिक्थतैल

तिल के तेल में अन्दाज से मोम मिला कर गरम करके ठंढा करले, जब वह मक्खन के समान हो जाय तब उसे सिक्थतैल कहते हैं।

द्रावकगण

गुञ्जा, मधु, गुड़, घी, सोहागा, गूगल ये द्रावकवर्ग हैं। इनसे धातुयें गलती हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मित्रपंचक

घी, गुञ्जा, सोहागा, शहद और गूगुल इन्हें मित्रपञ्चक कहते हैं। इन्हें मिला कर धमाने से मूर्छित धातुयें जिलायी जाती हैं। धातुओं का द्रावण भी इनसे किया जाता है।

विषवर्ग

सींगिया, कालकूट, वत्सनाभ, सक्तुकविष, हारिद्रक ये विषवर्ग हैं।

उपविषवर्ग

कलिहारी, कोचिला, कनेर, भांग, नील, धतूरा और अकौवा ये उपविष हैं।

विडगण

पारावत (परेवा), चाष (नीलकण्ठ), चातक, कबूतर, मयूर, गीध, मुर्गा इनकी विष्ठा विडगण कहाती है। यह रस-कर्म में लेप, पुट आदि में काम आती है।

रक्तवर्ग

कुसुम, खैर, लाख, मजीठ, लालचन्दन, लालसहिंजन, दुपहरिया, आंवाहल्दी, कपूरकचरी और सुवर्णमाक्षिक आदि अभ्रकादि को लाल बनाने वाली रक्तवर्ग की औषधियां कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पीतवर्ग

टेसू, अमिलतास के फूल, हल्दी और दारुहल्दी ये पीतवर्ग हैं।

श्वेतवर्ग

तगर, कुरैया, कुन्दपुष्प, श्वेतगुंजा, जीवन्ती, सफेद कमल ये श्वेतवर्ग हैं।

कृष्णवर्ग

केला, करैली, त्रिफला, नील, नल, कीचड़, हीराकस, आम की केरी ये कृष्णवर्ग हैं। काला रंग देती हैं।

शोधनीयगण

काचलवण, टंकण, शिग्रा (भैंस का मूत्र), नवसादर, ये शोधनीयगण हैं। इनसे धोकर बद्धपारद का सत्व और लौहादि का मल साफ किया जाता है।

धन्वन्तरिभाग

वैद्य के द्वारा जो मनुष्य औषधि तैयार कराता है और औषधि तैयार होने पर उसका कुछ भाग वैद्य को देता है, उसे धन्वन्तरिभाग कहते हैं। यह भाग रसौषधियों में आधा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सिद्ध तेल और घृत में चौथाई, अवलेह में अष्टमभाग, आसव-अरिष्ट में चौथाई, चूर्ण और वटिका में सातवां भाग देना चाहिये। इसके देने से उस मनुष्य को आरोग्यता और सुख की प्राप्ति होती है। अन्यथा वैद्य से मुफ्त में दवा बनवा लेने वाला दोष का भागी होता है।

मृदुवर्ग

मेढ़ासिंगी, भेड़े का अंडकोष, अण्डे का रस, इन्द्रजव, धौके बीज और खरगोश की हड्डी यह मृदुवर्ग है। इससे लौहादि धातु की कड़ाई दूर की जाती है।

रुद्रभाग

पसारी और अत्तार तथा फार्मसी से रोगी द्वारा खरीदी दवा का ग्यारहवां भाग उस व्यापारी द्वारा वैद्य को देना चाहिये, उसे रुद्रभाग कहते हैं। जो वैद्य मुनाफे के लालच में रोगी को खराब और बिगड़ी हुई दवा दे देता है वह वैद्य विश्वासघाती माना जाता है। अथवा लोभ में आकर पंसारी-अत्तार से अधिक मुनाफा लेता है या धन्वन्तरिभाग अधिक लेलेता है वह वैद्य भी विश्वासघातकी होता है।

ककारादिगण

देवी शास्त्रोक्त ककारादिगण ये हैं—कण्टकारी (भटकटैया) के फल, कांजी, कमठ (कछुवे) का तेल, राई (सरसों) का तेल और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नींबू का रस, कतक (निर्मलीफल), कलिंगफल (तरबूज), कूष्माण्ड, कर्कटी (ककड़ी), केकी (मयूर) मांस, कुक्कुट (मुर्गी) का मांस या अण्डा, कारवेल्ल (करेला), कर्कोटकी (खेखसा) और भटा, अथवा कपित्थक (कैथा), श्रीकृष्णदेव, इनके अतिरिक्त कंगु (काकुन), कन्दुक (सुपारी), कोल (बेर), कलवन, क्रोड (वाराह), कुलित्थ (कुलथी), कटुतैल, कृष्णगलफ (गौरैया) चिड़िया, कलाप (मटर), कर्कारू (काशीफल), कठिल्लक (गदापूरना) और काली निशोथ को भी ककारादि गण में गिनते हैं।

दिव्यौषधि

भांग, बकुची, अगस्त, कूष्माण्ड, स्थलकमलिनी, गोनसा (नागदमनी), उच्चटा (श्वेतगुंजा), ईश्वरीलता (वन्ध्याकर्कोटकी), भूतकेशी (जटामांसी), कृष्णलता (कृष्णसारिवा), लशुनी (भूम्या-मलकी), रुदन्तिका (रुद्रवन्ती), वाराही (श्वेतापराजिता), सप्तपत्रा (लज्जालू), नागिनी (हनुमान बेल, लक्ष्मणा), गोश्रृङ्गी (बबूल), ज्योतिर्नाम्नी (ज्योतिष्मती), क्षत्रिणी (गन्धनाकुली), रक्तिका (रत्ती, घुंघची), पत्रवल्ली (रुद्रजटा), काकिनी (काक-जंघा), चांडाली (शिवलिंगी), ताम्रवल्ली (ताली), पीतवल्ली (हल्दी), विजया (अग्निमंथ), महौषधी (सफेद भटकटैया), भ्रमरी (आकाशवल्ली), रुद्रवल्ली (रुद्रजटा), लंबिनी (कड्डलौकी), भूमितुम्बिका (पातालगारुडी), पातालतुम्बी, गान्धर्वा (अस-गन्ध), त्रिशूलिनी (बेल), त्रिदण्डी, पलाश, भृङ्गवल्ली (भवर-छुली), चमरिका (नागचम्पा), करवल्लिका (करेला), वज्रांगी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(वज्रदन्ती,) चिरवल्ली (नाकुली), रोहिणी (काश्मरी), विल्विनी (हिंगुपत्री, बहुफली), भूतशोचिनी (सिहोर), करीरी (करील), कुटजा (इन्द्रजव), अम्बुवल्ली (कर्कोटकी), मुनिवल्ली (ऋद्धिघृत-गन्धा, काला हंसराज), तिलकन्द (तेलियाकन्द), आतसीलता (अलसी), सत्वगन्धा (लक्ष्मणा), माधवी (मालती), विशाला (इन्द्रवारुणी), मण्डूकी (ब्राह्मी), क्षीरगन्धिका (क्षीरकाकोली) आदि दिव्यौषधियां हैं। ये एक एक अकेली महाबलशालिनी और पारद का बन्धन करने वाली हैं। इन से सिद्ध हुआ पारद जरामरण और दरिद्रता नष्ट करने वाला होता है।

रस महौषधि

ऋद्धि, सौं, अपामार्ग, गोरखमुण्डी, सारिवा, मालकांगनी, तेजबल, रासना, बाकुची, कुन्दरू, विषाणिका (मरोड़फली), असगन्ध, पुनर्नवा, शरपुंखा, बला, अतिबला, नागबला, दन्ती, महाबला, रुद्रवन्ती, नील, शतपुष्पा, प्रसारिणी, त्रिफला, पीलू, सतावर, इलायची, हाहूवेर, सातला, थूहर, निशोथ, स्वर्णक्षीरी, वंशलोचन, पृथ्वी (कालीजीरी), आंवला, इन्द्रवारुणी, नलिका (नाड़ीशाक, करेंबुआ), इन्दोरण (कौंहरी), बड़ा मेउड़ी (संभालू), अजमोदा, त्रायमाण, आसुरी (राई), शंखपुष्पी, अपराजिता, काका (सफेद निशोथ), काकजंघा (मकोय), धव, कदली, दूर्वा, इमली, कसौंदी, हंसराज, छोटी निर्गुण्डी, द्राक्षा, नील, उत्पल (कमल), शमी (छीकुर), नारियल, खजूर, गूलर, शीशम, मालती, वार्षिकी (मोगरा), चमेली, यूथिका (जुही), मोरशिखा, अजगन्धा, लक्ष्मणा, घीकुवार, ग्रीष्मवर्षा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(सेवती), ये महौषधि हैं और पारदकर्म में उसे महाबल प्रदान करती हैं।

सिद्धौषधि

देवीलता (मधुरी कपूरी), कालपर्णी (कृष्णासारिवा), भांग, राई, अडूसा, पलाश, मजीठ, संवीरा (भूम्यामलकी), ताम्रवल्ली (ताली), नाय, घीकुवार, बाकुची, अरलू, कंजा, गृध्रनखी (बनबेर), पित्तपापड़ा, रासना, सेहुँड़, दुधिया, भृङ्गी (अतीस), गंगेरी (गंगतिरिया), शरपुंखा, अष्टावल्ली (मल्लिक), राजशमी, कटहर, जयन्तिका, विषखपरी, अवन्ती, नागरमोथा, काकांडोली (कोलशिम्बी), सिद्धेश्वरी, हंसराज, खोटका, शृङ्गरीटिका (स्वर्णजीवन्ती, मैना), अधःपुष्पी, मुलेठी शृङ्खला (तालमखाना), गृञ्जनी (गाजर), जारावली (कडूतरोई), महाराष्ट्री, सहदेवा, ईश्वरी (बन्ध्याकर्कोटकी), दारुहल्दी, देवगन्धारी (कचूर), हल्दी, इंगुदी, पलाशिनी (भूमिकूष्माण्ड), नाकुली, काम्बोजी, असगन्ध, चकौंड़, सर्पदृष्टा (नकुल कन्द), शल्लकी (शाल, सरई), रोहिता (रक्तरोहिडा), तौवरी, वंगजा (सिन्दूर), राजपद्मा (गुलाबहजारा), जम्बीरवल्ली, गजपीपर, भँवरवेल, अर्कवल्ली (सूरजमुखी), जन्तुकार (लाख), शिग्रबल्ली, करवीरा (अर्जुन, अथवा तेलियाकन्द), शिवाटिका (काकोदुम्बर), नाराची, कांचनी (कचनार), अजगन्धा। ये सिद्धौषधियां हैं। पारद सिद्धिदायक हैं, स्वयं रसायन और शरीर को आरोग्यदायक तथा देह-लोह सिद्धिप्रदायक हैं।

नवां अध्याय समाप्त

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दशवां अध्याय

पारिभाषिक शब्दकोष

अंशूदक या हंसोदक

तालाव का अथवा अन्य स्थिर जल जो दिनभर सूर्य की धूप और रातभर चन्द्रमा की चांदनी में वरावर शुद्ध होता हुआ निर्मल, दोषहारक और पवित्र हो जाता है उसे हंसोदक कहते हैं। शरद ऋतु में तालावों का जल हंसोदक कहलाता है।

अञ्जनत्रय

कालासुर्मा, सफेदसुर्मा और रसाञ्जन।

अंजनयुग्म

कालासुर्मा, सफेदसुर्मा।

अम्लपंचक

खट्टीवेर, खट्टाअनार, वृक्षाम्ल, चूक और अमलवेत।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अम्लिकापानम्

इमली का पना। पानी में इमली घोलकर मले और उसमें चीनी, मिर्च, लौंग, कपूर आदि मिलावे। यह पानक वात-नाशक है।

अष्टवर्ग

मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि, वृद्धि, जीवक और ऋषभक इन्हें अष्टवर्ग कहते हैं।

अष्टादशमूल

बेल, अग्निमंथ, श्योनाक, खँभार, पाठी, पुनर्नवा, बरियारी, बनउड़द, जीवक, ऋषभक, एरण्ड, जीवन्ती, सतावर, शरपत, ऊख, दर्भ, कांस, धान की जड़ इन्हें अष्टादशमूल कहते हैं।

अष्टादशधान्य

मटर, गेहूँ, अरहर, जव, जुवांर, चावल, चना, मसूर, अलसी, मूंग, तिल, कुलथी, सावां, उड़द, चौंरा, काकुन, चपरी, कोदो और बाजरा इन्हें अष्टादशधान्य कहते हैं।

आरोग्याम्बु

जो जल पकते पकते चौथाई रह जाय तब उतार और छानकर पीने के काम आवे उसे आरोग्याम्बु कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आक्षिकशीधु

बहेड़े का सिरका। बहेड़े के छिलकों का काढ़ा कर उसमें गुड़ और धौके फूल मिला धूप में रख उठा लेवे। यह पाण्डु रोग नाशक, बलकारी, मल-मूत्र का संग्राहक, हलका, कषाय, मधुर, पित्तघ्न और रक्त को बढ़ाने वाला होता है।

आक्षिकी

बहेड़े का मद्य। बहेड़े के छिलके और चावल मिलाकर इसे सुरा विधि से तैयार करे। यह पाण्डुरोग नाशक, पित्त, रक्तपित्त, कफ और कुष्ट दूर करने वाली, कुछ वातवर्धक, रुचिकर, रूक्ष, दीपनी, रेचक और लघु होती है।

इन्दुरसा

अँदरसा। साठीचावल का आटा एक हिस्सा, चीनी दो हिस्सा लेकर थोड़े दही से उन्हें मले और एक दिनरात रखा रहने दे। दूसरे दिन गोल टिकिया बना घी में पकावे। उसके ऊपर कोई कोई खसखस भी लगा देते हैं। यह शीतल, हृदय को हितकारी, वलवर्धक और पुष्टिकारक होता है।

इक्षुरस

ऊख के रस का सिरका। ऊख के रस के सिरके में तेल और कन्द, फल, शाकफल भाफ देकर डालते हैं और उसमें

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

खटाई आने पर खाते हैं। यह भारी होता है अभिष्यन्दी नहीं होता।

उदश्वित

दही में उसी के बराबर पानी मिला कर मथे और मट्ठा या घोल सा बना कर पीने को देवे। इससे तृष्णा, दाह, मुखशोष नष्ट होता है। पित्तश्लेष्मनाशक है। इसके लेपन से कुष्ठ नष्ट होता है।

उद्वर्तन

उबटन। सरसों, तिल, चिरौंजी, गरी आदि या आटे में हल्दी, छरीला मिला कर शरीर में रगड़ा जाता है। यह वात-नाशक, कफ और मेद को पतला करने वाला, शरीर को स्थिर और स्वच्छ करने वाला, खुजली, रूक्षता और चमड़े की विवर्णता नष्ट करने वाला है।

औषधिपंचामृत

गुडूची, गोखरू, मूसली, मुण्डी और शतावरी इन पांचों औषधियों के संमिश्रण को औषधिपंचामृत कहते हैं।

कटुचातुर्जात

दालचीनी, बड़ी इलायची, तेजपत्र और मिर्च ये समान भाग ली जांय तो उसे कटुचातुर्जात कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कटुत्रय (त्रिकटु)

सोंठ, मिर्च, पीपल को त्रिकटु कहते हैं।

कटुषट्कम्

सोंठ, मिर्च, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक।

कणादिगण

पीपली, पिपरामूर, चव्य, चित्रक, सोंठ, मिर्च, इलायची, अजमोदा, इन्द्रजव, पाढी, रेणुकबीज, जीरा, भारंगी, बकायनफल, हींग, कुटकी, सरसों, वायविडंग, अतीस, मूर्वा।

कराटकत्रय

छोटी भटकटैया, बड़ी भटकटैया और सफेद भटकटैया। अथवा छोटी भटकटैया, बड़ी भटकटैया और गोखरू। यह त्रिदोषनाशक, भ्रम, ज्वर, पित्त, हिचकी, तन्द्रा, प्रलापादि नष्ट करनेवाला है।

करञ्जद्वय

लताकरंज और पूतिकरंज (कंजी)।

किंशुकादिगण

पलाशपुष्प, काश्मरी खँभार, सोंठ, अग्निमंथ, भटकटैया, बड़ी भटकटैया, गोखरू, श्योनाक, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, बनमूंग, बनउड़द, पाटला और बेल को किंशुकादिगण कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

खनिजौषध

रत्न, उपरत्न, रस, उपरस, धातु और लवण जो खानि से निकाले जाते हैं वे खनिजौषधि कहलाते हैं।

खाण्डव

मीठे-खट्टे फलों के टुकड़े कर उनमें नमक और सुगन्धी-पदार्थ मिला कर जो खाद्य द्रव्य बनाया जाता है उसे खाण्डव कहते हैं।

किलाट

थोड़ा दूध और अधिक मट्ठा मिलाकर तथा चीनी-इलायची आदि छोड़ कर जो द्रव्य बनाया जाय उसे किलाट कहते हैं।

कूर्चिका

थोड़ा दही और अधिक मट्ठा मिला कर इलायची, लौंग, जावित्री, जायफल, चीनी आदि डाल कर जो द्रव्य बनाया जाय उसे कूर्चिका कहते हैं।

गन्धद्रव्य

इलायची, चन्दन, कुंकुम, अगरु, कंकोल, जटामासी, मुरामासी, कचूर, गूगल, सुगन्धबाला, खस, कपूर, कस्तूरी, नख, लवंग, मेथी, कूट, सफेदचन्दन, तेजपत्र, लताकस्तूरी,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कपूरकचरी, सुगन्धकोकिला, नागकेसर, नागरमोथा, जावित्री, जायफल, शिलारस आदि गन्धद्रव्य कहलाते हैं। तैलादिक पाक में इन्हें सुगन्धि के लिये डालते हैं।

गन्धाष्टक

जावित्री, लौंग, दालचीनी, इलायची, नागकेसर, मिर्च, कस्तूरी और केसर ये आठ द्रव्य भोजन पदार्थ सुगन्धित करने के लिये काम में आते हैं।

देवगन्धाष्टक

चन्दन, कपूर, नागकेसर, सुगन्धवाला, नागरमोथा, देवदारु, गोरोचन और कुसुम ये आठ गन्धद्रव्य देवताओं की प्रीति के लिये काम में आते हैं।

गणपतिगन्धाष्टक

चन्दन, अगरु, कपूर, गोरोचन, केसर, कस्तूरी, लाल चन्दन और सुगन्धवाला यह गणपति पूजा में काम आते हैं।

शिवगन्धाष्टक

चन्दन, अगर, कपूर, तमालपत्र, सुगन्धवाला, केसर, कूट और लालचन्दन ये शिवप्रीत्यर्थ गन्धाष्टक है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

देवीगन्धाष्टक

चन्दन, अगरु, कपूर, गोरोचन, केसर, जटामांसी, कचूर और शिलारस यह देवीगन्धाष्टक है।

विष्णुगन्धाष्टक

चन्दन, अगरु, सुगन्धबाला, कूट, कुंकुम, खस, जटामासी, मुरामासी, यह विष्णुगन्धाष्टक है।

गुडशुक्त

गुड़ को पानी डाल उबाल ले। उसमें तेल, नमक, राई आदि डालकर कोई फल या कन्द अथवा शाक एक या सम्मिलित मिला कर सिरका अथवा कांजी विधि से जो अचार बनता है, उसे गुडशुक्त कहते हैं।

गोधूमसार

गेहूँ को पानी में तीन दिन तक भिगो रखे, फिर उन्हें कांडी में कूटे अथवा सिल पर पिसवा ले और सोलहवां भाग जल मिला कर छान ले। उसे रात भर रखा रहने दे। गेहूँ का सत्व नीचे जम जायगा। पानी ऊपर से तरछाकर निकालदे। फिर उस सार को धूप में सुखाले। इसे गेहूँ का सत्व या गोधूमसार कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गोक्षुरादिगण

गोखरू, तालमखाना, भटकटैया, पृष्ठपर्णी और कुशुम्बिका गोक्षुरादिगण है। यह वातश्लेष्म नाशक है।

घृतपूरक

दूध या घी अथवा नारियल के पानी में आटा सान कर पूड़ी सी बना घी में निकाले, उसे घृतपूरक कहते हैं। यह भारी, वृष्य, कफकारी, रक्त और मांस बढ़ाने वाला, रक्त-पित्त नाशक, हृदय को हितकारी, स्वादु, पित्तहर और अग्नि-वर्द्धक होता है।

चतुरम्ल

बनवेर, खट्टाअनार, अम्लवेत और आमड़ा इन चारों के योग को चतुरम्ल कहते हैं।

चतुरूषण

पीपली, पिप्पलामूल, सोंठ और मिर्च।

चतुर्जात

दालचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेसर यह वर्णकारक, अग्निवर्द्धक और विषनाशक है।

चतुर्बीज

मेथी, चन्द्रसूर, स्याहजीरा और अजवाइन।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चतुष्पाद

वैद्य, रोगी, औषधद्रव्य और सुश्रूषाकारी ये चार मिल कर चिकित्सा के चार पाद होते हैं।

चन्दनद्वय

मलयागिरिचन्दन और लालचन्दन।

चन्दनादिगण

चन्दन, खस, कपूर, गन्धबाकुची, इलायची, गुडूची और अगुरु के मेल को चन्दनादिगण कहते हैं। यह सब प्रकार के पित्तरोग में श्रेष्ठ है।

चिकित्सांग

रोगी, दूत, वैद्य, आयुष्य, द्रव्य, सेवक और सदौषध ये सात चिकित्सा के अंग हैं।

चिकिर

नदी आदि के निकट जो बालुकामयी भूमि होती है, वहां बालू हटा कर जो पानी निकाला जाता है उसके जल को चिकिर कहते हैं। चिकिर जल शीतल, स्वच्छ, निर्दोष, लघु, कषाय, स्वादु, किंचितक्षारयुक्त और पित्तनाशक होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चिंचासार

अमली का पना अथवा अमली का शर्बत। यह खट्टा, वातघ्न और कफ तथा दाह को नष्ट करने वाला होता है। इसमें यदि चीनी मिलायी जाय तो पित्तदाह और कफ नाशक होता है।

चिपिटा (चिपिटिका या च्यूड़ा)

गीले अथवा भिगोये हुए धान को उबाल कर अथवा मन्द आंच में भून कर (फूटने न पावे) कूटे। उसे चिपिट-चिउड़ा या पृथुक कहते हैं। यह दूध में भिगोकर खाने से ताकत बढ़ाता, शरीर को मोटा करता, बल बढ़ाता और गाढ़े मल को पतला करता है। यह भारी स्निग्ध, बृंहण और कफवर्धक होता है।

चुक्रम्

सिरका, अथवा बिगड़ी हुई खट्टी शराब में मीठे पदार्थ डाल कर जो सिरका उठाया जाय उसे चुक्र कहते हैं। अथवा गुड़, शहद, कांजी, दही का तोड़ और पानी एक से दूसरे को दूना लेते हुए मटके में भर अन्नराशि में गाड़ कर जो खट्टा पदार्थ बनाया जाय उसे चुक्र कहते हैं। यह हलका, उष्ण, रुचिकर, अग्निदीपक, वातगुल्म नाशक, पथ्य और कुछ पित्तकारक होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चूर्णोदकम् (सुधार्क)

चूने का पानी चार तोला सफेद कली चूना लेकर एक मिट्टी के वर्तन में डाले और उसमें ४० पल पानी मिलाकर दो पहर तक रख छोड़े, फिर उसके थिरे हुए साफ पानी को छानकर लेवे। यह पाचक, अग्निवर्धक, आंतों का विकार नष्ट करने वाला और दूध पचाने वाला होता है।

जगलः

शराब का तलछट। शराब के वर्तन के नीचे के हिस्से के गाढ़े भाग को जगल कहते हैं। यह पाचक, ग्राही, रूक्ष, मेदवर्धक, विष्टम्भी और दोषों को पचाने वाला होता है।

जंगमविष

चलने फिरने वाले जीवधारियों में जो विष होता है उसे जंगम विष कहते हैं। जैसे सांप, बिच्छू, पागलकुत्ता, पागलसियार, शेर के बाल आदि। जंगमविष के आश्रय दृष्टि, निःश्वास, दांत, नख, मूत्र, पुरीष, शुक्र, लार, आर्तव, मुख, डंक, गुदा, अस्थि, पित्त, शूक, शव आदि हैं। दिव्यसर्पों की दृष्टि और श्वास में विष होता है। भूमि के सर्पों के दांत या दाढ़ में, पागल कुत्तों और सियारों के भी दांत में विष होता है। कुत्ते और शेर, बिल्ली, बन्दर आदि के नखों में, गिरगिट, छिपकली, विषखपरा और गोह के मूत्र में, चूहों के शुक्र में, मकरी की लार में, तथा मूत्र, पुरीष, शुक्र तथा आर्तव में विष

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

होता है। बिच्छू, मक्खी के डंक में और कुछ जाति के सांप तथा कुछ मछलियों की अस्थि में विष रहता है। सेही के कांटे में, शेर के बाल में तथा शकुली मछली के पित्त में विष होता है।

तर्पण

पानी में घोलकर जो सत्तू खाया जाता है उसे तर्पण कहते हैं। अथवा अंगूर, अनार, खजूर आदि का रस ले उस में शहद, चीनी और लावा या लाई का चूर्ण मिला कर जो पेया दी जाती है उसे तर्पण कहते हैं। यह ज्वर, दाह, मदात्यय आदि नष्ट करता है।

दग्धभूमिशालि

किसी बन या खेत को पहले जलाकर फिर उसमें धान बोया जाय तो उस भूमि के धान को दग्धभूमिशालि कहते हैं। इसका चावल हलका, सुपाच्य, कुछ तिक्त किन्तु मधुर, बलकारक, सुपथ्य, रूक्ष, श्लेष्मनाशक और मलमूत्र बांधने वाला होता है।

दुग्धकन्दगण

असगन्ध, मुशली, विदारीकन्द, शतावरी और क्षीर बाराहीकन्द इन्हें दुग्धकन्दगण कहते हैं। इनसे बच्चों की वृद्धि होती, स्त्रियों के दूध अधिक होता, वीर्यवृद्धि और काम-शक्ति बढ़ती है। स्त्रियां इसका स्वरस लेती रहें तो सदा युवती बनी रह सकती हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दुग्धकूपिका

चावलों को कूटकर उसमें दूध मिलावे और घी में पका कर खावे। इसे दुग्धकूपिका कहते हैं।

दुग्धत्रय

गाय, भैंस और बकरी के दूध को दुग्धत्रय कहते हैं।

दुग्धबीज

कच्चे जव, गेहूँ अथवा ज्वार के लच्छों को भाड़ में भुनाकर चिवड़े के समान कूटते हैं। इसे दुग्धबीज और हिन्दी में परमल कहते हैं। यह स्वाद में मधुर, पचने में भारी, बलवीर्य वर्धक और पुष्टिकारक होता है।

दुग्धक्षीरिका

आधपाव अच्छे चावलों को पहले घी में तले। फिर एक सेर या दो सेर दूध लेकर पहले आधा औटे। इसके बाद उसमें चावल डाल पकावे। उसमें अन्दाज से घी और चीनी मिलावे। इसे दुग्धक्षीरिका अथवा पायस या खीर कहते हैं। यह पचने में भारी, वातवर्धक, पित्तनाशक, बलवर्धक, मल का अवष्टम्भ करने वाली, अरुचिनाशक, मेदवर्धक, कफ और अग्नि को घटाने वाली, तथा रक्तपित्त और वातपित्त को नष्ट करने वाली है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दूषीविष

औषधि अथवा भोजन में अल्पवीर्य विष मिला कर दिया जाय अथवा भोजन, निद्रा, देश, काल के दोष से, दिन को सोने से शरीर में जो विष उत्पन्न हो जाय उसे दूषीविष कहते हैं। यह धीरे धीरे शरीर को नष्ट कर देता है। इसके प्रादुर्भाव से शरीर का रक्त पाण्डुवर्ण अथवा श्यामता लिये हो जाता है। शरीर में फुंसियां उत्पन्न होती हैं। खुजली, दाह और रक्तदोष उत्पन्न होते हैं। विसर्प के लक्षण होते और शरीर में जहां तहां पाक या सड़न होने लगती है। इसके लिए पीपली, रोहिषतृण, जटामांसी, पठानीलोध, इलायची, सज्जीखार, नागरमोथा, तगर, कूट, मुलेठी, चन्दन और गेरू परमौषधि हैं।

दूष्यजल

जिस जल में मल मूत्र या वष-वृक्षों के कारण गन्दापन आ गया हो और उसका रंग लाल, नीला हो, गरम, गाढ़ा, फेनदार या दांतों में करकटी पैदा करने वाला हो, कुऋतु का बरसा हुआ हो, उसमें क्षार हो या काई आदि से भरा हो, कीड़े पड़े हुए हों, पत्ते पड़े हों, कीचड़ हो, सूर्य-चन्द्र को रोशनी जिसमें न पड़ती हो उसे दूषित जल कहते हैं।

द्वितीयत्रिफला

मुनक्का, खजूर (छुहारा) और खँभार के फल के संयुक्त योग को द्वितीय त्रिफला कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

द्विनिशा, द्विरजनी, द्विहरिद्रा

हल्दी और दारुहल्दी को द्विनिशा कहते हैं।

द्विपर्णी

शालपर्णी और पृष्ठपर्णी को द्विपर्णी कहते हैं।

द्विपुनर्नवा

लालगदहपूर्णी और सफेद पुनर्नवा को कहते हैं।

द्विमाष

मुद्गपर्णी और माषपर्णी को द्विमाष कहते हैं।

त्रिवार्ताकी, त्रिवृहती

छोटी भटकटैया और बड़ी भटकटैया को कहते हैं।

द्विविष

सफेद अतीस और काली अतीस को कहते हैं।

द्विक्षीर

गाय का दूध और बकरी का दूध।

धाना

गेहूँ, जव, जुआर, बाजरा आदि को भाड़ में भुनाकर जो बहुरी बनायी जाती है उसे धाना कहते हैं। इसी बहुरी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

को जब गुड़ के सीरे में मिला लड्डू से बांध लेते हैं, तब उसे गुड़धनियां कहते हैं। जब भुने हुए धाना को पीस लेते हैं तब उसे धानाचूर्ण या सत्तू कहते हैं।

धान्यपानक

धनियां को सिल पर खूब पीस चीनी और पानी मिलाकर इलायची, कपूर आदि डाल मिट्टी के कोरे वर्तन में रख जो चाटा या पिया जाय उसे धान्यपानक कहते हैं। यह पित्त-नाशक होता है।

धारोष्ण

दोहरी में ताज़ा दुहा हुआ गरम (स्वाभाविक) दूध धारोष्ण कहलाता है। यह अमृत के समान, भ्रममूर्छा नाशक, निद्राकारक, कान्तिवर्धक, वृष्य, वृंहण, अग्निवर्धक, त्रिदोष-नाशक और स्वादिष्ट होता है।

धूमसी

मूंग, उड़द, चौरा आदि द्विदल धान्य की दाल का छिलका अलग कर उसे पीस कर जो पिसान बनाया जाता है उसे धुमास कहते हैं। और इस पिसे हुए आटे से जो रोटी या बरा मुंगौरा, पापड़ आदि बनाये जाते हैं उन्हें धूमसी कहते हैं। इसे रुचिरा भुर्भुरिका तथा भुर्भुरी भी कहते हैं। यह कफ-पित्तनाशक और कुछ वातकारक होती है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नदीमातृक

नदी के जल से सींचकर जो अन्न उत्पन्न किया जाता है उसे नदीमातृक कहते हैं।

निम्बुकपानक

नींबू के रस में पानी और चीनी तथा लौंग और मिर्च का चूर्ण डाल जो शर्वत बनाया जाता है उसे निम्बुकपानक कहते हैं।

निर्झर

पर्वत के झरने से निकलने वाले जल को निर्झर कहते हैं। यह जल मधुर, पथ्य, अग्निदीपक और कफघ्न होता है।

पञ्चकोल

पिप्पली, पिप्पलीमूल, चव्य, चित्रक और सोंठ इन पांचों के योग को पंचकोल कहते हैं। यह रस और पाक में कटु है। रुचिवर्धक, पाचक, अग्निदीपक, वात-कफघ्न, तीक्ष्ण, उष्ण, गुल्म, प्लीहा, उदर रोग, पेट फूलना आदि दूर करता तथा पित्त को प्रकुपित करता है।

पंचगण

विदारीकन्द, वृहती, पृष्ठपर्णी, छोटी भटकटैया और गोखरू इन्हें पंचगण कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पंचतिक्त

भटकटैया, गुर्च, सोंठ, कूट और चिरायता पंचतिक्त कहलाते हैं। भावप्रकाश ने नीम की छाल, परवर के पत्ते, वासा, कण्टकारी और गुडूची को पंचतिक्त माना है।

पंचनिम्ब

नीमके पत्ते, छाल, फूल, फल और जड़ की छाल समान भाग लेकर जो योग तैयार हो उसे पंचनिम्ब कहते हैं।

पंचपल्लव

आम, जामुन, कैथा, बिजौरानींबू और वेल के पत्तों को पंचपल्लव कहते हैं।

पंचपित्त

मछली, भैंसा, वाराह, मयूर और बकरे के पित्त को पंचपित्त कहते हैं।

पंचभृंग

देवताड़, शमीपत्र, भांग, तालीसपत्र और निर्गुण्डी के पत्तों को पञ्चभृङ्ग कहते हैं।

पंचमकार

मीन, मद्य, मांस, मैथुन और मुद्रा यह पंचमकार कहलाते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पंचमुष्टि

जव, बेर का बैचुन, कुलथी, मूंग और आंवला एक एक मूठी (चार चार तोला) लेकर अठगुने जल में पकावे। एक भाग रहने पर उतार छान कर पीने को दे। इसे पञ्चमुष्टियूष कहते हैं। सान्निपातिक ज्वर में लाभदायक है। अथवा पहले की चार चीजें और पांचवीं सोंठ लेकर यूष तैयार करे। यह वात-पित्त और कफ नाशक होता है। यह शूल, गुल्म, खांसी, श्वास और क्षय में लाभदायक होता है।

पंचलौह

सोना, चांदी, तांबा, वंग और नाग इन्हें पंचलौह कहते हैं। पहले के तीन त्रिलौह कहलाते हैं। अथवा सोना, चांदी, तांबा, सीसा और लोहा इसे द्वितीय पंचलौह कहते हैं।

पंचवटी

पीपल, बरगद, अशोक, गूलर और वेल।

पंचवेतस, पंचवल्कल

वेत, बरगद, पीपल, पाकर, गूलर इनकी सम्मिलित छाल को पञ्चवल्कल या पंचवेतस कहते हैं। इन छालों से व्रण, शोथ, विसर्प नष्ट होता, यह ठण्डा और ग्राही है। इन पांच क्षीरी वृक्षों की छाल रंग को खोलती, योनिरोग नष्ट करती, रूक्ष और कषाय है। मेदनाशक, शोथ, पित्त, कफ और रक्त विकार नष्ट करती है। दूध को बढ़ाती और टूटी हड्डी जोड़ती है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पंचबीज

ककड़ी, खीरा, अनार, कमलगट्टा और केवांच इन्हें पञ्च-बीज कहते हैं।

पंचशस्य

चावल, तिल, मूंग, जव और सरसों इन्हें पंचधान्य कहते हैं।

पंचसिद्धौषधि

तेलियाकन्द, सुधाकन्द, क्रोडकन्द, सर्पाक्षी और रुदन्ती-कन्द को पञ्चसिद्धौषधि कहते हैं।

पंचसुगन्धि

कपूर, कंकोल, लवंग, जायफल और सुपारी इन्हें समान भाग ले तो उत्तम सुगन्धिद्रव्य बनता है।

पंचक्षार

जव, पलाश, तिल, मोरवा इनके क्षार और सज्जीखार मिलकर पंचक्षार कहलाते हैं।

पंचाङ्ग

किसी वृक्ष की जड़, पत्ती, फूल, फल और छाल एकत्र ली जाती है तब उसे उस वृक्ष का पंचांग कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पंचामृतयूष

कुलथी, मूंग, अरहर, चौरा और उड़द इन पांचों को समान भाग ले अठगुने पानी में जूस बनावे। यह अग्नि को प्रदीप्त करनेवाला, पाचक, धातुवर्धक, हलका, अरुचिनाशक, तथा ज्वर, कफ, क्षय, अंगमर्द आदि नष्ट करने वाला होता है।

पंचाम्र

पीपल, बरगद, नीम, अनार और नींबू या आम इन्हें पंचाम्र कहते हैं।

पंचाम्ल

बेर, अनार, आमड़ा (या कोकम), चुक्रक (अथवा कमरख) और अम्लवेत को पंचाम्ल कहते हैं। अथवा बनबेर, अनार, इमली, खट्टीबेर, अम्लवेत अथवा नींबू, नारंगी, अम्लबेत, तिनीडीक और बिजौरा अथवा बेर, अनार, वृक्षाम्ल, चूक, और चुक्रक, इन्हें पंचाम्ल कहते हैं। यह अधिक पिपासा को शान्त करता है।

पंचारविन्द

कमलगट्टा, कमलपुष्प, कमलमृणाल और कमल का भसींडा इसे पंचारविन्द कहते हैं।

पंचाविकम्

भेड़ का दूध, दही, घृत, मूत्र और मल मिलकर पंचाविक कहलाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

परोटः

पराठा। तवा या कड़ाही में घी लगा कर जो रोटी तवा में ही सेंक ली जाय उसे परोटः या पराठा कहते हैं।

पानम्

द्रव पदार्थ को पीकर गले के नीचे उतारने को पान कहते हैं।

पीयूष

नयी व्यायी हुई गाय, भैंस, बकरी के दूध को पकाकर जो खाद्यद्रव्य तैयार किया जाता है उसे पीयूष, प्योसरी या खोजरी कहते हैं। व्याने के दिन से सात दिनों तक पीयूष बनता है। ऐसा दूध पकाने पर जमकर बैठ जाता है। पीयूष मधुर, बृंहण और वृष्य होता है।

पुष्पजासव

कमल, नीलकमल, लालकमल, कुमुदनी, गुलाब, पुण्डरीक, सौगन्धिक, महुवा, प्रियंगु, धव, इनके फूल से जो आसव तैयार होता है, उसे पुष्पजासव कहते हैं।

पुष्पद्रव

गुलाब, केवड़ा, सेवती, गुलदाउदी, चम्पा, बकुल, कदम्ब, आदि के फूल ऊर्ध्वपातन यन्त्र में डालकर उनका जो सार रस निकाला जाता है उसे पुष्पद्रव या पुष्पनिर्यास

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कहते हैं। साधारण बोली में गुलाब का अर्क, गुलाबजल, केवड़ाजल आदि कहते हैं।

पुष्पाविष

बत, कदम्ब, वल्लिज, करम्भ और महाकरम्भ के फूल पुष्पविष कहलाते हैं।

पूरिलिका

बरा। उड़द की दाल पीस कर उसमें नमक, हींग, अदरक मिला तेल में पकाकर जो बरा बनाया जाता है, उसे पूरिका या पूरलिका कहते हैं। यह रुचिकर, स्वादुवर्धक, भारी, स्निग्ध, बलकारक, रक्तपित्त को उभाड़ने वाला, नेत्रों की ज्योति घटाने वाला, गरम और वातनाशक होता है। यही घी में पकाने से नेत्रों के लिये हितकारी और रक्तपित्त नाशक होता है।

पूर्णगर्भा

पूरणपूरी। गेहूँ की पूड़ी में उड़द का आटा या उबाले आलू आदि भरकर जो कचौरी की तरह बनाते हैं उसे पूरणपूरी कहते हैं। इन्हें नमकीन बनाना हो तो भरी जाने वाली चीज़ में नमक, मिर्च, अद्रक, हींग मिलाते हैं। मीठी बनाना हो तो उसमें चीनी मिलाते हैं।

पैष्टी

अनेक प्रकार के अन्न से तैयार की हुई खट्टी शराब को पैष्टी कहते हैं। इसमें मादकता बहुत कम होती है। पूड़ी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

या रोटी या अधपके हुए अनाज में गरमपानी डालकर आग में थोड़ी देर पकावे। फिर उसे दो दिनों तक रख छोड़े। फिर उसमें सवार, सोंठ, मिर्च, नींबू (या चकोतरा नींबू) डाल कर सन्धान विधि से मद्य तैयार करे। यह कटु, उष्ण, तीक्ष्ण, मधुर, अग्निप्रदीपक, रुचिकर, कफकारक, वातनाशक, पित्त-वर्धक और पाण्डु रोग को उभाड़ने वाला है।

पोलिका

पोली। गेहूँ या जव या चावल के मैदे की पतली बेली हुई रोटी को पोलिका कहते हैं।

प्रकोप

शारीरिक दोषों को क्षुभित कर चंचलता उत्पन्न करना और भड़का देना प्रकोप कहलाता है। जैसे बलवान से कुश्ती लड़ने से वात का प्रकोप हो। क्रोध, शोक, चिन्ता आदि से पित्त का प्रकोप हो और दिन में सोने से कफ का प्रकोप हो।

प्रज्ञापराध

जो बुद्धि, धैर्य और स्मृति के विरुद्ध अशुभ, अनुचित कर्म किये जाते हैं, उन्हें प्रज्ञापराध कहते हैं। ऐसे कार्यों से सभी दोषों का प्रकोप होता है। जैसे जिस समय जो कार्य करना चाहिये उस समय न करना, शारीरिक, वाचिक और मानसिक का मिथ्यारम्भ और जानबूझ कर अहित पदार्थों का सेवन प्रज्ञापराध कहलाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रपानकम्

शरबत। किसी खट्टे या मीठे पदार्थ को पानी में खूब पतला घोल कर कपूर, इलायची, मिर्च आदि मिला कर पीने को प्रपानक या शरबत कहते हैं। यह रुचिकर, बलकारक और सभी इन्द्रियों को तृप्त करने वाला होता है।

प्रक्षेप

क्वाथ तैल आदि में जो पदार्थ चूर्ण कर अथवा सिल पर पीस कर कल्करूप में छोड़े जाते हैं उन्हें प्रक्षेप कहते हैं। प्रक्षेप द्रव्य का परिमाण एक तोला माना गया है। अथवा क्वाथ में क्वाथ का चौथाई और स्नेह में समान कल्क डालना लिखा है। अथवा वातविकार में सोलहवां भाग, पित्तविकार में आठवां भाग और कफविकार में चतुर्थांश प्रक्षेप द्रव्य डाले। हींग एक माशा और नमक तीन माशा डालना चाहिये।

फलवर्ग

अनार, आंवला, बेर, बनबेर, प्योंदीबेर, कैथा, नींबू, आमड़ा, करौंदा, चिरौंजी, बड़हर, कमरख, बेतफल, फालसा, तिनडीक, आम, इमली, नारंगी, जम्बीरी नींबू आदि फलवर्ग हैं।

फलविरेचन

हर्रा, मुनक्का, बायविडंग, खजूर, फालसा, अमिलतास, आंवला, बहेड़ा, कबीलाफल, खीरा, दन्ती फल और जमालगोटा ये फल विरेचनवर्ग हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

फलविष

जिस वृक्ष के फल में विष हो उसे फलविष कहते हैं। जैसे करम्भ, महाकरम्भ, ककोड़ा, कुमुदफल, वेणुका, रेणुक, इत्यादि।

फलाम्लपंचक

जम्बीरीनींबू, नारंगी, अम्लवेत, अमली और बिजौरा नींबू।

फाणित

ऊख का रस पका कर जो गाढ़ा होजाता है उसे फाणित या राब कहते हैं। यह गुरु अभिष्यन्दी, बृंहण, कफपित्त कारक, वात-पित्त और थकान दूर करने वाला, पेशाब लाने वाला और वस्तिशोधक होता है।

बलाख्यपंचमूल

बला, अतिबला, अश्वगन्ध, पाषाणभेद और सहिजन इसे बलापंचमूल कहते हैं।

भक्त

चावलों को पानी से धोकर पचगुने पानी में पकावे उसे भक्त या भात कहते हैं। सावां, कोदो, काकुन और बाजरा के दानों का भी भात बनता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भूतोदनम्

तिल, लावा, जव, दही और हल्दी आदि मिलाकर भात की तरह जो खाद्य बनाया जाता है उसे भूतोदन कहते हैं।

भ्रष्टतण्डुलान्न

भुने हुए चावलों का भात अथवा धुले हुए चावल तलकर जो भात बनाया जाता है उसे भ्रष्टतण्डुलान्न कहते हैं। यह हलका और अग्निप्रदीप्त करने वाला होता है।

भेषज

औषध। यह दो प्रकार का है। प्रथम वह जो स्वास्थ्य रक्षित रख ओज की वृद्धि करे और द्वितीय वह जो रोगी का रोग हटावे।

मत्स्यण्डिकी

ऊख का रस अथवा चीनी में पानी मिलाकर पकावे। जब वह गाढ़ा होजाय और अंगुलियों में दबाने से तार देने लगे तब उतार ले। इसे सीरा या मत्स्यण्डिका कहते हैं। इसे धीमी आंच से पकाते हैं इसे मत्स्यण्डिका कहते हैं। शरबत का सीरा भी ऐसा पकाया जाता है; किन्तु वह जरा अधिक पतला रहने पर उतारा जाता है। मत्स्यण्डिका मलभेदक, बलकारक, हलकी, मधुर, पित्तवातनाशक, बृंहणी, वृष्य, और रक्तदोष नाशक होती है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मधुत्रय

घी, मधु और चीनी को मधुत्रय कहते हैं।

मधुमस्तक

पूड़ी सी बेलकर उसके बीच में शहद भर गोझिया सी बना बन्द करदे और घी में पकाले। इसे मधुमस्तक कहते हैं। जब टिकिया में चीनी या चीनी तथा मेवा मिला भुना आटा डाल और बन्द कर गोंठकर घी में पकाते हैं तब उसे गोझिया या कुसली कहते हैं।

मधुरजीवनीय

जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, मुलेठी, कटसरैया, नीलीकटसरैया और जीवन्ती।

मधुरत्रिफला

समभाग मुनक्का, खम्भार का फल और छुहारा।

मधुशर्करा

शहद के वर्तन के नीचे मिश्री के से टुकड़े जम जाते हैं, उसे मधुशर्करा कहते हैं। यह मधुर, नेत्रों को हितकारी, छर्दि रोकने वाली, कुष्ठ, व्रण, कफ, श्वास, हिचकी और रक्त-पित्तनाशक है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मधुशुक्त

जम्बीरी नींबू के रस में पिपरामूल डालकर मधु के वर्तन में भर तीन दिनों तक अन्नराशि में दबा रखे। उसे मधुशुक्त कहते हैं।

मध्यपंचमूल

बला, पुनर्नवा, एरण्ड, मुद्गपर्णी, माषपर्णी।

मध्यमाग्नि

मुट्ठीप्रमाण मोटी चार लकड़ियों से जितनी आंच होती है उससे दूनी आंच को मध्यमाग्नि कहते हैं।

मध्वासव

महुवे के फूल, शहद और धौ के फूल मिला कर जो आसव बनाया जाता है उसे मध्वासव कहते हैं।

मन्थ

सत्तू में घी और ठण्डा पानी मिलाकर ऐसा घोला जाय जो न तो गाढ़ा हो और न बहुत पतला हो, उसे मन्थ कहते हैं। इस में गुड़, चीनी, अनार आदि भी मिलाते हैं। यह तुरन्त वल बढ़ाने वाला, पिपासा और थकी नष्ट करने वाला है। अथवा चार तोले औषधि कूट कर एक मिट्टी के वर्तन में १६ तोले पानी डाल उसी में दवा डालकर मथानी से मथे। इसमें जब खूब फेन उठे तब आठ तोले लेकर पीवे। इसे भी मन्थ

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कहते हैं। इसमें फाण्ट के समान मधु, मिश्री या गुड़ भी मिलाते हैं। अथवा अंगूर का रस, ऊख का रस और चीनी मिलाकर जो पेय बने उसे भी मन्थ कहते हैं।

मस्तु

दही से निकलने वाले पानी को मस्तु कहते हैं। हिन्दी में इसे दही का तोड़ कहते हैं। अथवा दही से दूना पानी मिलाकर मथदे, उसे भी मस्तु कहते हैं। यह उष्ण, अम्ल, रुचिकर और पाचक होता है।

महापंचविष

सींगिया, कालकूट, मुस्तक, वत्सनाभ और सक्तुक इन पांच विषों को महापंचविष कहते हैं।

महौषधि

पृष्ठपर्णी, श्यामालता, भृङ्गराज, शतावरी, गुर्च, सहदेवो, ये महास्नानीय महौषधि हैं। अन्य मत से सहदेवी, भटकटैया, बला, अतिबला, शंखपुष्पी, अडूसा और सुवर्चला (हुरहुर) ये महास्नानीय महौषधि हैं।

मांसवारुणी

हरिण आदि पशुओं के मांस से जो वारुणी मद्य बनाया जाय। मांस के टुकड़े टुकड़े कर मट्ठे में डाल कर रखे। आसव विधि से जब वह ४८ दिन रखने पर उठ आवे तब अर्क उतार ले।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मांसोदन

मांस के साथ जो भात बनाया जाय उसे मांसोदन अर्थात् पोलाव कहते हैं। यह धातुवर्धक, स्निग्ध और गुरु होता है।

माणमण्ड

मानकन्दकी पुरानी कन्द एक भाग, चावल दो भाग, दूध तीन भाग, पानी तीन भाग मिलाकर पकावे। इसे माणमण्ड कहते हैं। इसके सेवन से वातोदर, शोथ, ग्रहणी, और पाण्डुरोग नष्ट होते हैं।

माध्वीकम्

महुवा अथवा अंगूर की शराब को माध्वीक कहते हैं।

मार्द्वीकम्

अंगूर से बने हुए मद्य को मार्द्वीक कहते हैं। पके अंगूर के ताज़े रस को कपड़े से छान कर मद्यसन्धान विधि से तैयार करते हैं।

मार्द्वीकशुक्तम्

अंगूर के रस में तेल और कोई कन्द, मूल, फल, शाक डालकर, जो अम्ल पदार्थ से संधान बनाते हैं उसे मार्द्वीकशुक्त या अंगूर का सिरका कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मिश्रोदन

खिचड़ी। एक हिस्सा दाल, दो हिस्सा चावल मिला कर छः गुने अथवा अठगुने पानी में पकाकर नमक, मिर्च, मसाला डाल जो खाद्य बनाया जाता है, उसे मिश्रोदन या खिचड़ी कहते हैं।

मुद्गामलक यूष

चार तोले मूंग की दाल और चार तोले आंवले मिलाकर अठगुना पानी डाल पकावे। चौथाई रहने पर मलकर छान ले। यह ग्राही, कफ और पित्त में हितकारी, पिपासा, दाह, मूर्च्छा, श्रम और मदनाशक है।

मुद्गार्द्रवटक

मूंग की दाल भिगोकर धोवे और सिलपर पीस उसमें हींग, अदरख, मिर्च, जीरा, नींबू का रस मिला वड़ा सा बना तेल या घी में पका दही या मट्ठे में भिगोवे इसे मुद्गार्द्रवटक या मुंगौरा कहते हैं। यह रुचिकर, लघु, वलकारक, दीपक, तृप्तिकारक तथा पथ्य और त्रिदोषनाशक है।

मुद्गोलुम्बः

मूंग की दाल भिगोकर धोवे और हींग, मिर्च, लवण की छौंक देकर घी में उसे तल ले। इसे मुद्गोलुम्बः या तली हुई मूंग कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मूलविरेचन

जिन वनस्पतियों की जड़ दस्तावर होती है, उन्हें मूल-विरेचन कहते हैं। सप्तला, श्वेतापराजिता, दन्ती, द्रवन्ती, शंखिनी, निशोथ, काली निशोथ, कंजी, सत्यानशी की जड़, विधारा, इन्द्रवारुणी आदि मूलविरेचन वर्ग हैं।

मूलविष

सफेद कनेर, सफेद गुंजा, क्लीतक, सुगन्धगर्गर, करकर-घाट, विजया करिहारी आदि की जड़ मूल विष में परि-गणित है।

यवमण्ड

यव को भूनकर टुकड़े टुकड़े कर चौदह गुना जल में पकावे। अथवा जव के आटे की मोटी छोटी रोटी सी बना पानी में पकावे। उसी का जो पानी हो उसे लेवे। पहली विधि वाले मण्ड को यवमण्ड और दूसरी विधिवाले को वाष्पमण्ड कहते हैं। यह हलका, ग्राही, शूल, आनाह, त्रिदोष, नवज्वर आदि में हितकर है। नवज्वर में यव के साथ परवर भी मिलाया जाता है।

यवरोटिका

यव की रोटी यह मधुर, स्वच्छ, लघु, मल, शुक्र और वायु को बढ़ाने वाली होती है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रसाला

दो सेर दही कपड़े में डाल मलकर छाने। उसमें चार तोले घी और चार तोले शहद तथा एक सेर चीनी मिलावे। फिर नागकेसर, इलायची, जायफल, दालचीनी, तेजपत्र, आधा आधा तोला, मिर्च और सोंठ एक पल छोड़े। उसे कपूर से सुवासित किये हुए वर्तन में हाथ से खूब मिलाकर रखदे। इसे रसाला या मोरन या श्रीखण्ड कहते हैं।

रागखाण्डव

जाली पड़े हुए कच्चे आमों को छीलकर दो तीन टुकड़े करे। फिर उन्हें कड़ाही में घी डाल तले। फिर चीनी का सीरा बना कर कपूर से सुवासित किये हुए चिकने वर्तन में सीरा डाल कर तले हुए आम उसी में छोड़ दे। उसमें अन्दाज से इलायची और मिर्च पीस कर डाले। इसे रागखाण्डव या मुरब्बा कहते हैं। यह पुष्टिकर और बलदायक है। पित्त, वात, रक्तदोष, अरुचि को नष्ट करता है। स्निग्ध, गुरु, तृप्तिकारक, सुस्वादु होता है। दूसरी विधि यह है कि भूंग के जूस में अनार का रस और अंगूर का रस मिलाकर जो वस्तु बनती है, उसे रागखाण्डव कहते हैं। यह रुचिकर, लघु, पाचक होता है और किसी दोष का विरोधी नहीं होता।

लसीका

ऊख का रस अथवा दूध और दूना पानी मिलाकर जो पेय तैयार होता है उसे लसीका या लस्सी कहते हैं। यह मूत्रल और दाह-पित्त-नाशक होती है

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लाजतर्पण

धान के लावा पीसकर सत्तू सा बनावे और उसमें चीनी, शहद मिलाकर पानी से घोल कर पीवे। इसे लाजतर्पण कहते हैं। यह दाहनाशक और अतीसार में हितकर होता है।

लाजपेया

धान के लावा लेकर पेया विधि से तैयार कर सोंठ, मिर्च, पीपल, सेंधानमक और इलायची मिलाकर लेवे तो यह शीघ्र पचनेवाली, क्षुधा, तृषा, ग्लानि, दुर्बलता, अरुचि नाशक होती है।

लाजभक्त

धान के लावा का भात की विधि से खाद्य बनावे उसे लाज-भक्त कहते हैं। यह भात हल्का, शीतल, अग्निप्रदीपक, वृष्य, रुचिवर्धक, निद्रालानेवाला, कफ-पित्त नाशक, व्रणशोधक होता है।

लाजमण्ड

धान के लावा लेकर मण्डविधि से जो मण्ड बनता है उसे लाजमण्ड कहते हैं। यह अग्निवर्धक, दाह, तृष्णा निवारक, ज्वरातीसार नाशक, आमपाचक, मन्दाग्नि और विषयाग्नि निवारक तथा कफकर होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लेप

जो चीज पानी या किसी द्रव पदार्थ के साथ पीसकर किसी स्थानविशेष या सर्वाङ्ग में लेप की जाती या लपेटी जाती है उसे लेप कहते हैं। लेप तीन प्रकार के होते हैं:— १ दोषघ्न, २ विषघ्न, और ३ वर्ण-कान्तिप्रद।

वटक

उड़द अथवा चौंरा की दाल भिगोकर उसकी भूसी निकाल स्वच्छ दाल को सिल पर पीसे। फिर उसमें नमक, मिर्च, अदरख, जीरा, अजवाइन, हींग अन्दाज से डाले। पिसी दाल को खूब मथकर मोटे बड़े बनाकर तेल में पकाले। इन्हें वटक या बरा कहते हैं। ये कोरे और दही में भिगोकर खाये जाते हैं। कोरा वरा बलकर, रुचिकर, तृप्तिकर, बृंहण, वीर्यवर्धक, वातनाशक, विशेषकर अर्दित रोग दूर करने वाला होता है। विबन्धनाशक, कफकर होता है। यह तेज अग्नि वालों के लिये हितकर है।

वरान्न

छीमीवाले और द्विदल धान्यों का छिलका निकाल कर जो साफ अन्न बनाते हैं उसे वरान्न कहते हैं। वरान्न मलग्राही होता है। छिलके सहित खाने से बुढ़ापा शीघ्र आता है।

बलाढ्य

वरियारी और कंघी अर्थात् बला और अतिबला।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वलात्रय

पीतवला, श्वेतवला और नागवला।

वेशवार

भोजन के सालन स्वादिष्ट बनाने के लिये जो गरम मसाला काम में आता है उसे वेशवार कहते हैं। वेशवार में जीरा, धनियां, मिर्च, सोंठ, पिप्पली, पिपरामूर, हल्दी, दारु-हल्दी, अनार आदि पड़ते हैं। अथवा बिना हड्डी का मांस टुकड़े कर गुड़, घी, पीपल, मिर्च आदि मिलाकर पकाया जाय उसे वेशवार कहते हैं। वेशवार गुरु, स्निग्ध, बलकारक, शरीरपोषक, मुख में शोष उत्पन्न करने वाला और वातनाशक होता है।

व्यञ्जन

दाल, तरकारी, कढ़ी तथा मिष्ठान्नादि पदार्थ व्यञ्जन कहलाते हैं। रँधे हुए मांस, मछली आदि भी व्यञ्जन में गिने जाते हैं।

शक्तु

जव, गेहूँ, चना आदि को भुनाकर चक्की में पीसकर जो पदार्थ बनता है उसे शक्तु या सत्तू कहते हैं। सत्तू अधिक-तर जव का ही अच्छा होता है। यह शीत, अग्निदीपक, लघु, सारक, रूक्ष, लेखन, कफपित्तहारक, बलदायक, वृष्य, बृंहण, भेदन, तर्पण, मधुर और रुचिकर होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सन्तानिका

मलाई अथवा मलाई की मिठाई। चार सेर दूध, आधा सेर चीनी और पावभर घी मिलाकर उस दूध को आंच पर रख चलावे। उस पर फेन सहित जो मलाई निकले उसे एक पात्र में रख चौकोन टुकड़े कर घी में डाल तले और फिर एक-तार वाले चीनी के सीरे में थोड़ी देर तक डुबोकर निकाल ले। इसे सन्तानिका कहते हैं।

सन्धान

किसी द्रव्य या द्रव्यसमूह को जलयोग द्वारा अधिक दिन खट्टा होने तक अथवा मद्य की तरह उठान होने तक रख छोड़ना सन्धान कहलाता है। सन्धान की हुई वस्तु लघु, रूक्ष, पाचक और वातनाशक होती है। जिन द्रव्यों की सहायता से सन्धान शीघ्र होता है उन्हें सन्धानीय वर्ग कहते हैं।

सन्धानिका

आम अथवा अन्य फल का अचार। जाली पड़े हुए १०० आमों को दो खण्ड या चार खण्ड करे किन्तु वे खण्ड अलग न होने पावें। फिर उनमें राई आधा सेर, मिर्च आधपाव, सेंधानमक डेढ़पाव, नागरमोथा एक छटांक, कलौंजी एक छटांक, भुनी धनियां आधपाव, जीरा भुना एक छटांक पीस कर भरदे और फिर उन आमों को सलाई से कोंच तेलभरे वर्तन में डुबादे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सम्पाव

घी का मोवन देकर पानी डाल आटा साना जाय, फिर छोटी टिकिया सी बेल उसमें चीनी, इलायची, लवंग और मिर्च के टुकड़े, गरी, कपूर, चिरौंजी, खसखस आदि मिलाकर बीच में रख टिकिया को बन्द कर मुद्रा करदे, फिर उसे घी में पकाकर चीनी के सीरे में डुबादे, उसे सम्पाव या पिराक (गुझिया) कहते हैं।

सरम्

दही के ऊपर जो घृताक्त मलाई का घनभाग होता है, उसे सर या दधिमण्ड कहते हैं। यह स्वादु, गुरु, वृष्य, वातविकारनाशक, अग्निनाशक, कुछ अम्ल, वस्तिरोगनाशक और पित्तश्लेष्मवर्धक होता है।

सर्वगन्धम्

नागकेसर, इलायची, दालचीनी, तेजपात, कपूर, कंकोल, गुरु, लौंग, केसर, कस्तूरी, चन्दन आदि को सर्वगन्ध द्रव्य कहते हैं।

सर्वौषधिगण

कूट, जटामासी, वच, हल्दी, चन्दन, मुर्रा, कपूर, नागरमोथा और छरीला, इन्हें सर्वौषधि कहते हैं। ज्योतिषीय सर्वौषधि में जटामासी, वच, कूट, छरीला, हल्दी, दारुहल्दी, कचूर, चम्पा और नागरमोथा होता है। अथवा हल्दी, चन्दन,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दारुहल्दी, नागरमोथा, देवदारु, ताड़, धनियां, जीरा, मेथी, आंवला, खस, इलायची, दालचीनी, तेजपात, नागकेसर, कचूर, कपूर, वच, नख, मरुवा, कूट, देवदारु, वायविडंग, धूप, पद्माख, सुगन्धबाला, भद्रमोथा, गठिवन, जटामासी, पलाश, छरीला, शमी, मन्दार, अगुरु, दूब, मुरामांसी, कुंकुम, अपामार्ग, खैर, कुश, गन्धमात्रा, सौंफ, मजीठ, अष्टवर्ग की औषधि, गूलर, नागेश्वर, कस्तूरी, त्रिफला, त्रिकुट, पद्मकेसर, कंकोल, धौकेफूल, रेणुक बीज, जव, तिल, कुन्दरू, भारंगी, गोरोचन, नाड़ीशाक, अगस्त, सोंठ, नहुनी, वेल, वंशलोचन, कमल, सतावर, वकुल, मालती, इन्द्रजव, जयन्ती, गजपीपर, श्वेतापराजिता, कोकावेली, इन्हें सर्वौषधि कहते हैं।

सामत्रय

हर्रा, सोंठ, गुर्च।

सूप

द्विदलधान्य की दाल। द्विदलधान्य दल कर तेलपानी मिला रगड़ कर, दबाकर रातभर रहने दे, फिर सुखाकर कूट डाले, जिससे छिलका दूर होजाय। इसे अठगुने पानी में पकावे और हल्दी, धनियां, जीरा, मिर्च आदि डाल अन्दाज से नमक डाले। हींग, अदरक या जीरा, लौंग से छौंक दे।

सौवीरकम्

गेहूँ, अथवा जव भिगोकर छिलका निकाले हुए जव को कूट कर अठगुने पानी में पकाकर सन्धान विधि से बन्द कर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रखदे। शरद और गर्मी के दिनों में छः दिनों में, वसन्त और वर्षा में आठ दिनों में तथा हिम और शिशिर में दश दिनों में सन्धान सिद्ध होकर जो कांजी तैयार होगी उसे सौवीरक कहते हैं। यह ग्रहणी, अर्श और कफविकार में लाभदायक है। मल को भेदन करने वाला, अग्नि प्रदीप्त करने वाला, उदावर्त, अंगमर्द, अस्थिशूल, आनाह, शिरोरोग और शिथिलता नाशक है। केशों को हितकारी, बलकारक और सन्तर्पण है।

स्थावरविष

कन्द, मूल, फल, दूध आदि के विष। वछनाग, अफीम आदि तथा खानि से निकलने वाले संखिया, हरताल आदि विष हैं।

क्षीरपाक

औषधिप्रयोग द्वारा दूध के आम तथा मन्दाग्निकारक आदि दोष दूर कर उसमें रोगहारक शक्ति और स्वास्थ्यवर्धक शक्ति लाने की क्रिया को क्षीरपाक कहते हैं। जिन औषधियों में क्षीरपाक करना है, उनसे अठगुना दूध और दूध से चौगुना पानी मिलाकर मन्दाग्नि से पाक करे। जब पानी का हिस्सा जल जाय और दूध मात्र शेष रहे तब उसे उतार छान कर काम में लावे। इसे क्षीरपाक कहते हैं।

क्षीरसन्तानिका

दूध में कुछ अम्ल वस्तु डालकर उसे फाड़ देते हैं जिससे उसका जल भाग और घन भाग अलग अलग हो जाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ऐसे दूध के घन भाग को क्षीरसन्तानिका अथवा सन्तानिका या छाना कहते हैं। उस पानी को छाना का पानी कहते हैं। ये दोनों औषधि प्रयोग में काम आते हैं।

क्षुद्रवारुणी

चावल या अन्य धान्य की भूसी में पानी डाल सन्धान विधि से उसमें कुछ मट्ठा या अन्य अम्लपदार्थ डाल मद्य तैयार करले। जब उसमें कीड़े पड़ने लगें तब उसका मद्यार्क निकाल ले। इसे क्षुद्रवारुणी कहते हैं। यह क्षुधावर्धक होती है।

समाप्त

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शुद्धिपत्र

लिखने और छापे की भूल के कारण इस पुस्तक में कुछ अशुद्धियां रह गयी हैं, उन्हें पाठक नीचे लिखे अनुसार शुद्ध करलें।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६	१	परिभाषायें	परिभाषा में
१७	७	द्रवार्द	द्रवार्द्र
१८	७	लनी	लेनी
१८	१०	ओषध-पुष्प	ओषध और फलपुष्प
१८	१४	नागवल	नागवेलि
२७	२३	कांची	कांजी
२८	११	कपर	कपूर
२८	२४	मसली	मूसली
३४	४	आवाय	आवाप
४२	३	गुड़, भेली	गुड़भेली
४२	५	चन्द्रिका	चक्रिका
४३	१०	चाटव	चाटन
५०	६	गुणाधाम	गुणाधान
५१	१५	काढ़े में	काढ़े को घी में
५६	२०,२१,२२	धन	घन
६०	१४	वर्तन	कपड़े

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७०	७	त्रिपाद	पाद
६२	६	वीर्यको	वीर्यकी
१०६	११	स्वर	खर
११३	२	और पेट	और मलावरोध पूर्वक पेट
११५	७	गण की जीवनी शक्ति	गणकी औषधियां जीवनी शक्ति
११७	४	इष	दूब
११७	१६	गूर्वा	मूर्वा
१२२	६	नीली	नील
१२६	८	विदारा	विदारि
१२७	७	अजशंगी	अजशृंगी
१३१	६,१२	पाठी	पाढ़ी
१३३	१७	कटे हुए जोड़ते	कटे हुए भाग जोड़ते
१३६	४	माडूर	मंडूर

नोट—पृष्ठ ७५ में प्रमथ्या के वर्णन में जहां लिखा है कि उतार कर देवे, वहां यों पढ़े—"उतार कर मथ अथवा मलकर देवे।"

पृष्ठ ८८ में "औषधकाल" का जो वर्णन है वह पृष्ठ ६५ में "औषधभक्षण काल" के साथ पढ़ा जाना चाहिये।

पृष्ठ १०७ में "उपधातु" के वर्णन के बाद इतना और होना चाहिये "मल–विष्ठा (मल), मूत्र और स्वेद (पसीना) को मल कहते हैं। दोषों के द्वारा ये भी दूषित होते हैं; अतएव इन्हें दूष्य भी कहते हैं।"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३७	७	गोखर	गोखरू
१४०	१६	गुन्डा	गुन्दा
१४१	१५	प्रीणन	प्रीणन
१४७	७	गीमा	गूमा
१४७	२०	तिधारा और सेहुँड़ के बीच का विराम अलग करदें	
१४६	४	व्यघ्र	व्याघ्र
१४६	१६	ज्योतिमती	ज्योतिष्मती
१५५	६, १३	मूत्रदंशक	मूत्रदशक
१५६	४	तिनडीक	तिन्तडीक
१७३	१५	चतुर्जात	चातुर्जात
१७६	१५	वष	विष
१८०	६	त्रि	द्वि
१८१	१०	दोहरी	दोहनी
१८५	१४	मोरवा	मोखा
१८६	१३	तिनीडीक	तिन्तडीक
१८८	४	बत	वेत
१८६	३	सवार	सेवार
१८६	२०	(मानसिक के आगे) कार्यों (बढ़ावें)	
१६०	१७	तिन	तिन्त
१६१	१०	अभिष्यर्का	अभिष्यन्दी
२००	१८	विषयाग्नि	विषमाग्नि
२०१	१४	विवन्धनाशक के पहले भीगा बरा (बढ़ाओ)	
२०४	१५	गुरु	अगुरु

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रकाश-पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

रुबाइयात उमरख़य्याम ३)
आयुर्वेदीय खनिज-विज्ञान २॥) सजि० ३)
विषविज्ञान २॥)
परिभाषा-प्रबोध १)
सूर्य व्यायाम ।)
जल चिकित्सा ।=)
जल के प्रयोग और चिकित्सा ॥)
आरोग्य सूत्रावली ।=)
हिन्दी गीताञ्जलि १॥)
मेरे जेल के अनुभव ।=)
देवी जोन ।=)
राष्ट्रीय वीणा भाग १ ॥=)
" " २ ॥)
त्रिशूल तरंग ॥=)
जर्मन जासूस की रामकहानी ।-)
युद्ध की कहानियाँ ।)
कृष्णार्जुनयुद्धनाटक ॥=)
भीष्म नाटक ॥)
मुक्तधारा [नाटक] ।=)
उद्योगी पुरुष ।=)
रूस का राहु ।=)
श्रीकृष्ण चरित्र ।=)
...तसिंह और काशी का विद्रोह ।=)
...फ़िजी में भारतीय प्रतिज्ञा बद्ध कुली-प्रथा १)

साम्यवाद ।=)
रूस की राज्यक्रान्ति २॥)
चीन की राज्यक्रांति १॥)
एशिया निवासियों के प्रति यूरोपियनों का वर्ताव ।=)
महाराज नन्दकुमार को फाँसी २॥)
बलिदान (सचित्र) २)
काला पहाड़ " ॥)
सचित्र अकाली दर्शन ॥)
क्रांतिकारी राजकुमार १)
टालसटाय के सिद्धान्त १।)
वज्राघात (ऐ. उ.) २॥)
गोरा (रवीन्द्र) ३)
घर और बाहर (रवीन्द्र) १।)
सतीसारन्धा (खं. का.) ॥=)
सम्राट अशोक १)
भारतीय सम्पत्तिशास्त्र सजिल्द (प्राणनाथ) ४)
संसार की असभ्यजातियों की स्त्रियां (चि० स०) २॥)
सरोजिनी नायडू ।=)
छत्रपति शिवाजी ॥=)
महाराणा प्रताप ॥=)
वन्देमातरम् चित्राधार २)
व्यंग चित्रावली १॥)
तिलक चित्रावली १)
कांग्रेस चित्रावली ॥।)

कांग्रेस का इतिहास ॥-)
भारतीय इतिहास में स्वराज्य की गूँज ।=)
आयर्लैंड में होमरूल ॥)
आयर्लैंड में मातृभाषा ।=)
बीसवीं सदी का महाभारत ॥।)
राजनीति प्रवेशिका ।=)
हमारा भीषण ह्रास ।)
कुसुमांजलि (कवि०) =)
हिन्दी करीमा (काव्य) ।-)
कृषक क्रन्दन ≡)
दादाभाई नौरोजी =)॥
रानाडे की जीवनी =॥)
चम्पारन की जांच ।-)
स्वराज्य पर मालवीयजी ।)
स्वराज्य पर सर रवीन्द्र ।)
कलकत्ते में स्वराज्य की धूम ।)
शिक्षा सुधार ॥)
राजयोग (विवेकान०) ।=)
भक्तियोग " ।=)
फ़िजीद्वीप में मेरे २१ वर्ष ॥)
मेघनाद वध ॥।)
बहिष्कृत भारत ।)
सितार शिक्षक ।=)
हिन्दी मराठी शिक्षक १।)

पता:—प्रकाश पुस्तकालय, चौक तथा फीलखाना, कानपुर।